२. वर्ण प्रकरण

वर्ण या अक्षर एक छोटी से छोटी अखण्ड स्फोटात्मक ब्रह्मरूप ध्वनि है। अक्षर का अर्थ अविनाशी है —नित्य। संस्कृत में एकअक्षर एकाकी सार्थक नहीं होता अन्य चीनी आदि भाषाओं एकाक्षर शब्द हैं जो सार्थक होते हैं।

एकाक्षर वर्ण ४६ हैं, १३ स्वर और ३३ व्यञ्जन।

स्वर और **व्यञ्जन** ये दो वर्णों के मुख्य भेद हैं।

स्वर :—सशक्त ध्वनि का नाम है जो अपने आधार पर उच्चारित होती है। स्वर दो प्रकार के हैं—मूल स्वर और सन्धि स्वर।

१. **मूल स्वर**—अमिश्रित स्वर को नाम है यथा अ, इ, उ, ऋ, लृ।

२. **सन्धि स्वर**—वे हैं जो दो स्वरों के मेल से बने होते हैं। ये दो प्रकार हैं।

दीर्घ स्वर और संयुक्त स्वर।

सवर्ण स्वरों के मेल से बने हुए स्वर दीर्घ स्वर कहलाते हैं यथा आ=अ+अ,

ई=इ+इ,

ऊ=उ+उ,

ॠ=ऋ+ऋ,

ॡ=ऌ+ऌ

अ आ, इ ई, उ ऊ ऋ ॠ ऌ ए ऐ ओ औ।

संयुक्त स्वर भिन्न २ स्वरों के मेल से बने हुये होते हैं। यथा—अ+इ=ए, अ+उ=ओ

अ+ए=ऐ, अ+ओ=औ

मात्रा—उच्चारण कालमान के आधार पर स्वर तीन प्रकार के हैं। १ ह्रस्व २ दीर्घ ३ प्लुत।

१ ह्रस्व—एक मात्रिक—जिस के उच्चारण में एक मात्रा समय लगता है यथा—अ, इ।

२ दीर्घ=द्विमात्रिक—जिसके उच्चारण में दो मात्रा समय लगता है यथा—आ, ई।

३ त्रिमात्रिक—प्लुत—जिस के उच्चारण में ३मात्रा समय प्रयुक्त होता है प्रायः संबोधन करने चिल्लाने आदि में इसका प्रयोग होता है हे राम ३।

स्वर के तीन अन्य भेद ये हैं—

१ उदात्त—जिस स्वर का उच्चारण ऊर्ध्व भाग में होता है। यथा—आ यै।

२ अनुदात्त—जिस का उच्चारण अधोभाग में होता है यथा—अर्वाङ्।

३ स्वरित—उदात्त और अनुदात्त दोनों का मेल जहां हो जाता है। यथा—शतचक्रं यो ह्यः अथवा देवस्य त्वा।

सानुनासिक और निरनुनासिक ये स्वर के दो अन्य *सानुनासिक*—जिनका उच्चारण मुख नाक दोनों से होता है यथा—ङ् ञ्, ण्, न्, म्।

निरनुनासिक—जिसका उच्चारण केवल मुख से होता है यथा—क्, ख् इत्यादि।

२ व्यंजन—अशक्त स्वराश्रित ध्वनि का नाम है। व्यंजनों के तीन भेद हैं? स्पर्श क से लेकर म् तक वर्ण हैं।

य् र् ल् व्   २ अन्तस्थ कहलाते हैं।

श् ष् स् ह्   ३ ऊष्म वर्ण है।

अनुस्वार और विसर्ग अयोगवाह कहलाते हैं। व्यंजनों की भान्ति इनका उच्चारण स्वतन्त्र रूप में न होकर स्वरों के साथ होता है।

क्ष, त्र, ज्ञ, संयुक्त व्यंजन हैं। ये स्वतन्त्र व्यंजन न होकर भिन्न-भिन्न व्यंजनों के मेल से बने हुए हैं।

क्+ष्=क्ष

त्+र=त्र

ज्+ञ=ज्ञ

पद—सुप् तिङ् को पद कहते हैं—संज्ञा सर्वनाम क्रिया का नाम पद है।

संयोग — स्वर रहित व्यंजनों की संयोग संज्ञा है

सवर्ण — तालु आदि स्थान और आभ्यन्तर प्रयत्न जिनके तुल्य हों, वे स्वर सवर्ण कहलाते हैं। अ-आ, आदि।

अकार, कवर्ग, ह और विसर्गों : का स्थान कण्ठ है।
इकार, चवर्ग, य्, श् का तालु स्थान है।
ऋकार टवर्ग र् ष् का मूर्धा स्थान है।
लृ तवर्ग ल् स् का दान्त स्थान है।
उकार पवर्ग का ओष्ठ स्थान है।
ङ् ञ् ण् म् का नासिका स्थान है।
ए ऐ का कण्ठ और तालु स्थान है।
ओ औ का कण्ठ और ओष्ठ स्थान है।
व का दन्तोष्ठ स्थान है।
अनुस्वार (ं) का नासिका स्थान है।

वर्ण स्थान कोष्ठक

स्थान	
कण्ठ	अ, आ, क, ख, ग, घ, ङ, ह विसर्ग :।
तालु	इ, ई, च, छ, ज, झ, ञ, य, श।
मूर्धा	ऋ, ॠ, ट, ठ, ड, ढ, ण, र, ष।
दन्त	लृ, ॡ, त, थ, द, ध, न, ल, स।
ओष्ठ	उ, ऊ, प, फ, ब, भ, म,
नासिका	ङ, ञ, ण, न, म,
कण्ठ तालु	ए, ऐ।
कण्ठोओष्ठ	ओ, औ।
दन्तोओष्ठ	व।

प्रयत्न—वर्णों के उच्चारण में पूर्व या पश्चात् होने वाली चेष्टा को प्रयत्न कहते हैं। यह दो प्रकार का है। १ आभ्यन्तर और वाह्य।

१ आभ्यन्तर प्रयत्न वर्णों के उच्चारण की पूर्ववर्त्ती चेष्टा है। इसके चार भेद हैं।

१ विवृत। २ स्पृष्ट। ३ ईषद् निवृत। ४ ईषत् स्पृष्ट।

विवृत जिन के उच्चारण में वागिन्द्रिय खुली रहती है जैसे·— स्वर वर्णों ऊष्मवर्ण श, ष, स ह का विवृत प्रयत्न है।

२ स्पृष्ट—जिन वर्णों के उच्चारण में वागिन्द्रिय मुख के भिन्न २ भागों को छूती है। यथा—स्पर्श वर्ण।

३ ईषद् स्पृष्ट जिन वर्णों के उच्चारण में वागिन्द्रिय कुछ २ खुली रहती है। यथा अन्तस्थ वर्ण।

४ ईषद् विवृत भट्टोजिदीक्षितने ऊष्म वर्णों को विवृत ही माना है।

संवृत—जिसका उच्चारण मुख बन्द करते हुए होता है। यथा—अ (१) गोपः आदि में संवृत है, परन्तु प्रक्रिया दशा में विवृत है यथा—कृष्ण आगच्छति।

वाह्य प्रयत्न ग्यारह प्रकार का है—विवार, संवार, श्वास, नाद, घोष, अघोष, अल्पप्राण, महाप्राण, उदात्त, अनुदात्त, स्वरित।

घोष—जिन वर्णों के उच्चारण में नाद का प्रयोग होता है।

---

(१) अ अ (सूत्र) विवृत मनूद्य संवृतोऽनेन विधीयते।

(२) इसमें जीभ का तालु आदि से कुछ २ स्पर्श होता है।

यथा—प्रत्येक वर्ग का तृतीय चतुर्थ, पंचम वर्ण, स्वर, ह, य र ल व।

अघोष वे वर्ण हैं जिनके उच्चारण में श्वास का प्रयोग होता है। जैसे—प्रत्येक वर्ग का प्रथम, द्वितीय वर्ण और श, ष, स।

अल्प प्राण—जिन वर्णों के उच्चारण में सांस का अल्प प्रयोग होता है। जैसे—प्रत्येक वर्ग का प्रथम, तृतीय और पंचम वर्ण, सारे स्वर अन्तस्थ वर्ण और अनुस्वार।

महाप्राण—जिन वर्णों के उच्चारण में श्वास का अधिक प्रयोग होता है। यथा—प्रत्येक वर्ग का दूसरा चौथा वर्ण, ऊष्म तथा विसर्ग।

प्रयत्न कोष्ठक

आभ्यन्तर प्रयत्न कोष्ठक

प्रयत्न	विवृत	स्पृष्ट	ईषत् स्पृष्ट	ईषत् विवृत
वर्ण	अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ए ऐ ओ औ	क ख ग घ ङ च छ ज झ ञ ट ठ ड ढ ण त थ द ध न प फ ब भ म	य र ल व	श ष स ह भट्टोजिदीक्षित ने ऊष्म वर्णों को विवृत ही माना है।

बाह्य प्रयत्न

प्रयत्न	अल्प प्राण	महा प्राण	घोष	अघोष
वर्ण	क ग ङ	ख घ	ग घ ङ	क त प
	च ज ञ	छ झ	ज झ ञ	प थ फ
	ट ड ण	ठ ढ	ड ड ण	च श ष स
	त द न	थ ध	द ध न	छ
	प ब म	फ भ	ब भ म	ट
	अनुस्वर स्वर	श ष स ह	स्वर	ठ
		विसर्ग :	य र ल व ह	

अभ्यास

१ स्वर और व्यंजन का भेद स्पष्ट करो।

२ उच्चारण के अनुसार स्वरों के भेद लिखो।

३ संयुक्त और दीर्घ स्वर का अन्तर समझाइए।

४ अयोगवाह का शब्दार्थ लिखिये।

५ व्यंजनों के भेद स्पष्ट करो।

६ उदात्त, अनुदात्त, स्वरित का अन्तर बताइए।

७ निम्नलिखित वर्णों के स्थान प्रयत्न लिखो।

क, च, ड, फ,

र, ह, ष, ण, द।

८ अभ्यन्तर और बाह्य प्रयत्न का भेद दिखाइए।

सन्धि प्रकरण

सन्धि–दो वर्णों के परस्पर निकट होने पर जो उनके मेल से विकार होता है। यथा—इति+आदि इत्यादि। सन्धि वर्णों का मेल है, किन्तु समास शब्दों का, यही दोनों में परस्पर अन्तर है। सन्धि का प्रयोग समास प्रत्यय आदि सब में होता है । संस्कृत भाषा का यह प्रधानतम अंग है। इसके तीन भेद हैं।

१ **अच् सन्धि या स्वर सन्धि**—स्वर का स्वर से मेल होने पर होने वाला विकार होती है यथा—हिम+आलयः

२ **व्यंजन सन्धि**—व्यंजन का स्वर व्यंजन के मेल से होने वाला विकार होती है यथा—जगत्+ईशः=जगदीशः । वाक्+दानम=वाग्दानम।

३ **विसर्ग सन्धि**—विसर्गों का स्वर व्यंजन से मिलकर होने वाला विकार होती है। यथा—मनः+हरः=मनोहरः।

स्वर सन्धि

स्वर सन्धि के मुख्य सात नियम हैं। यण्, अयादि, गुण, वृद्धि, दीर्घ, पूर्वरूप, पररूप।

१. यण्

१ इ, उ, ऋ, लृ से परे असवर्ण स्वर होने पर क्रमशः य् , व् , र् , ल् , हो जाते हैं। यथा—
दधि + आनय = दध्यानय, प्रति + अर्थित्वम् = प्रत्यर्थित्वम्, यदि + अपि = यद्यपि, इति + एवम = इत्येवम् । सु + आगतम् = स्वागतम्,
मधु + आनय = मध्वानय, वस्तु + इदम् = वस्त्विदम्
अनु + अयः = अन्वयः ।

पितृ + अर्थः = पित्रर्थः, पितृ + उपदेशः = पित्रुपदेशः, पितृ + आज्ञा = पित्राज्ञा, भ्रातृ + उदयः भ्रात्रुदयः । तव + लृकारः = तवल्कारः ।

२. अयादि

ए ऐ ओ औ से परे कोई भी स्वर हो तो क्रम से अय् , आय् , अव् , आव् हो जाते हैं।
ने + अनम् = नयनम् चे + अनम् = चयनम् ।
नै + अकः = नायकः, गै + अकः = गायकः ।
भो + अनम् = भवनम्, भो + अति = भवति
पो + इत्रम् = पवित्रम्, भौ + उकः = भावुकः,
पौ + अकः = पावकः, नौ + इकः = नाविकः ।

३. गुण

अ से परे इ हो तो ए, अ से परे उ हो तो ओ, ऋ हो, तो अर् हो जाता है यथा—

---

१ इको यणचि ६।१।७७।२ एचोऽयवायावः । ३ आद्गुणः ६।१।८७

अ + इ = ए, उप + इन्द्रः = उपेन्द्रः ।
रमा + ईशः = रमेशः ।
दिन + ईशः = दिनेशः ।
अ + उ = ओ, गङ्गा + उदकम् = गंगोदम् ।
हित + उपदेशः = हितोपदेशः
अ + ऋ = अर् कृष्ण + ऋद्धि = कृष्णर्द्धिः ।
देव + ऋषिः = देवर्षिः ।

४. वृद्धि —

अ से परे ए ऐ हो ऐ, ओ औ हों, तो औ हो जाता है
अ + ए = ऐ, कृष्ण + एकत्वम् = कृष्णैकत्वम
अ + ऐ = ऐ, देव + ऐश्वर्यम् = देवैश्वर्यम्
अ + ओ = औ, गंगा + ओघः = गंगौघः ।
अ + औ = औ, कृष्ण + औत्कण्ठ्यम् = कृष्णौत्कण्ठ्यम् ।

५. दीर्घ—

अ, इ, उ, ऋ, ऌ से परे सवर्ण स्वर होने पर दीर्घ सवर्ण स्वर हो जाता है ।
अ + अ = आ, दैत्य + अरिः = दैत्यारिः,
स्व + अर्थः = स्वार्थः ।
इ + इ = ई श्री + ईशः = श्रीशः ।
कपि + इन्द्रः = कपीन्द्रः ।
उ + उ = ऊ गुरु + उपदेश = गुरूपदेशः
ऋ + ऋ = ॠ मातृ + ऋणम = मातॄणम

---

१ वृद्धिरेचि ६।१।८८। २ अकः सवर्णे दीर्घः ६।१।१०१
३ एङः पदान्तादति ६।१।१०९

६. पूर्व रूप—

ए, ओ से परे अ होने पर अ का लोप हो जाता है और (ऽ) अर्धाकार का चिन्ह रह जाता है जैसे—

हरे + अव = हरेऽव, प्रभो + अनुगृहाण = प्रभोऽनुगृहाण।

७. पररूप—

(क) उपसर्ग से परे ए, ओ होने पर पररूप हो जाता है।

यथा प्र + एजते = प्रेजते,

उप + ओषति = उपोषति।

अच् सन्धौ।

प्रकृति भावः

(१) संबोधन करने पर सन्धि नहीं होती एहि कृष्ण! अत्र गौश्चरति।

(२) दूर से बुलाने में भी प्रकृतिभाव हो जाता है। यथा— सक्तून् पिब देवदत्त!

(३) द्विवचनान्त ई, ऊ, ए से परे सन्धि नहीं होती

यथा— हरी + एतौ = हरी एतौ।

विष्णू + इमौ = विष्णू इमौ।

गंगे + अमू = गंगे अमू।

(४) अदस् से परे ई, अ हो तो प्रकृतिभाव होता है।

यथा— अमी + अश्वाः = अमी अश्वाः

(क) एङि पररूपम् १ प्लुत प्रगृह्या अचि २ दूराध्दूते च। ३ ईदूदेद्द्विवचन नित्यम्। ४ अदसोभात् ५ ओत्।

अमू+आसाते=अमू आसाते ।

(५) ओत् अन्त निपात भी प्रकृति भाव होता है । यथा—
अहो ईशः ।

अभ्यास

१. सन्धि योग करो—

मुनी+इमौ, अहो+ईशाः, तथा+एषः,
कृष्ण+ऋणम्=सूर्य+उदयः, यदि+अपि
विद्या+अर्थी, एषः+अत्र ।

२. सन्धिच्छेद करो—

दध्यानय, मध्वत्र, कृष्णैकत्वम्, मन्वन्तरम्, वहत्यत्र, नदीशः, हरेऽत्र । उपोषति । कृष्णौत्कण्ठ्यम् । तवल्कारः ।

३. शुद्ध करो—

हर्येमौ, तथेव, गुरोपदेशः, दैत्योरिः, महेन्द्रः, नदिशः दध्यनयनम् ।

४. यण् सन्धि गुणसन्धि को नियम सहित स्पष्ट करो ।

५. प्रकृति भाव से क्या अभिप्राय है उदाहरण देकर स्पष्ट करो ।

————

व्यंजन-सन्धि

व्यंजन का स्वर व्यंजन से मिलना है

नियम -१ सकार से परे शकार या चवर्ग हो तो, उसे शकार हो जाता है। तबर्ग से परे चवर्ग होने पर क्रम से तवर्ग के वर्ण को चवर्ग का वर्ण हो ज ता है।

जैसे—त् को च् आदि।

स+श=श्श	हरिस्+शेते=हरिश्शेते।
त+च=च्च	सत्+चित्=सच्चित,
	तत्+चित्रम्=तच्चित्रम्।
न+ज=ञ्ज	शाङ्गिन्+जय=शार्ङ्गिञ्जय।
	सत्+जनः=सज्जनः।

शकार से परे तवर्ग को चवर्ग को चवर्ग नहीं होता।

यथा—प्रश्नः, विश्नः इत्यादि।

२. सकार तवर्ग से परे षकार तवर्ग होने पर षकार टवर्ग होता है।

स+ष=ष्ष,	रासस्+षष्ठः=रामष्षष्ठः,
स+ट=ष्ट,	रामस्+टीकते=रामष्टीकते,
त+ढ+ट्ट	तत्+टीका=तट्टीका,

---

१ स्तोः श्चुना श्चुः। २ ष्टुना ष्टुः। तोः षि

न + ढ = ण्ढ चक्रिन् + ढौकसे = चक्रिण्ढौकसे

तवर्ग से परे षकार होने पर टवर्ग नहीं होता।

सन् + षष्ठः = सन्षष्ठः (इ)

३. किसी वर्ग के प्रथमाक्षर से परे कोई भी अनुनासिक वर्ण हो तो उसे अपने वर्ग का अनुनासिक वर्ण विकल्प से होता है।

(१) त् + म = न्म, एतत् + मुरारिः = एतन्मुरारिः
एतद् मुरारिः।

क + म = ङ् उदक् + मुखः = उदङ् मुखः
उदक् मुखः।

च + न = ञ्

अच् + नैव = अञ् नैव, अज् नैव।

ट + म = ण् जैसे—षट् + मासः = षण्मासः षड् मासः

प् + म = म्म यथा अप् + मयम् = अम्मयम अब्मयम्।

४. तवर्ग से परे लकार होने पर उसे लकार हो जाता है। अनुनासिक वर्ण 'न' अनुनासिक सहित लकार हो जाता है। यथा—

त + ल = ल्ल, तत् + लीनम् = तल्लीनम्।
तत् + लयः = तल्लयः
विद्वान् + लिखति = विद्वाँल्लिखति।
महान् + लाभः = महांल्लाभः।

---

१ यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा २ तोर्लि ३ झलां जशोऽन्ते अनुनासिक वर्ण परे नहीं होना चाहिए।

५. (इ) पदान्त क्, ट्, त्, प् से यदि कोई घोष वर्ण स्वर इ_ हो, तो अपने वर्ग का तृतीय वर्ण हो जाता है। यथा—

वाक्+दानम=वाग्दानम, बागीशः। वाक्+ईशः

प्राक्+उक्तम्=प्रागुक्तम् चित्+रूपम=चिद्रूपम

जगत्+आधार=जगदाधार

षट्+दर्शनम=षड् दर्शनम

तत्+एव=तदेव

अप्+जः=अब्ज

अप्+हरणम=अब्हरणम।

६. (१) त् से परे श् हो, तो उसे छ् हो जाता है औ त् को च् पूर्व नियम से हो जाता है।

(स्तो श्चुना श्चुः) यथा—महत्+छत्रम=महच्छत्रम्।

तत्+श्रुत्वा=तच्छ्रुत्वा।

तत्+श्लोकेन=तच्छ्लोकेन।

७ पदान्त च् को अनुनासिक वर्ण आगे न होने पर घोष वर्ण ग् और अघोष वर्ण होने पर क् हो जाता है। (२)

वाच्+भिः=वाग्भिः।

वाच्+विरोधः=वाग्विरोधः।

प्राच्+करोति=प्राक्करोति।

वाच्+कुत्सा=वाक् कुत्सा।

८. पदन्त क्, ट् त्, म्, को अपने वर्ण का तृतीय वर्ण विकल्प से हो जाता है। यथा—

---

१ शश्छोऽटि। २ चोकुः। ३ खरिच

सरिद्—द्। दिग्—ग्।

९. (३) ख्, ग् घ् छ् ज् झ् ठ्, ड्, ढ्, थ्, द्, ध् फ् ब्, भ से परे वर्ग के दूसरे तीसरे श् ष् स् वर्ण हों तो अपने वर्ग का प्रथम अक्षर हो जाता है यथा—

विपद्+सु=विपत्सु।

ककुभ+सु=ककुप्सु।

किसी वर्गीय चौथे वर्ण से परे त् वा थ् हो तो ध् हो जाता है। यथा—लभ्+त्वा=लब्ध्वा, क्रुध्+तः=क्रुद्धः। तथोर्धोधः झलां जश् झशि।

१०. चवर्ग, के बिना अन्य वर्गों के अनुनासिक हीन वर्णों से परे ह् को वर्गानुसार घ्, ढ् ध्, भ् वर्ण हो जाते हैं। यथा—

वाक्+हरिः=वाग्घरिः।

उत्+हारः=उद्धारः। उद्धृतः।

अप्+हानिः=अब् भानिः

विश्वसृड्+हस्तः=विश्वसृड्ढस्तः।

११. (२) उत्-द् उपसर्ग स्था, स्तम्भ धातु के स को लुप्त कर दिया जाता है यथा—उद्+स्थानम्=उत्थानम्, उद्+स्तम्भनम्=उत्तम्भनम्।

१२. (३) मान्त—पद को अनुस्वार हो जाता है यदि परे कोई व्यंजन वर्ण हो यथा=हरिम्+वन्दे=हरिं वन्दे। गुरुं प्रणमामि।

---

१ झयो होऽन्यतरस्याम्। २ उदः स्थास्तम्भोः पूर्वस्य

३ मोऽनुस्वारः। ४ नश्चापदान्तस्य झलि।

१३. (४) त् म् पद के अन्त में न हों, तो झल् पर रहते अनुस्वार हो जाता है। यशान्+सि=यशांसि।

आक्रम्+स्यते=आक्रंस्यते।

१३. ह्रस्व स्वर अ, इ, उ से परे यदि ङ्, ण्, न् हों और कोई स्वर हो तो इन्हें द्वित्व हो जाता है। (१०)

यथा प्रत्यङ्+आत्मा=प्रत्यङ्ङात्मा,

सुगण्+ईशः=सुगण्णीशः।

तस्मिन्+इदम्=तस्मिन्निदम्।

१४. म् से परे अन्तस्थ ऊष्म वर्ण हों, तो सदा अनुस्वार होता है। यथा—

(अ) सम्+योगः=संयोगः।

सम्+शयः=संशयः।

सम्+हारः=संहारः।

१५. पदान्त न् से परे यदि च्, छ् हों तो श न् को र् (:स—श्) ट ठ हों तो न् को र् (:स् ष्) त् थ् हों, तो स् अनुस्वार और चन्द्रविन्दु हो जाते हैं। यथा—

कस्मिन्+चित्=कस्मिंश्चित्, कस्मिँश्चित्

शार्ङ्गिन्+छिन्धि=शार्ङ्गिंश्छिन्धि शार्ङ्गिँश्छिन्धि।

चक्रिन् त्रायस्व=चक्रिंस्त्रायस्व, चक्रिँस्त्रायस्व

१६. पद के अन्त में होने वाले म् के आगे स्पर्श वर्ण के अनुस्वार म् को पांचवां वर्ण विकल्प से हो जाता है।

---

१ ङमो ह्रस्वादचि ङमुन्नित्यम् २ प्रशान् शब्द के न को नश्छव्य नशान्। प्रशान् तनोति ३ नश्चापदान्तस्य झलि। मोऽनुस्वारः।

सम्+कल्पः=संकल्प—सङ्कल्पः।

तम्+जयति=तञ्जयति तंजयति। चापं+टंकुर्वाताम्।

चापं टङ्कुर्वाताम्+चापण्टकुर्वाताम्।

सम्+तोषः=सन्तोषः—संतोषः।

सम्+भवः=संभवः—सम्भवः। सम्पूर्णः।

१७. (१) ह्रस्व स्वर से परे छ् हो, तो सदा च् आगम होता है और दीर्घ स्वर से परे विकल्प से च् होता है। यथा—

शिव+छाया=शिवच्छाया।

छत्र+छाया=छत्रच्छाया।

लक्ष्मी+छाया=लक्ष्मीच्छाया लक्ष्मी छाया

अभ्यास

१. सन्धिच्छेद करो—

उद्धारः, तन्न, स्वच्छन्द, रामश्शेते, आपदेव, उदङ् मुखः, एतस्मिन्ननन्तरे, अन्भरणम्, तट्टीका, सम्पूर्णः, सन्तोषः, संशयः, सम्बन्धः, तल्लयः, वाग्धरिः। तच्छिवः। सञ्जयः, शार्ङ्गिञ्जय।

२. सन्धियोग करो—

वाच्+कृतम्+लक्ष्मी+छाया, तत्+लीनम्, सन्+अच्युतः, यशान्+सि, उद्+स्थानम् रामस्+टीकते। तत्+पात्रम्, विद्वाद+लिखति, सत्+शास्त्रम्।

---

१ छेच। पदान्ताद् वा।

३. शुद्ध करो—

सम्वत्, विछ्नः, उत्सम्भनम्, एतम्भुरारिः, आक्रम्स्यते+ हरिम्वन्दे+प्रशांस्तनोति+स्वछाया, वागेव, तदूक्तम् धावनश्वः।

विसर्ग सन्धि प्रकरणम्

विसर्ग सन्धि—विसर्ग का स्वर व्यंजन से मिल कर होने वाला विकार है।

(१) ख्, फ्, छ्, ठ्, थ्, च्, ट्, त, व्, क्, प्, य्, श्, ष, स्, परे होने पर विसर्ग का स् हो जाता है। (१)
यथा— हरिः+त्राता=हरिस्त्राता,
विष्णुः+त्रायस्व=विष्णुस्त्रायस्व।

श्, ष्, स् परे होने पर विसर्ग को श्, ष् स् विकल्प से हो जाता है। यथा—

हरि-श्शेते, प्रथमस्सर्गः हरिः शेते प्रथम् सर्गः विसर्जनीयस्य सः। वा शरि।

२. इ उ से परे विसर्ग को मूर्धन्य षकार हो जाता।
सर्पिः+कल्पम्=सर्पिष्कल्पम्
सर्पिष्काम्यति। दुः+कर्म=दुष्कर्म
(इदुदुपधस्य चा प्रत्ययस्य) दुष्कार्यम् (क) दुष्कृतम्।

३. (स) नमः, पुरः की विसर्ग को क् प् परे होने पर स हो यथा—नमः+कृत्य=नमस्कृत्य, पुरस्कृत्य पयः+पाशम्= पयस्पाशम्। तिरः से विकल्प से विसर्ग को स् होता है।

यथा—तिरः+कर्ता=तिरस्कर्ता—तिरः कर्ता ख, आविः+कृतम् =आविष्कृतम् । निः+प्रत्यूहम्=निष्प्रत्यूहम् ।

४. द्वि, त्रि, चतुः की विसर्ग को करने के अर्थ में विकल्प से षकार हो जाता है ।

त्रिः+करोति=त्रिष्करोति ।

चतुः+करोति=चतुष्करोति ।

५. (ग) अयस्स् आदि शब्दों से कार कुम्भ आदि शब्द परे रहते समास में सकार का आदेश हो जाता है ।

यथा—अयः+पात्रम् =अयस्पात्रम्

अयः+कुम्भः=अयस्कुम्भः ।

अधः और शिरः की विसर्ग को पद शब्द परे होने पर सकार का आदेश होता है । यथा—

अधः+पदम् =अधस्पदम् । शिरः+पदम्

शिरस्पदम् (अधः शिरसि पदे)

(१) अथ स्वादि सन्धि प्रकरणम् ।

(२) पदान्त सकार तथा सजुष् शब्द के ष् को रु हो जाता है । अकार से परे रु को उकार हो जात है अप्लुत अत् होने पर । यथा—

शिवस्+अर्च्यः शिवरु अर्च्यः, शिव उ अर्च्यः

शिवोऽर्च्यः । नृपोऽर्च्यः ।

(क) इणः षः । (ख) नमः पुरसोर्गत्यो :—

इदुदुपधस्य चाप्रत्ययस्य तिरसोऽन्यतरस्याम् । (ग) करोत्यादि परेषु न तूत्तरपदस्थस्य ।

अप्लुत अकार से परे ह, य, व र् ट, ल ण् ञ म ङ ण न झ भ भ ञ् घ ढ ध ष् ज ब ग ड द श वर्ण परे रहते रु को उकार हो जाता है। यथा—

शिवस्+बन्द्यः—शिव रु वन्द्यः=शिवो वन्द्यः। गजः+ याति=गजो याति। देवः+हस्ती=देवो हस्ती। (हशिच)

२ तत्—एतद् शब्द के परे स् का लोप हो जाता है व्यंजन परे रहते।
न ञ् समास से नहीं दत्तदोः सुलोपोऽकोर न ञ् समासे हलि यथा—

एषस्+शिव : : एय शिवः
सस्+शम्भुः=स शम्भुः।

३ भो, भगो अधो के रु को य् और उसका लोप हो जाता है। अ परे होते। यथा—
भोस्+अच्युत=भोरु अक्युत भोय् अच्युत भो अच्युत। भगोस्+नमस्ते=भगो नमस्ते, अघोस्+याहि=अधो याहि। भो लक्ष्मी आदि। (ओ तो गार्ग्यस्य)

४ रेफ से परे रेफ का लोप हो जाता है और पूर्ववर्त्ती ह्रस्व स्वर दीर्घ हो जाता है। यथा—
हरि र्+रम्यः=हरी रम्यः, पुनर्+रमते=पुना रमते (रोरि, ढ्लोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः।

---

(१) भट्टोजिदीक्षित ने इसे पृथक् स्वीकार किया है सारस्वत आदि में भी ऐसा ही है।
(क) ससजुषो रुः। अतो रोरप्लुतादप्लुते

अभ्यास

सन्धिच्छेद करो :–

शिवो वन्द्यः, मनोरथः, नमस्कृत्य, तिरस्कर्ता, रामेण, कविषु, प्रमाणम् । भो अच्युत । शिवोऽर्च्यः, कः+तत्र ।

षत्व—इण् कवर्ग से परे अपदान्त सकार को षकार हो जाता है । वि+सम=विषम, हरि+सु=हरिषु । (आदेश प्रत्यययोः)

णत्व—ऋ र् ष् परे न को ण् हो जाता है चाहे बीच में अट्, कवर्ग पवर्ग आङ् नुम् का व्यवधान ही क्यों न हो यथा—

ऋ+न=ऋण, भूष्+अन=भूषण,

भर्+अनम्=भरणम् ।

अट् कुप्वाङ्—नुम् व्यवायेऽपि । रामायणम् । कृपणः

रषाभ्या नोणः समानपदे ।

लिंग, वचन, कारक

संज्ञा सर्वनाम आदि विकारी शब्द हैं। संज्ञा और सर्वनाम में लिंग, वचन, कारक द्वारा परिवर्तन आता है।

लिंग (GENDER)

लिंग वह है जो पुरुष जाति, स्त्री जाति और दोनों से भिन्न तृतीय नपुंसक जाति का बोध कराता है।

अतः संस्कृत में लिंग तीन प्रकार का है :—

१ पुलिंग पुरुष जातिबोधक होता है यथा—गजः, सारमेयः।

२ स्त्रीलिंग स्त्री जाति बोधक है यथा—नारी, वधू।

३ नपुंसक लिंग—जो प्रायः किसी निर्जीवस्तु के लिये आता है। यथा—जल, फल आदि, शब्द।

संस्कृत में लिंग ज्ञान की कुछ कठिनता है, जैसे एक शब्द स्त्रीलिंग में आ रहा है, किन्तु इसका समानार्थक शब्द पुंलिंग में आता है। देवता स्त्रीलिंग और देव, अमर सुर पुलिंग हैं। इसी प्रकार अप् शब्द जल वाचक स्त्रीलिंग में आता है और वारि जल नपुंसक लिंग में आते हैं।

लिंग—परिज्ञान के कुछ नियम इस प्रकार हैं तिथियों के नाम, स्त्रीलिंग हैं 'ता' प्रत्ययान्त शब्द भी स्त्रीलिंग होते हैं।

यथा—जनता, शत्रुता, मित्रता आदि ।

पुलिंग शब्द—वृक्षों के नाम (प्रायः)—वारों, मासों के नाम

यथा - प्लक्षः, वटः, भौमवासरः, वैशाखः इत्यादि ।

विशेषण और सर्वनाम शब्द तीनों लिंगों में आते हैं ।

यथा—

(पु०)	(स्त्रीलिंग)	(नपु०)
सुन्दरः बालः	सुन्दरी युवतिः ।	सुन्दर फलम् ।

सर्वनाम यथा— (न०)

इदम् फलम्, इयं तरुणी, अयं पुरुषः ।

विशेष—निर्जीव वस्तुएं नपुंसक लिंग में ही नहीं आतीं पुलिंग स्त्रीलिंग में भी आ जाती हैं । यथा—माला, नदी, आदि स्त्रीलिंग हैं ।

तरु, अग्नि, इषु (बाण) आदि पुलिंग हैं ।

युष्मद् अस्मद् शब्दों का लिंग समान रहता है, परिवर्तित नहीं होता । क्रिया का लिंग संस्कृत में नहीं होता यथा नारी गच्छति अथवा नरः गच्छति । अव्यय शब्द—बिना लिंगादि के होते हैं यथा—यत्र, कुत्र, तत्र आदि ।

वचन (NUMBER)

वचन—वह है जो वस्तुओं की संख्या सूचित करे कि वस्तु एक है, दो हैं अथवा दो से अधिक संस्कृत में वचन तीन हैं ।

१. एकवचन—जो एक के लिए आये यथा—रामः ।

२. द्विवचन—जो दो के लिये आता है। यथा—रामौ।

३. बहुवचन—जो दो से अधिक वस्तुओं के लिये आता है। यथा रामाः।

१. आदर के लिये सदैव बहुवचन आता है। यथा—
तत्र भवन्तः (पूज्य आप) प्रमाणम्।

२. जातिवाचक शब्द एकवचन में भी आते हैं। यथा—
न निम्ब वृक्षः मधुरत्वमेति।

३. गण, वृन्द, मण्डल आदि लगाने से भी बहुवचन बनता है। यथा—
भो ! छात्रवृन्द ! विप्र मण्डल, क्षत्रिय गण इत्यादि।

कारक (CASE)

कारक वह है जो क्रिया के साथ सम्बन्ध रखने वाला होता है। करोति इति कारकः।

संज्ञा सर्वनाम के जिस रूप से उसका सम्बन्ध क्रिया या वाक्य के अन्य शब्दों के साथ ज्ञात हो उसे कारक कहते हैं।

विभक्ति वह हैं (Case-ending) जो पृथक् २ चिन्हों से कारकों को सूचित करती है अर्थात्-वे चिन्ह जो कारक को सूचित करें विभक्ति कहलाते हैं। विभक्तियां सात हैं। प्रथमा, द्वितीया, तृतीया, चतुर्थी, पंचमी, षष्ठी, सप्तमी।

कारक ६ हैं। कर्त्ता कर्म, करण, संप्रदान, अपादान और अधिकरण।

१. कर्त्ता (Subject) जो क्रिया करने वाला होता है । इसके लिये प्रथमा विभक्ति होती है । यथा - *बालः* पठति । इसमें बाल पढ़ना क्रिया का कर्त्ता है ।

२. कर्म (Object) जिस पर क्रिया का फल पड़ता है। इसके लिये दूसरी विभक्ति होती है । यथा—बालः *पुस्तकं* पठति । इसमें पुस्तकं कर्म है क्योंकि उस पर पढ़ना क्रिया का फल पड़ता है ।

३. करण (Instrumental) क्रिया का साधन होता है । इसके लिये तीसरी विभक्ति आती है । यथा—रामेण *बाणेन* हतो वाली । इसमें 'बाणेन' करण कारक है, क्योंकि इसके द्वारा मारना क्रिया सिद्ध हो रही है । (साधकतमं करणम)

४. सम्प्रदान (Dative)—जिसको कुछ दिया जाय या जिसके लिये कुछ किया जाय । यथा—*मुक्तये* हरिं सेवते । इसमें मुक्तये सम्प्रदान है क्योंकि उसके लिये हरि सेवन हो रहा है । इसके लिये चौथी विभक्ति प्रयोग में आती है ।

५. अपादान (Ablative)—जिससे किसी के पृथक् होने का का बोध हो । यथा—*विद्यालयात्* निर्गच्छति । इसमें । 'विद्यालयात्' अपादान है इसके लिये पांचवीं विभक्ति आती है ।

६. अधिकरण (Locative)—जो क्रिया के आधार को बतलाये यथा—*जले* मग्नः इसमें जले अधिकरण है इसके सप्तमी विभक्ति आती है ।

विशेष संबोधन—कर्त्ता कारक के ही तुल्य है और सम्बन्ध कारक भी केवल संज्ञाओं का सम्बन्ध बोध कराता है उसका क्रिया से कोई सम्बन्ध नहीं होता, अतः क्रियान्वयि कारकम यह लक्षण उस पर नहीं घटता । इससे संस्कृत भाषा में कारक ६ ही सिद्ध होते हैं ।

अभ्यास

१. लिंग बचन और कारक का लक्षण लिखो ।
२. विभक्तियां कितनी हैं और कौन २ सी, लिखो ?
३. सम्बन्ध और सम्बोधन क्यों कारक नहीं माने जाते ?
४. बहुवचन बनाने के कुछ विशेष नियम बतलाओ ।
५. कर्म, सम्प्रदान और अधिकरण का लक्षण लिखो ।

— ——— —

रामः

अजन्त पुलिंग प्रकरणम्

विभक्ति प्रत्यय

प्रथमा	सु (स्)	औ	जस् (अस्)
द्वितीया	अम् म्	औट् (औ)	शस् (अन्)
तृतीय	टा (इन)	भ्याम	भिस् (ऐस्)
चतुर्थी	ङे (य)	"	भ्यस्
पंचमी	ङसि (आत्)	"	"
षष्ठी	ङ् स् (स्य)	ओस्	आम
सप्तमी	ङि (इ)	"	सुप्

राम

प्रथमा विभक्ति		रामः	रामौ	रामाः ।
द्वितीया	"	रामम्	"	रामान् ।
तृतीया	"	रामेण	रामाभ्यां	रामैः ।
चतुर्थी	"	रामाय	"	रामेभ्यः ।
पंचमी	"	रामात्	"	"
षष्ठी	"	रामस्य	रामयोः	रामाणाम
सप्तमी	"	रामे	रामयोः	रामेषु
संबधन		हे राम	हे रामौ	हे रामाः ।

अन्य शब्द

कृष्ण,	मत्स्य,	बात,	चन्द्र,	सागर	विहग
नृप	गोप,	छात्र	मेघ,	स्वर्ग	सिंह
अवनिप	क्रोध,	बाल	मार्जार	सर्प	प्रिय
महीप	वृक्ष,	विडाल,	रोष,	मोह	लोभ,
अज	रण,	देव	सन्तोष,	काल,	यम
भ्रमर	वृषभ,	असुर	भूप	नग	गज
समय	मृग	देश	ब्राह्मण	वैश्य	क्षत्रिय

इकारान्त हरि शब्द

प्रथमा विभक्ति	हरिः	हरी	हरयः।
द्वितीया ,,	हरिम्	,,	हरीन्।
तृतीया ,,	हरिणा	हरिभ्यां	हरिभिः।
चतुर्थी ,,	हरये	,,	हरिभ्यः।
पंचमी ,,	हरेः	,,	,,
षष्ठी ,,	,,	हर्योः	हरीणाम्
सप्तमी ,,	हरौ	,,	हरिषु
सं० ,,	हे हरे	हरी	हरयः

इसी प्रकार के अन्य शब्द

ऋषि,	सारथि,	यति	मणि, अग्नि
पाणि,	असि,	भूपति,	पृथ्वी पति,
रवि,	उदधि,	निधि,	अरि
गिरि,	राशि,	कवि,	रश्मि।

अनुवाद

राम सीता दोनों (उभौ) आदर्श हैं। कृष्ण के लिये गोपियां प्रेम रखती हैं। राजा बन को गया। वहां धन के ढ़ेर हैं। मणियों की राशि नहीं होती। घोड़ा मार्ग में भूलता नहीं। क्रोध से दुःख होता है। कलियुग का समय विचित्र है।

इकारान्त पति शब्द

प्रथमा वि०	पतिः	पती	पतयः ।
द्वितीया ,,	पतिम्	,,	पतीन् ।
तृतीया ,,	पत्या	पतिभ्यां	पतिभिः ।
चतुर्थी ,,	पत्ये	,,	पतिभ्यः ।
पंचमी ,,	पत्युः	,,	पतिभ्यः ।
षष्ठी ,,	,,	पत्योः	पतीनाम् ।
सप्तमी ,,	पत्यौ	,,	पतिषु
संबोधन	हे पते	हे पती	हे पतयः ।

इकारान्त सखि शब्द पुलिंग

प्रथमा वि०	सखा	सखायौ	सखायः ।
द्वितीया ,,	सखायम्	,,	सखीन् ।
तृतीया ,,	सख्या	सखिभ्यां	सखिभिः ।
चतुर्थी ,,	सख्ये	,,	सखिभ्यः ।
पंचमी ,,	सख्युः	,,	,,
षष्ठी ,,	सख्यु	सख्योः	सखीनाम

सप्तमी ,,	सख्यौ	,,	सखिषु
संबोधन	हे सखे	हे सखायौ	हे सखायः।

उकारान्त भानु शब्द

प्रथमा वि०	भानुः	भानू	भानवः।
द्वितीया ,,	भानुम्	,,	भानून्।
तृतीया ,,	भानुना	भानुभ्यां	भानुभिः।
चतुर्थी ,,	भानवे	,,	भानुभ्यः।
पंचमी ,,	भानोः	,,	,,
षष्ठी ,,	,,	भान्वोः	भानूनाम्
सप्तमी ,,	भानौ	,,	भानुषु।
संबोधन	हे भानो	हे भानू	हे भानवः

अन्य शब्द

गुरु	साधु	रिपु	तरु
धातु	विन्दु	प्रभु	ऋतु
बाहु	सिन्धु	इषु	शिशु
विधु	गोमायु	शम्भु	वायु

अनुवाद

सूर्य का प्रकाश तेज़ होता है।

शत्रु क्या नहीं करते।

जल की धारायें वायु से कांपती हैं।

सती नारी पति का साथ नहीं छोड़ती।

मित्रों में परस्पर शुद्ध मन होना चाहिए।

ऋकारान्त पितृ शब्द

प्रथम वि०	पिता	पितरौ	पितरः ।
द्वितीया ,,	पितरम्	,,	पितृन् ।
तृतीया ,,	पित्रा	पितृभ्यां	पितृभिः ।
चतुर्थी ,,	पित्रे	,,	पितृभ्यः ।
पंचमी ,,	पितुः	,,	,,
षष्ठी ,,	,,	पित्रोः	पितृणाम्
सप्तमी ,,	पितरि	,,	पितृषु
संबोधन	हे पितः	हे पितरौ	हे पितरः

इसी प्रकार अन्य शब्द

भ्रातृ, श्रोतृ, दातृ, हर्तृ, कर्तृ, सवितृ, द्रष्टृ, जनयितृ, नेतृ, गन्तृ, भर्तृ, जामातृ, नप्तृ ।

अनुवाद

पिता के लिये पुत्र फल लाता है ।
होता घी की आहुतियां डालता है ।
भाई-भाई का शत्रु बन जाता है (जायते)
जामाता पुत्र के समान होता है ।
नेता लोग जनता को छलते हैं (वंचयन्ति)
दानी प्रसिद्धि के अभिलाषी नहीं होते ।

ओकारान्त गो शब्द (बैल)

प्रथम वि०	गौः	गावौ	गावः ।
द्वितीया ,,	गाम्	,,	गाः ।

तृतीया	,,	गवा	गोभ्यां	गोभिः।
चतुर्थी	,,	गवे	,,	गोभ्यः।
पंचमी	,,	गोः	,,	,,
षष्ठी	,,	,,	गवोः	गवाम्।
सप्तमी	,,	गवि	,,	गोषु।
संबोधन		हे गौः	हे गावौ	हे गावः।

औकारान्त ग्लौ शब्द (चन्द्रमा)

१ ग्लौः	ग्लावौ	ग्लावः।
२ ग्लावम्	,,	ग्लावः।
३ ग्लावा	ग्लौभ्याम्	ग्लौभिः।
४ ग्लावे	,,	ग्लौभ्यः
५ ग्लावः	,,	,,
६ ,,	ग्लावोः	ग्लावाम्
७ ग्लावि	,,	ग्लौषु
सं हे ग्लौः	हे ग्लावौ	हे ग्लावः।

स्वरान्त स्त्रीलिंग प्रकरणम्

आकारान्त माला शब्द

प्रथमा	माला	माले	मालाः ।
द्वितीया	मालाम्	,,	,,
तृतीया	मालया	मालाभ्यां	मालाभिः ।
चतुर्थी	मालायै	,,	मालाभ्यः ।
पंचमी	मालायाः	,,	,,
षष्ठी	,,	मालयोः	मालानाम् ।
सप्तमी	मालायाम्	,,	मालासु
संबोधन	हे माले	हे माले	हे मालाः ।

इसी प्रकार निम्नलिखित शब्द हैं

प्रभा	ग्रीवा	कान्ता	ललना
चिन्ता	कन्धरा	शाला	शिखा
शोभा	जरा	कला	रेखा
प्रमदा	शिविका	जिह्वा	कथा
रमा	भार्या	गंगा	जटा
ललना	क्षमा	आज्ञा	विद्या
लज्जा	ईर्ष्या	क्रीडा	घृणा

	छाया	प्रजा	वृद्धा
प्रमदा	बाला	वेश्या	बालिका
	निशा	प्रार्थना	इत्यादि ।

अनुवाद

मेरे गले में माला मत डालो । (धारय)
वृद्धावस्था अति दुःखदायी है । (जरा)
खाट पर सो जाओ (खट् वायाम्)
यह कथा तुमने कभी सुनी है ? (श्रुता)
भार्या की परीक्षा दुःख के समय होती है ।
कन्यायें पढ़ने के लिये पाठशाला में गईं ।
लक्ष्मी की कृपा सदैव नहीं रहती (अनित्या)
बन की शोभा अति मनोरम है । (रम्या)
वह जटाओं से भूषित हुआ है और अतिविरक्त है ।
कोई गंगा में स्नान करता है कोई यमुना में ।

इकारान्त स्त्रीलिंग गति शब्द

प्रथमा	गतिः	गती	गतयः
द्वितीया	गतिम्	,,	गतीः ।
तृतीया	गत्या	गतिभ्यां	गतिभिः ।
चतुर्थी	गत्ये-गते	,,	गतिभ्यः
पंचमी	गत्याः-गतेः	,,	,,
षष्ठी	,, ,,	गत्योः	गतीनाम्
सप्तमी	,,	,,	गतिषु
सं०	गते	गती	गतयः ।

अन्य शब्द

ऊर्मि	मति	भक्ति	नति	कृति
श्रुति	स्मृति	स्तुति,	प्रकृति	क्रान्ति
कान्ति	बुद्धि	कटि	रुचि	सरणि
स्मृति	भूति	विरक्ति	विपणि	निवृत्तिः

ईकारान्त नदी शब्द

प्र०	नदी	नद्यौ	नद्यः।
द्वि०	नदीम्	,,	नदीः।
तृ०	नद्या	नदीभ्यां	नदीभिः।
च०	नद्यै	,,	नदीभ्यः।
पं०	नद्याः	,,	,,
ष०	,,	नद्योः	नदीनाम्
स०	नद्याम्	,,	नदीषु
स	नदि !	नद्यौ	नद्यः।

इसी प्रकार

वापी	नटी	सखी
नारी	पुत्री	कुमारी
दासी	स्थाली	गौरी
नगरी	जननी	चालनी
पुरी	मार्जन	मही
पितामही	पौत्री	देवी

ईकारान्त स्त्री शब्द

प्रथम	स्त्री	स्त्रियौ	स्त्रियः
द्वितीया	स्त्रियम्	,,	स्त्रियः
तृतीया	स्त्रिया	स्त्रीभ्यां	स्त्रीभिः
चतुर्थी	स्त्रियै	,,	स्त्रीभ्यः
पंचमी	स्त्रिया	,,	,,
षष्ठी	,,	स्त्रियोः	स्त्रीणाम्
सप्तमी	स्त्रि	,,	स्त्रीषु
संबोधन	स्त्रिया	स्त्रियौ	स्त्रियः

अनुवाद

तुम्हारी बुद्धि बड़ी प्रखर है ।
सम्पत्तियां बादलों की छाया है ।
स्त्रियां समाज की शोभा हैं ।
इस बावली में कमल खिले हैं ।
नटी मंच पर अभिनय कर चुकी हैं ।
गौरी को शंकर ने अपना (अभिनीतवती) रूप दिखाया ।
कुमारी साक्षात् दुर्गारूप होती है ।
हे देवि, मेरे दोषों का ध्यान न कर ।
देवी का विश्वास पंजाबी लोगों को है ।
उसकी सहचरी बड़े अच्छे स्वभाव की है ।
नारी का जीवन करुण-कहानी है ।

ईकारान्त श्री शब्द

प्रथमा	श्री	श्रियौ	श्रियः
द्वितीया	श्रियम्	,,	श्रियः
तृतीया	श्रिया	श्रीभ्यां	श्रीभिः
चतुर्थी	श्रियै-श्रिये	,,	श्रीभ्यः
पंचमी	श्रिया-श्रियः	,,	,,
षष्ठी	,, ,,	श्रियोः	श्रीणाम्-श्रियाम्
सप्तमी	श्रियि-श्रियाम	,,	श्रीषु
संबोधन	श्रि !	श्रियौ	श्रियः

इसी प्रकार धी आदि शब्द हैं।

उकारान्त धेनु शब्द

प्रथमा	धेनुः	धेनू	धेनवः
द्वितीया	धेनुम	,,	धेनूः
तृतीया	धेन्वा	धेनुभ्यां	धेनुभिः
चतुर्थी	धेन्वै-धनेवे	,,	धेनुभ्यः
पंचमी	धेन्वाः-धेनो	,,	,,
षष्ठी	,, ,,	धेन्वोः	धेनूनाम
सप्तमी	धेन्वां-धैनौ	,,	धेनुषु
संबोधन	धेनो	धेनू	धेनवः

इसी प्रकार तनु, रज्जु, रेणु, आदि शब्द हैं।

ऊकारान्त वधू शब्द

प्रथमा	वधूः	वध्वौ	वध्वः
द्वितीया	वधूम	,,	वधूः

तृतीया	बध्वा	वधूभ्यां	वधूभिः
चतुर्थी	वध्वै	,,	वधूभ्यः
पंचमी	वध्वाः	,,	,,
षष्ठी	,,	वध्वोः	वधूनाम्
सप्तमी	वध्वाम्	,,	बधूषु
संबोधन	वधु !	वध्वौ	वध्व :

एवं श्वश्रू चमू आदि शब्द हैं।

तृकारन्त मातृ शब्द

प्रथमा	माता	मातरौ	मातरः
द्वितीया	मातरम	,,	मातृः
तृतीया	मात्रा	मातृभ्यां	मातृभिः
चतुर्थी	मात्रे	,,	मातृभ्यः
पंचमी	मातुः	,,	,,
षष्ठी	,,	मात्रो	मातृणाम
सप्तमी	मातरि	,,	मातृषु
संबोधन	मातः	मातरो	मातरः

इसी प्रकार स्वसृ आदि शब्द हैं।

ओकारान्त गो (गाय) शब्द

प्रथमा	गौः	गावौ	गावः
द्वितीया	गाम्	,,	गाः
तृतीया	गवा	गोभ्यां	गोभिः
चतुर्थी	गवे	,,	गोभ्यः
पंचमी	गोः	,,	,,

षष्ठी	,,	गवोः	गवाम्
सप्तमी	गवि	,,	गोषु
सं०	गौ	गावौ	गाव

अनुवाद

गायें हमारी प्रत्यक्ष मातायें हैं।
मेरे आगे पीछे (अगतः पश्चात्) गायें रहें।
उसकी सास तीर्थयात्रा के लिये गई।
लक्ष्मी को उदासीन लोग नहीं चाहते।
उसकी बहू बड़ी शिक्षिता है।
गाय के लिये यह अन्न है।
बहुओं का स्वभाव शान्त नहीं होता।
यह रस्सी बहुत पक्की है।
मेरी माता ने मेरे लिये अनेकों कष्ट सहन किये।
मेरी दादी ने असहाय दशा में भी घर की प्रतिष्ठा बढ़ाई।
बहुएं सासों की सेवा करें।

औकारान्त नौ शब्द

प्र०	नौ	नावौ	नावः।
द्वि०	नावम्	,,	,,
तृ०	नावा	नौभ्याम्	नौभिः
च०	नावे	,,	नौभ्यः
पं०	नावः	,,	,,
ष०	,,	नावोः	नावाम्

स०	नावि	नावोः	नौषु
सं०	नौः	नावौ	नावः ।

अनुवाद

१ यह नाव पुरानी है । इस नदी में बहुत सी नावें चल रही हैं ।
यह नाव बड़ी विशाल है ।
राम नाव के द्वारा गंगा पार हुए ।
नाव में कौन २ सा व्यक्ति बैठा है ।
आन्धी (वात्या) से नावें डूब गईं ।
इसनाविक की बुद्धि कुशल है ।
यह लकड़ी नावों के लिये है ।

२ शुद्ध करो :—

भर्तीन्,	भात्रणा,	रचसि,	धेन्वौ,
वधने,	स्त्रीन्,	स्त्रिये,	भूभ्यौ ।

अजन्त नपुंसक लिंग प्रकरणम्

अकारान्त ज्ञान शब्द

प्र०	ज्ञानम्	ज्ञाने	ज्ञानानि
द्वि०	,,	,,	,,
तृ०	ज्ञानेन	ज्ञानाभ्यां	ज्ञानैः
च०	ज्ञानाय	,,	ज्ञानेभ्यः ।
पं०	ज्ञानात्	,,	,,
ष०	ज्ञानस्य	ज्ञानयोः	ज्ञानानाम्
स०	ज्ञाने	,,	ज्ञानेषु
सं०	ज्ञान	ज्ञाने	ज्ञानानि

इसी प्रकार निम्न-लिखित शब्द हैं

रत्न	नेत्र	ध्यान	गृह
विष	ताम्र	पुष्प	सत्य
रजत	हिम	स्तेय	वचन
नक्षत्र	रक्त	जल	उद्यान
कमल	गीत	वस्त्र	पाप
पुण्य	भूषण	कार्य	नवनीत
तीर	अम्बर	वैर	बल
नयन	लक्षण	शयन	सुख

दुःख इत्यादि।

इकारान्त दधि शब्द

प्र०	दधि	दधिनी	दधीनि
द्वि	,,	,,	,,
तृ०	दध्ना	दधिभ्यां	दधिभिः।
च०	दध्ने	,,	दधिभ्यः
पं०	दध्नः	,,	,,
ष०	,,	दध्नोः	दध्नाम्
सं०	दधि-दधे	दधिनी	दधीनि।

इसी प्रकार अक्षि, सक्थि, अस्थि शब्द होते हैं

इकारान्त वारि शब्द

प्र०	वारि	वारिणी	वारीणि
द्वि०	,,	,,	,,
तृ०	वारिणा	वारिभ्यां	वारिभिः

च०	वारिणे	,,	वारिभ्यः
पं०	वारिणः	,,	,,
ष०	,,	वारिणोः	वारीणाम
सं०	वारिणि	,,	वारिषु
सं०	वारि-वारे	वारिणी	वारीणि

उकारान्त अम्बु (जल) शब्द

प्र०	अम्बु	अम्बुनी	अम्बूनि
द्वि	,,	,,	,,
तृ०	अम्बुना	अम्बुभ्यां	अम्बुभिः।
च०	अम्बुने	,,	अम्बुभ्यः।
पं०	अम्बुनः	,,	,,
ष०	,,	अम्बुनोः	अम्बूनाम्
स०	अम्बुनि	,,	अम्बुषु
सं०	अम्बु-अम्बो	अम्बुनि	अम्बूनि।

ऋकारान्त दातृ शब्द

प्र०	दातृ	दातृणी	दातृनि
द्वि०	,,	,,	,,
तृ०	दातृणा-दात्रा	दातृभ्यां	दातृभिः
च०	दातृणेः-दात्रे	,,	दातृभ्यः
पं०	दातृणः-दातुः	,,	,,
ष०	,,	दात्रोः	दातृणाम
स०	दातृणि-दातरि	,,	दातृषु
सं०	दातः-दातृ	दातृणी	दातृनि।

अभ्यास

१ संस्कृत में अनुवाद करो :—

मुझे मधु प्रिय है।

यह पानी बड़ा तेज बह रहा है।

आंखे परमात्मा का बड़ा भारी वरदान हैं।

नक्षत्र प्रकाश देने वाले होते हैं।

रत्नों से राजा लोग अपने आपको अलंकृत करते थे (अलंकुर्वन्ति स्म)।

वस्त्रों से मानवों की शोभा बढ़ती है।

ये फल बड़े मधुर हैं।

ज्ञान के बिना मनुष्य पशु के समान है।

धन के बिना कोई भी किसी का (कस्यचित्) बन्धु नहीं है।

पानी के बिना प्यास नहीं बुझती।

मधु देवताओं की बलि है।

२ दातृ शब्द का पुलिंग और स्त्रीलिंग में अन्तर स्पष्ट करो।

३ वारि और दधि शब्दों में भिन्नता स्पष्ट करो।

४ निम्नलिखित शब्दों के विभक्ति वचन दिखाइये :—

दध्ना, मधुनि, दधीनि, वारिणे, रत्नम्।

फले, अक्ष्णे, जले दातृषु, अम्बु।

———

सर्वनाम

सर्वनाम (Pronouns) वे शब्द हैं जो संज्ञा के स्थान पर आते हैं, जिस से कि किसी संज्ञा को बार २ दुहराना न पड़े। किसी संज्ञा का कई बार एक साथ प्रयोग अशोभन सा लगता है यथा—

श्री कृष्णः मथुरायां उत्पन्नः श्री कृष्णः गोकुले नन्दगृहे लालितः संवर्धितश्च ।

इस वाक्य में कितनी कुरूपता है यदि इस प्रकार हो—

सः गोकुले नन्दगृहे लालितः संवर्धितश्च

तो वाक्य सुनने में अच्छा हो जाता है।

सर्वनाम शब्द वेदों से आरम्भ हुए हैं और इनकी संख्या मुख्य रूप से दस है।

१. अस्मद् (मैं), २. युष्मद् (तू), तत् (वह), ४. यत् (जो), ५. किम् (क्या), ६. इदम (यह), ७. एतद् (यह), ८. अदस् (वह), ९. भवत् (आप), १०. स्व (अपना)।

सर्वनाम ६ प्रकार के हैं।

१ पुरुषवाचक सर्वनाम :—जो किसी प्रथम, मध्यम, उत्तम को बताते हैं यथा—अहम् (मैं) त्वं (तू) सः (वह)।

२ निज वाचक :—जिन से किसी का अपना आप सूचित होता है। यथा—स्वयमेव (अपने आप) त्वं स्वयमेव पठानि।

३ निश्चय वाचक :—जो सर्वनाम निश्चय कराते हैं। यथा—सः बालः पटुरेवास्ति (वह लड़का चतुर ही है। इयं मे पुस्ताकम् (यह मेरी पुस्तक है)।

४ अनिश्चय वाचक सर्वनाम :—जो निश्चय को सूचित न करें। यथा—कोऽपि (कोई) कश्चित्, किंचित् (कुछ) कोऽपि पठति (कोई पढ़ता है)

५ सम्बन्ध वाचक :—जो सम्बन्ध बतलाये। यथा यः सः। यः पठति सः उत्तीर्णो भवति (जो पढ़ता है वह सफल होता है।

६ प्रश्न वाचक :—जिन सर्वनामों से किसी प्रश्न का बोध होता है। यथा—कः आगच्छति (कौन आता है) किमिदम् (यह क्या है)।

अकारान्त सर्व शब्द पुलिङ्ग।

प्रथम	सर्वः	सर्वौ	सर्वे
द्वि०	सर्वम्	,,	सर्वान्
तृ०	सर्वेण	सर्वाभ्यां	सर्वैः

च०	सर्वस्मै	,,	सर्वेभ्यः
पं०	सर्वस्मत्	सैर्वयोः	सर्वेषाम्
ष०	सर्वस्य	,,	,,
स०	सर्वस्मिन्	सर्वयोः	सर्वेषु

संबोधन रूप सर्वनामों में नहीं होता ।

सर्व स्त्रीलिंग

प्र०	सर्वा	सर्वे	सर्वाः
द्वि०	सर्वाम्	,,	,,
तृ०	सर्वया	सर्वाभ्यां	सर्वाभिः
च०	सर्वस्यै	,,	सर्वाभ्यः
पं०	सर्वस्याः	,,	,,
ष०	,,	सर्वयोः	सर्वासाम्
स०	सर्वस्याम	,,	सर्वासु

सर्व नपुंसक लिंग

प्र०	सर्वम	सर्वे	मर्वाणि
द्वि०	,,	,,	,,

(शेष पुलिंग की भांति ।)

पूर्व शब्द पुलिंग

प्र०	पूर्वः	पूर्वौ	पूर्वे-पूर्वाः
द्वि०	पूर्वम	,,	पूर्वान्
तृ०	पूर्वेण	पूर्वाभ्यां	पूर्वैः
च०	पूर्वस्मै	,,	पूर्वेभ्यः

पं०	पूर्वस्मात्	,,	,,
ष०	पूर्वस्य	पूर्वयोः	पूर्वेषाम्
स०	पूर्वस्मिन्-पूर्वे	,,	पूर्वेषु

पूर्व स्त्रीलिंग

प्र०	पूर्वा	पूर्वे	पूर्वाः
द्वि०	पूर्वाम्	,,	,,
तृ०	पूर्वया	पूर्वाभ्या	पूर्वाभिः
च०	पूर्वस्यै	,,	पूर्वाभ्यः
पं०	पूर्वस्याः-पूर्वायाः	,,	,,
ष०	,,	पूर्वयोः	पूर्वासाम्
स०	पूर्वस्याम्-पूर्वायाम्	,,	पूर्वासु

हलन्त एतद् शब्द (यह) पुलिंग

प्र०	एषः	एतौ	एते
द्वि०	एतम्-एनम्	एतौ-एनौ	एतान्-एनान्
तृ०	एतेन-एनेन	एताभ्यां	एतैः
च०	एतस्मै	,,	एतेभ्यः
पं०	एतस्मात्	,,	,,
ष०	एतस्य	एतयोः-एनयोः	एतेषाम्
स०	एतस्मिन्	,, ,,	एतेषु

एतद् स्त्री

प्र०	एषा	एते	एताः
द्वि०	एताम्-एनाम्	एते-एने	एताः-एनाः
तृ०	एतया-एनया	एताभ्यां	एताभिः

च०	एतस्यै	,,	एताभ्य:
पं०	एतस्या:	,,	,,
ष०	एतस्या	एतयो:-एनयो:	एतासाम
स०	एतस्याम्	,, ,,	एतासु

नपुंसकलिंग एतद्

प्र०	एतत्-द्	एते	एतानि
द्वि०	,,	,,	,,

(शेष पुलिग की भांति है।)

तद् शब्द पुलिंग (वह)

प्र०	स:	तौ	ते
द्वि०	तम्	,,	तान्
तृ०	तेन	ताभ्यां	तै:
च०	तस्मै	,,	तेभ्य:
पं०	तस्मात्	,,	,,
ष०	तस्य	तयो:	तेषाम्
स०	तस्मिन्	,,	तेषु

तद् स्त्री

प्र०	सा	ते	ता:
द्वि०	ताम्	,,	,,
तृ०	तया	ताभ्यां	ताभि:
च०	तस्यै	,,	ताभ्य:
पं०	तस्या:	,,	,,

ष०	,,	तयोः	तासाम्
स०	तस्याम्	,,	तासु

तद् नपुंसक लिंग

प्र०	तत्-द्	ते	तानि
द्वि०	,,	,,	,,

(शेष पुलिंग के समान है।)

यत् (जो) पुलिंग

प्र०	यः	यौ	ये
द्वि०	यम्	,,	यन्
तृ०	येन	याभ्यां	यैः
च०	यस्मै	,,	येभ्यः
पं०	यस्मात्	,,	,,
ष०	यस्य	ययोः	येषाम
स०	यस्मिन्	,,	येषु

यत् स्त्रीलिंग

प्र०	या	ये	याः
द्वि०	याम्	,,	,,
तृ०	यया	याभ्यां	याभिः
च०	यस्यै	,,	याभ्यः
पं०	यस्याः	,,	,,
ष०	,,	ययोः	यासाम
स०	यस्याम्	,,	यासु

यत् नपुंसक लिंग

प्र०	यत्	ये	यानि
द्वि०	,,	,,	,,

(शेष पुलिंग की भांति ।)

किम् (कौन)

प्र०	कः	कौ	के
द्वि०	कम्	,,	कान्
तृ०	केन	काभ्याम्	कैः
च०	कस्मै	,,	केभ्यः
पं०	कस्मात्	,,	,,
ष०	कस्य	कयोः	केषाम्
स०	कस्मिन्	,,	केषु

स्त्रीलिंग किम्

प्र०	का	के	काः
द्वि०	काम्	,,	,,
तृ०	कया	काभ्यां	काभिः
च०	कस्यै	,,	काभ्यः
पं०	कस्याः	,,	,,
ष०	,,	कयोः	कासाम्
स०	कस्याम्	,,	कासु

नपुंसकलिंग किम्

प्र०	किम	के	कानि
द्वि०	,,	,,	,,

(शेष पुलिंग की भांति)

इदम् (यह) पुलिंग

प्र०	अयं	इमौ	इमे
द्वि०	इम	इमौ-एनौ	इमान्
तृ०	अनेन	आभ्यां	एभि:
च०	अस्मै	,,	एभ्य:
पं०	अस्मात्	,,	,,
ष०	अस्य	अनयो:-एनयो:	एषाम्
स०	अस्मिन्	,, ,,	एषु

इदम् स्त्रीलिंग

प्र०	इयं	इमे	इमा:
द्वि०	इमाम-एनाम	इमे-एने	इमा:-एना:
तृ०	अनया	आभ्यां	आभि:
च०	अस्यै	,,	आभ्य:
पं०	अस्या:	आभ्यां	,,
ष०	,,	अनयो:-एनयो:	आसाम्
स०	अस्यां	,, ,,	आसु

इदम् नपुंसलिंग

प्र०	इदम	इमे	इमानि
द्वि०	,,	,,	,,

(शेष पुलिंग की भांति)

युष्मद् (तू, तुम) तीनों में एक समान

प्र०	त्वम्	युवाम्	यूयम्
द्वि०	त्वाम्-त्वा	,, वाम्	युष्मान्-वः
तृ०	त्वया	युवाभ्यां	युष्माभिः
च०	तुभ्यं-ते	,, वाम्	युष्मभ्यम्-वः
पं०	त्वत्	,,	युष्मत्
ष०	तव-ते	युवयोः वाम्	युष्माकम्-वः
स०	त्वयि	,,	युष्मासु

अस्मद् (मैं-हम)

प्र०	अहं	आवां	वयम्
द्वि०	माम्-मा	,, नौ	अस्मान्-नः
तृ०	मया	आवाभ्यां	अस्माभिः
च०	मह्यं-मे	,, नौ	अस्मभ्यम्-नः
पं०	मत्	,,	अस्मत्
ष०	मम-मे	आवयोः नौ	अस्माकम्-नः
स०	मयि	,,	अस्मासु

अभ्यास

१ संस्कृत में अनुवाद करो :—

सब लोग कहां जाते हैं ?

पहले समय से यह समय अच्छा है ।

किसके लिये ये फल हैं ?

जो पढ़ता है, वह सफल होता है ।

यह कन्या बड़ी बुद्धिमती है।

वह लड़का मेरा शिष्य है।

तू हमारे लिये दुःख न उठा (उद्वहे)।

जो फल मधुर होते हैं, उन पर भंवरे मंडराते हैं।

हम सबकी परीक्षा होने वाली है।

२ शुद्ध करो।

सर्वानाम्, सर्वाय, यात्, एशः, कसमात्, त्वेभ्यः, तवस्य, सर्वाणी।

३ तीन लिंगों में कौन-कौन से सर्वनाम शब्द समान हैं लिखो।

४ सर्वनामों की आवश्यकता पर लिखिये।

५ रिक्त स्थान भरो :—

——सः अवदत्, सः——आसीत् एने—— कुत्र——।

अदस् (वह) पुलिंग

प्र०	असौ	अमू	अमी।
द्वि०	अमुम्	,,	अमून्।
तृ०	अमुना	अमूभ्यां	अमीभिः।
च०	अमुष्मै	,,	अमीभ्यः।
पं०	अमुष्मात्	,,	,,
ष०	अमुष्य	अमुयोः	अमीषाम्
स०	अमुष्मिन्	,,	अमीषु

अदस् स्त्री

प्र०	असौ	अमू	अमूः।
द्वि	अमुम्	,,	,,

तृ०	अमुया	अमूभ्याम्	अमूभिः।
च०	अमुष्यै	,,	अमूभ्यः
पं०	अमुष्याः	,,	,,
ष०	,,	अमुयोः	अमूषाम।
स०	अमुष्याम	,,	अमूषु

नपुंसकलिंग अदस्

प्र०	अदः	अमू	अमूनि
द्वि०	,,	,,	,,

शेष पुलिंगवत्।

भवत् (आप)

प्र०	भवान्	भवन्तौ	भवन्तः।
द्वि०	भवन्तम्	,,	भवतः।
तृ०	भवता	भवद्भ्याम्	भवद्भिः।
च०	भवते	,,	भवद्भ्यः।
पं०	भवतः	,,	,,
ष०	,,	भवतोः	भवताम्
स०	भवति	,,	भवत्सु

भवती स्त्री०

प्र०	भवती	भवत्यौ	भवत्यः।
द्वि०	भवतीम्	,,	भवतीः।
तृ०	भवत्या	भवतीभ्यां	भवतीभिः।
च०	भवत्यै	,,	भवतीभ्यः।
पं०	भवत्याः	,,	,,

ष०	,,	भवत्योः	भवतीमाम्
स०	भत्याम्	,,	भवतीषु

अभ्यास

१ अदस् पुलिंग चतुर्थविभक्ति स्त्रीलिंग में षष्ठी विभक्ति और नपुंसक लिंग में प्रथमा विभक्ति के रूप लिखो।

२ भवती शब्द के ४—७ में रूप लिखो।

हलन्त पुलिंग प्रकरणम्

लिह् शब्द पु० (चाटने वाला)

प्र० सं०	लिट्-ड्	लिहौ	लिहः।
द्वि०	लिहम्	,,	लिहः।
तृ०	लिहा	लिड्भ्यां	लिड्भिः।
च०	लिहे	,,	लिड्भ्यः
पं०	लिहः	,,	,,
ष०	,,	लिहोः	लिहाम्।
स०	लिहि	,,	लिट्त्सु-लिट्सु।

दुह् (दूध निकालने वाला)

प्र० सं०	धुक्-ग	दुहौ	दुहः।
द्वि०	दुहम्	,,	,,
तृ०	दुहा	धुग्भ्यां	धुग्भिः।
च०	दुहे	,,	धुग्भ्यः।
पं०	दुहः	,,	,,
ष०	,,	दुहोः	दुहाम्।

स०	दुहि	,,	धुत्तु

द्रुह्

प्र० सं०	ध्रुक्-ग् ध्रट्-ड्	द्रुहौ	द्रुहः ।
	द्रुहम्	,,	,,
तृ० द्रुहा	ध्रुग्भ्यां-ध्रुड्भ्याम्		ध्रुग्भिः-ध्रुड्भिः ।
च० द्रुहे	,,	,,	ध्रुग्भ्यः ध्रुड्भ्यः ।
पं० द्रुहः	,,	,,	,, ,,
ष०	,,	द्रुहो	द्रुहाम्
सप्तमी द्रुहि		,,	ध्रुत्तु-ध्रुट्त्सु-धुट्सु ।

चन्द्रमस्

प्र०	चन्द्रमाः	चन्द्रमसौ	चन्द्रमसः ।
द्वि०	चन्द्रमसम्	,,	,,
तृ०	चन्द्रमसा	चन्द्रमोभ्याम	चन्द्रमोभिः
च०	चन्द्रमसे	,,	चन्द्रमोभ्यः
पं०	चन्द्रमसः	,,	,,
ष०	,,	चन्द्रमसोः	चन्द्रमसाम्
स०	चन्द्रमसि	,,	चन्द्रमस्सु
सं०	हे चन्द्रमः	हे चन्द्रमसौ	हे चन्द्रमस

राजन् शब्द

प्र०	राजा	राजानौ	राजानः ।
सं०	हे राजन्	,,	,,
द्वि०	राजानम्	,,	राज्ञः

तृ०	राज्ञा	राजभ्यां	राजभिः ।
च०	राज्ञे	राजभ्यां	राजभ्यः
पं०	राज्ञः	,,	,,
ष०	,,	राज्ञो	राज्ञाम्
सं०	राज्ञि-राजनि	,,	राजसु

यज्वन् (यज्ञ करने वाला)

प्र०	यज्वा	यज्वानौ	यज्वानः ।
सं०	हे यज्वन्	,,	,,
द्वि०	यज्वानम्	,,	यज्वनः ।
तृ०	यज्वना	यज्वभ्याम	यज्वभिः ।
च०	यज्वने	,,	यज्वभ्यः ।
पं०	यज्वनः	,,	,,
ष०	,,	यज्वनोः	यज्वनाम्
स०	यज्वनि	,,	यज्वसु

वृत्रहन् (इन्द्र)

प्र०	वृत्रहा	वृत्रहणौ	वृत्रहणः
सं०	वृत्रहन्	,,	,,
द्वि०	वृत्रहणम	,,	वृत्रघ्नः
तृ०	वृत्रघ्ना	वृत्रहभ्यां	वृत्रहभिः ।
च०	वृत्रघ्ने	,,	वृत्रहभ्यः
पं०	वृत्रघ्नः	वृत्रह भ्याम्	वृत्रहभ्यः ।
ष०	,,	वृत्रघ्नोः	वृत्रघ्नाम् ।
स०	वृत्रघ्नि	,,	वृत्रहसु

युवन् शब्द

प्र०	युवा	युवानौ	युवानः ।
सं०	हे युवन्	,,	,,
द्वि०	युवानम्	,,	यूनः ।
तृ०	यूना	युवभ्यां	युवभिः ।
च०	यूने	,,	युवभ्यः ।
पं०	यूनः	,,	,,
ष०	,,	यूनोः	यूनाम
स०	यूनि	,,	युवसु

इसी प्रकार श्वन् मघवन् शब्द है

पथित् (मार्ग)

प्र० सं०	पंथा	पन्थानौ	पन्थानः ।
द्वि०	पन्थानन्	,,	पथः ।
तृ०	पथा	पथिभ्यां	पथिभिः ।
च०	पथे	,,	पथिभ्यः ।
पं०	पथः	,,	,,
ष०	,,	पथोः	पथाम्
स०	पथि	पथोः	पथिषु

इसी प्रकार मथित्, ऋमुत्तन् आदि शब्द हैं

मानिन् शब्द

प्र०	मानी	मानिनौ	मानिनः ।
सं०	मानिन्	,,	,,

द्वि०	मानिनम्	,,	,,
तृ०	मानिना	मानिभ्याम्	मानिभिः।
च०	मानिने	,,	मानिभ्यः।
पं०	मानिनः	,,	,,
ष०	,,	मानिनोः	मानिनाम्।
स०	मानिनि	,,	मानिषु

इसी प्रकार गुणिन् प्राणिन् आदि हैं

श्रीमत् शब्द

प्र०	श्रीमान्	श्रीमन्तौ	श्रीमन्तः।
सं०	श्रीमन्	,,	,,
द्वि०	श्रीमन्तम्	,,	श्रीमतः।
तृ०	श्रीमता	श्रीमद्भ्याम्	श्रीमद्भिः।
च०	श्रीमते	,,	श्रीमद्भ्यः
पं०	श्रीमतः	,,	,,
ष०	श्रीमतः	श्रीमतोः	श्रीमताम्
स०	श्रीमति	श्रीमतोः	श्रीमत्सु।

विद्वस्

प्र०	विद्वान्	विद्वांसौ	विद्वांसः।
सं०	हेविद्वन्	,,	,,
द्वि०	विद्वांसम्	,,	विदुषः
तृ०	विदुषा	विद्वद्भ्यां	विद्वद्भिः।
च०	विदुषे	,,	विद्वद्भ्यः।
पं०	विदुषः	,,	,,

ष०	,,	विदुषोः	विदुषाम्
स०	विदुषि	,,	विद्वत्सु

महीयस् दो में बड़ा

प्र०	महीयान	महीयांसौ	महीयांसः
सं०	महीयन्	,,	,,
द्वि०	महीयांसम्	,,	महीयसः
तृ०	महीयसा	महीयोभ्याम	महीयोभिः।
च०	महीयसे	,,	महीयोभ्यः।
पं०	महीयसः	,,	,,
ष०	,,	महीयसोः	महीयसाम्
स०	महीयसि	,,	महीयस्सु।

इसी प्रकार प्रेयस्, श्रेयस् आदि हैं।

महत् शब्द

प्र०	महान्	महान्तौ	महान्तः।
सं०	महन्	,,	,,
द्वि	महान्तम्	,,	महतः।
तृ०	महता	महद्भ्यां	महद्भिः।
च०	महते	,,	महद्भ्यः।
पं०	महतः	,,	,,
ष०	,,	महतोः	महताम
सप्तमी	महति	,,	महत्सु

इसी प्रकार पठत् धावत् आदि शत्रन्त पुलिंग शब्द हैं। इन की प्रथम दो विभक्तियों के पांच रूप इससे नहीं मिलते। द्वितीया बहुवचन समान होता है।

पुमस् शब्द

प्र०	पुमान्	पुमांसौ	पुमांसः।
सं०	पुमन्	,,	,,
द्वि०	पुमांसम्	,,	पुंसः
तृ०	पुंसा	पुंभ्याम्	पुंभिः।
च०	पुंसे	,,	पुंभ्यः।
पं०	पुंसः	,,	,,
ष०	,,	पुंसोः	पुंसाम्
स०	पुंसि	,,	पुंसु।

यादृश् (जैसा)

प्र० सं०	यादृक्-ग्	यादृशौ	यादृशः।
द्वि०	यादृशम्	,,	,,
तृतीया	यादृशा	यादृग्भ्याम्	यादृग्भिः।
च०	यादृशे	,,	यादृग्भ्यः।
पं०	यादृशः	,,	,,
ष०	,,	यादृशोः	यादृशाम्
स०	यादृशि	,,	यादृक्षु

इसी प्रकार की दृश्, ईदृश् आदि कई शब्द हैं।

अभ्यास

१ संस्कृत में अनुवाद करो :—
राजा लोग युद्ध करते हैं।
इन्द्र मेघों का राजा है।
बड़े लोग स्वभाव से ही दयालु होते हैं।
दौड़ते हुए मुझे पैर में चोट आ गई। (प्रहार)
चन्द्रमा रात्रि का स्वामी है।
यह मार्ग कहां २ जाता है।
जैसा मनुष्य हो वैसा ही उसका स्वभाव भी होता है।
द्रोह करने वाले कभी अच्छी बात नहीं सोचते।
गोप गायें सन्ध्या के समय दोहता है।
कुत्ते के लिये धिक्कार कोई वस्तु नहीं (काचित्)।
विद्वान् लोग सदा नम्र होते हैं।
बुद्धिमान् लोग विचार कर कार्य करते हैं।
जाते हुए कभी मनुष्य गिर भी पड़ता है।
मुझे वह वस्तु उससे प्रिय है (प्रेयस्)।
कोई राजा आखेट करने के लिये बन गया।
मनुष्य सदा अपने कर्मों का फल भोगता है।
ब्रह्मा सृष्टि का निर्माण करता है। (रचयति)
बड़े छोटे का संग शोभा नहीं देता।
युवा लोग संयम से बाहर न हों।
उस पुरुष को मैं श्रद्धाञ्जलि अर्पण करता हूँ।

२ राजन् शब्द के सातवीं विभक्ति के रूप लिखो।

३ निम्न लिखित शब्दों के विभक्ति, वचन लिखो :—
वृत्रघ्नः, महन्, प्रत्तु, धुटत्सु, यूने, शुनः विद्वत्सु, पुंसः गच्छतः, महीयोभिः ।

४ शुद्ध करो :—
राजेन, ब्रह्मणाय, युवः, शुनान् । तादृशान्, पथेन महीयानम राजस्य, पुंसानाम् ।

५ श्वन् कीदृश्, प्रेयस् के रूप सब विभक्तियों के बहुवचन में लिखो ।

— — —

हलन्त स्त्रीलिंग प्रकरणम्

उपानह् (जूता)

प्र० सं०	उपानन्-द्	उपानहौ	उपानहः ।
द्वि०	उपानहम्	,,	,,
तृ०	उपानहा	उयानद्भ्याम्	उपानद्भिः ।
च०	उपानहे	,,	उपानद्भ्यः ।
पं०	उपानहः	,,	,,
ष०	,,	उपानहोः	उपानहाम् ।
स०	उपानहि	,,	उपानत्सु ।

गिर्-वाणी (शब्द)

प्र० सं०	गीः	गिरौ	गिरः ।
द्वि०	गिरम्	,,	,,
तृ०	गिरा	गीर्भ्याम्	गीर्भिः ।
च०	गिरे	,,	गीर्भ्यः ।

पं०	गिरः	,,	,,
ष०	,,	गिरोः	गिराम्
स०	गिरि	,,	गीर्षु

स्रज् (माला)

प्र० सं०	स्रक्-ग्	स्रजौ	स्रजः।
द्वि०	स्रजम्	,,	,,
तृ०	स्रजा	स्रग्भ्याम्	स्रग्भिः।
च०	स्रजे	,,	स्रग्भ्यः।
पं०	स्रजः	,,	,,
ष०	,,	स्रजोः	स्रजाम।
स०	स्रजि	,,	स्रक्षु।

इसी प्रकार रुज् आदि शब्द हैं।

वाच् (वाणी)

प्र० सं०	वाक्-ग्	वाचौ	वाचः।
द्वि०	वाचम्	,,	,,
तृ०	वाचा	वाग्भ्या	वाग्भिः।
च०	वाचे	,,	वाग्भ्यः।
पं०	वाचः	,,	,,
ष०	,,	वाचोः	वाचाम।
स०	वाचि	,,	वाक्षु

इसी प्रकार त्वच् आदि शब्द हैं।

अप् शब्द सदा बहुवचनाना है

	बहुवचन
प्र०	आपः
द्वि०	अपः
तृ०	अद्भिः
च०	अद्भ्यः।
पं०	,,
ष०	अपाम्
स०	अप्सु

दिश् (दिशा)

प्र० सं०	दिक्-ग्	दिशौ	दिशः
द्वि०	दिशम्	,,	,,
तृ०	दिशा	दिग्भ्याम्	दिग्भिः
च०	दिशे	,,	दिग्भ्यः।
पं०	दिशः	,,	,,
ष०	,,	दिशोः	दिशाम्।
स०	दिशि	,,	दिक्षु।

आशीष् शब्द

प्र० सं०	आशीः	आशिषौ	आशिषः।
द्वि	आशिषम्	,,	आशिषः
तृ०	आशिषा	आशीर्भ्यां	आशीभिः
च०	आशिषे	आशीर्भ्याम्	आशीर्भ्यः।
पं०	आशिषः	,,	,,

ष०	,,	आशिषोः	आशिषाम्।
स०	आशिषि	,,	आशीःषु।

अभ्यास

१ संस्कृत में अनुवाद करो :—
जल हमारे लिये कल्याण कारी हो (शिवः)।
मेरे जूते पैरों को काट रहे हैं।
यह पूर्व दिशा में एक विशाल मन्दिर है।
ये मालायें किन मालियों ने बनाई हैं।
उसकी वाणी में बड़ी शक्ति है।

२ शुद्ध करो :—
वाचानाम्, स्रजान, दिशेन, उपानहाय, आशिषस्य,

३ स्रज् शब्द चतुर्थी विभक्ति के और आशिष्, वाच् शब्दों की दूसरी षष्ठी विभक्ति के रूप लिखो।

———

अथ हलन्त नपुंसक लिंग प्रकरणम्

स्वनुडुह् शब्द

प्र० सं०	स्वनुडुत्–स्वनुडुद्	स्वनडुही	स्वनड्वांहि
द्वि	,, ,,	,,	,,
तृ०	स्वनुडुहा	स्वनुडुद्भ्यां	स्वनुडुद्भिः ।
च०	स्वनुडुहे	,,	स्वनुडुद्भ्यः ।
पं०	स्वनुडुहः	,,	,,
ष०	,,	स्वनुडुहोः	स्वनुडुहाम
स०	स्वनुडुहः	,,	स्वनुडुत्सु ।

नामन् शब्द

प्र०	नाम	नामनी–नाम्नी	नामानि ।
द्वि०	,,	,, ,,	,,
सं०	नामन्	,, ,,	,,
तृ०	नाम्ना	नामभ्याम्	नामभिः ।
च०	नाम्ने	,,	नामभ्यः ।

पं०	नाम्नः	,,	नामभ्यः ।
ष०	,,	नाम्नोः	नाम्नाम् ।

इसी प्रकार प्रेमन्, व्योमन्, धामन् सामन् आदि शब्द हैं ।

ब्रह्मन् (निर्गुण ईश्वर)

प्र०	ब्रह्म	ब्रह्मणी	ब्रह्माणि
द्वि०	,,	,,	,,
सं०	हे ब्रह्मन्–हे ब्रह्म	,,	,,
तृ०	ब्रह्मणा	ब्रह्मभ्याम	ब्रह्मभिः ।
पं०	ब्रह्मणः	,,	,,
ष०	,,	ब्रह्मणयेः	ब्रह्मणाम्
स०	ब्रह्म	,,	ब्रह्मसु

अहन् शब्द (दिन)

प्र० सं०	अहः	अन्ही–अह्नानी	अह्नानि ।
द्वि०	,,	,, ,,	,,
तृ०	अह्ना	अहोभ्याम	अहोभिः
च०	अह्ने	,,	अहोभ्यः
पं०	अह्नः	,,	,,
ष०	,,	ओह्नः	अह्नाम्
स०	अह्नि	,,	अहःसु

स्नग्विन् (मालावाला)

प्र० सं०	स्रग्वि	स्रग्विणी	स्रग्वीणि
द्वि०	,,	,,	,,

तृ०	स्रग्विणा	स्रग्विभ्याम	स्रग्विभिः
च०	स्रग्विणे	,,	,,
पं०	स्रग्विणः	,,	,,
ष०	,,	स्रग्विणोः	स्रग्विणाम्
स०	स्रग्विणि	,,	स्रग्विषु

एवं वाग्मिन्, दण्डिन् आदि शब्द ।

तुदत् शब्द

प्र० सं०	तुदत्	तुदतन्ती	तुदन्ति
द्वि०	,,	,,	,,
तृ०	तुदता	तुदद्भ्यां	तुदद्भिः ।
च०	तुदते	,,	तुदद्भ्यः ।
पं०	तुदतः	,,	,,
ष०	,,	तुदतोः	तुदताम ।
स०	तुदति	,,	तुदत्सु ।

इसी प्रकार पचत् शृण्वत्, भात् , दीव्यत् , यकृत्, शकृत् आदि शब्द हैं ।

धनुष्

प्र० सं०	धनुः	धनुषी	धनूंषि ।
द्वि०	,,	,,	,,
तृ०	धनुषा	धनुर्भ्याम्	धनुर्भिः ।
च०	धनुषे	,,	धनुर्भ्यः ।
पं०	धनुषः	,,	,,

ष०	,,	धनुषोः	धनुषाम्
स०	धनुषि	,,	धनुःषु

इसी प्रकार चक्षुष् हविष् आदि शब्द हैं।

पयस् (जल)

प्र० सं०	पयः	पयसी	पयांसि।
द्वि०	,,	,,	,,
तृ०	पयसा	पयोभ्याम्	पयोभिः।
च०	पयसे	,,	पयोभ्यः।
पं०	पयसः	,,	,,
ष०	,,	पयसोः	पयसाम्
स०	पयसि	,,	पयस्सु

इसी तेजस्, श्रेयस् आदि शब्द हैं।

अभ्यास

१ कामन्, तेजस्, ददत् के सब विभक्तियों में रूप लिखो।

२ विभक्ति, वचन लिखो :—

स्रग्वि, नाम्नः, पयोभ्याम्, तेजः, ददती, धनु, हविषा, प्रेम्णि।

३ शुद्ध करो :—

नामस्य, धनुषम्, चक्षुषेन, ददान्ती।

४ संस्कृत में अनुवाद करो :—

लोग नाम पाने के लिये (प्राप्तुम्) यत्न करते हैं।

हम दो प्रातःकाल हवन करते हैं।

वीर धनुष पर वाण रखता है (संधत्ते)।

क्या तुम उसका नाम जानते हो ?
प्रेम संसार में सब में पाया जाता है।
कोई भी मनुष्य बिना नाम के नहीं होता।
दिन का समय बड़े संघर्ष का है।
राजा नदी के तट पर स्नान करता है।
वर्षा का दिन अन्धकारमय होता है।
वीर की शोभा धनुष से होती है।
सूर्य की शोभा अपने प्रकाश से है।
आहुति से आग की ज्वाला बढ़ती है। (हविषा)

तद्धित प्रत्यय प्रकरणम्

विशेषण तुलना—दो या अधिक में तुलना करने के लिये तरप, तमप् प्रत्यय, प्रयुक्त होते हैं। यथा मृदु—मृदुतरः—मृदुतमः। इसी प्रकार गुण वाचक—विशेषणों से समता करने में ईयस्, इष्ठन् प्रत्यय प्रयुक्त होते हैं।

उत्तरावस्था (दों में तुलना

उत्तमावस्था (सबतु)

गुरूः	गुरूतरः	गुरूतमः
लघुः	लघुतरः	लघुतमः।
	ईयस्	उष्ठन्

लघुः	(छोटा)	लघीयस्	लघिष्ठ
पटुः	(चतुर)	पटीयस्	पटिष्ठ
दूर	(दूर)	दवीयस्	दविष्ठ
वृद्ध	(बूढ़ा)	ज्यायस्–वर्षयिस्	ज्येष्ठ–वर्षिष्ठ

अन्तिक	(समीप)	नेदीयस्	नेदिष्ठ
दीर्घ	(लम्बा)	द्राघीयस्	द्राघिष्ठ
स्थूल	(मोटा)	स्थवीभस्	स्थविष्ठ
क्षुद्र	(तुच्छ)	क्षोदीयस्	क्षोदिष्ट
वाढ	अच्छा	साधीयस्	साधिष्ठ
स्थिर	पक्का	स्थेयस्	स्थेष्ठ
प्रिय		प्रेयस्	प्रेष्ठ
क्षिप्र	शीघ्र	क्षेपीयस्	क्षेपिष्ठ
अल्प	थोड़ा	अल्पीयस्	अल्यिष्ठ।
कृश	दुर्बल	क्रशीयस्	क्रशिष्ठ।
बलवान्		बलीयस्	बलिष्ठ।
युवन्		यवीयस्	यविष्ठ।
दृढ़		द्रढीयस्	द्रढिष्ठ।
महत्		महीयस्	महिष्ठ

अभ्यास

१ गुरु, मृदु, बहु शब्दों नर (प्) तम (प्) प्रत्यय दिखाइये।

२ स्थूल, कृश् महत् से ईयत् से ईयस्, इश्ठन् प्रत्यय लिखो।

३ तर, तम ईयस्, इष्ठन् का प्रयोग कहां २ होता है उदाहरण देकर लिखो ?

संस्कृत में अनुवाद करो

४ पंजाबी सब से अधिक धार्मिक हैं।
एक धनवान् से निर्धन सुखी है।
तुम उससे अच्छे हो।

तुम श्रेणी में सब से दुर्बल हो।
तुम पहले से मोटे होते जा रहे हो।
अण् अपत्यादि अर्थों में होता है यथा—
गणपतेरिदम्=गाणपतम्—आश्वपतम्। अश्वपत्यादिभ्य ण्य
प्रत्यय भी इसी अर्थ में होता है यथा—
दितेअपत्यं दैत्यः (दित्यादित्या०) अपत्य पौत्र प्रभृति गेय
यञ्—इञ् भी अपत्य अर्थ में होते हैं।
गर्गस्य गोत्रापत्यं गार्ग्यः (गर्गादिभ्यो यत्र्)
वात्स्यः। दक्षस्य अपत्यं दाक्षिः (अत इञ्) दाशरथिः,
मारुतिः।

अञ् (अपत्यार्थे) इक्ष्वाकोरपत्यम् इक्ष्वाकवः।
अण् (समूहार्थमें) गर्भिणीनां समूहो-गार्भिणम्। (तस्य समूहः
इन् (अस्यअस्त्रीति) गुणाः अस्य सन्तीति गुणी।
अण् (देशे अस्यास्त्रीति) उदुम्बराः सन्त्यस्मिन् देशे
इति औदुम्बरो देशः।

अनुवाद करो

यह नैवेद्य गणपति देवता का है।

पाणिनि को बड़ा गुणवान् कहा जाता है।

इक्ष्वाकुवंश के लोग कभी भी मिथ्या भाषण नहीं करते थे।

बहुत सी गर्भिणियां रोगी रहती हैं।

उस देश में बड़े आम हैं।

गर्ग ऋषि के पुत्र बड़े वैयाकरणी हैं।

संख्या वाचक शब्द

क्रम

एकः	१	प्रथमः
द्वौ	२	द्वितीयः
त्रयः	३	तृतीयः
चत्वारः	४	चतुर्थः ।
पंच	५	पंचमः
षट्	६	षष्ठः
सप्त	७	सप्तमः
अष्ट	८	अष्टमः
नव	९	नवमः
दश	१०	दशमः
एकादश	११	एकादशः
षोडश	१६	षोडशः
सप्तदश	१७	सप्तदशः
ऊनविंशतिः	१९	ऊनविंशः
विंशति	२०	विंशः
त्रिंशत्	३०	त्रिंशः

चत्वारिंशत्	४०	चत्वारिंशः
पंचाशत्	५०	पंचाशतमः
षष्ठि	६०	षष्टितमः
सप्ततिः	७०	सप्ततितमः
अशीतिः	८०	अशीतितमः
नवतिः	९०	नवतितमः
शतम्	१००	शततमः
सहस्र	१०००	तमः
अयुतम्	१००००	,,
लक्षम्	१०००००	,,
नियुतम्	१००००००	,,
कोटिः	१०००००००	,,
अर्बुदम्	१००००००००	,,

अनुवाद करने में छोटी से छोटी संख्या पूर्व आती है यथा—पंचोत्तरशतम् १०५। पंचविंशत्युत्तर शतद्वयम २२५ इत्यादि।

एक प्र०		स्त्री० एकवचनान्त	न०
१ वि०	एकः	एका	एकम
२ ,,	एकम	एकाम्	,,
३ ,,	एकेन	एकया	शेष पुंवत।
४ ,,	एकस्मै	एकस्यै	

५ ,,	एकस्मात्	एकस्याः	
६ ,,	एकस्य	,,	
७ ,,	एकस्मिन्	एकस्याम्	

द्वि शब्द द्विवचनान्त

	पु०	स्त्री०	न०
१	द्वौ	द्वे	द्वे
२	,,	,,	,,
३	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम	द्वाभ्याम्
४	,,	,,	,,
५	,,	,,	,,
६	द्वयोः	द्वयोः	द्वयोः
७	,,	,,	,,

बहुवचनान्त त्रि शब्द

	पु०	स्त्री०	न०
१ वि०	त्रयः	तिस्रः	त्रीणि
२	त्रीन्	,,	,,
३	त्रिभिः	तिसृभिः	त्रिभिः।
४	त्रिभ्यः	तिसृभ्यः	त्रिभ्यः
५	,,	,,	,,
६	त्रयाणाम	तिसृणाम्	त्रयाणाम्
७	त्रिषु	तिसृषु	त्रिषु

चतुर्

	पु०	स्त्री०	न०
१	चत्वारः	चतस्रः	चत्वारि
२	चतुरः	,,	,,
३	चतुर्भिः	चतसृभिः	चतुर्भिः
४	चतुर्भ्यः	चतसृभ्यः	चतुर्भ्यः
५	,,	,,	,,
६	चतुर्णाम	चतसृणाम	चतुर्णाम्
७	चतुर्षु	चतसृषु	चतुर्षु ।

तीन लिंगों में समान

		पंचन्	षष्
१	विभक्ति	पंच	षड्-ड्
२	,,	,,	,,
३	,,	पंचभिः	षड्भिः
४	,,	पंचभ्यः	षड्भ्यः
५	,,	,,	,,
६	,,	पंचानाम्	षण्णाम्
७	,,	पंचसु	षट्सु

		सप्तन्	अष्टन्
१	वि०	सप्त	अष्टौ-अष्ट

२	,,	,, ,,
३	सप्तभिः	अष्टाभि-अष्टभिः
४	सप्तभ्यः	अष्टाभ्यः-अष्टभ्यः
५	,,	,, ,,
६	सप्तानाम्	अष्टानाम्
७	सप्तसु	अष्टासु-अष्टसु

नवन्				दशन्			
१ वि०	नव	६	नवानाम्	१ वि०	दश	६	दशानाम्
२	,,	७	नवसु	२	,,	७	दशसु
३	नवभिः			३	दशभिः		
४	नवभ्यः			४	दशभ्यः		
५	,,			५	,,		

अभ्यास

१ निम्नलिखित संख्या वाचक शब्दों की संस्कृत बताओ :—
३७५, ५२, १६, ४१२–७५

२ द्वि, त्रि, चतुर के स्त्री लिंग रूप लिखो।

३ संस्कृत में अनुवाद करो :—
चार छात्रायें कहाँ पढ़ेंगी ?
तीन फल मुझे दे दो।
आठ नारियों के लिये ये १२ पुस्तकें हैं।

दस हज़ार रुपये का यह काम है।
नौ छात्र कहां पढ़ते हैं ?
एक लाख की सम्पत्ति उसने इकट्ठी करली।
एक सहस्र रुपये से यह घर बना।
करोड़ पुरुष परिश्रम कर रहे हैं।
यह दो सौ रुपये से खरीदा है।
मैं सौ रुपये मासिक लेता हूँ।

४ क्रम बोधक संख्या शब्द लिखो :—
२—५—६—८—११

अव्यय प्रकरणम्

अविकारी—जिनमें परिवर्तन नहीं होता, ऐसे शब्द अव्यय भी कहे जाते हैं। इनमें लिंग वचन कारक का कुछ भी ध्यान नहीं होता। ये शब्द सदैव एक दशा में रहते हैं।

(स्वशदि निपात मव्ययम्)

कुछ अव्यय शब्द--स्वर-आदि।

स्वर=स्वर्ग और परलोक।
अन्तर्=मध्य में।
प्रातर्=प्रभात।
पुनः=दूसरी बार और विशेष बात।
सनुतर्=छिप जाना।
उच्चैस्=ऊंचा।
नीचैस्=नीचे।
शनैः=धीरे।
ऋधक्=ऊंचाई और निरन्तरता।
ऋते=बिना और निषेध करना।

युगपत्=एक समय में ।
आरात्=दूर और समीप (आराद् दूर समीपयोः)
पृथक्=भिन्न ।
ह्यः=पिछला दिन
श्वः=आगामी दिन
दिवा=दिन
रात्रि=रात
सायम्=सन्ध्या काल । रात्रि का मुख आरम्भ
चिरं=बहुत स. समय ।
मनाक् ईषत्=अल्प (थोड़ा)
जोषम्=सुख और मौन ।
तूष्णाम=मौन ।
बहिस् अबस्=बाहर
समया=समीप और बीच ।
निकषा=निकट ।
स्वयम्=अपने आप ।
वृथा=व्यर्थ ।
नक्तम्=रात ।
नञ्=निषेध ।
हेतौ=कारण
इद्धा=प्रकट
अद्धा=स्पष्ट निश्चय ।
सामि=आधा घृणित ।
वत्=तुल्य ।
सना, सनत्, सनात्=नित्य—सदा ही

उपधा=भेद ।

तिरस्=पक्षी, अपमान, छिप जाना ।

अन्तरा=मध्य में, बिना ।

अन्तरेण=निषेध ।

नाना=अनेक और बिना अर्थ में ।

अलं=भूषण, पर्याप्त, शक्ति, निषेध ।

स्वस्ति=कल्याण ।

स्वधा=पितृदान में ।

वषट्, श्रौषट्, वौषट्=आहुति डालने में ।

दोषा=रात । मृषा, मिथ्या=असत्य ।

मुधा=व्यर्थ ।

पुरा=पुराना समय, निरन्तर, निकट भविष्यत् ।

अभीक्ष्णम्=बारंबार ।

साकं सार्धं=साथ

भूयः=फिर

साक्षात्=प्रत्यक्ष ।

हन्त=हर्ष, विषाद, कृपा, वाक्यारम्भ ।

किल=बात और मिथ्या ।

अथोऽथ=अनन्तर, मंगलादि ।

खलु=निश्चय, निषेध ।

कच्चित्=प्रश्नबोधक—पूछने में ।

सुष्ठु=प्रशंसा और अच्छा ।

साम्प्रतम्=उचित ।

धिक्=निन्दा, डांट डपट ।

च=और, अपि=भी ।

एव=ही । शश्वत्—नित्य बारबार

लिंग प्रकरणम्

लिंग वह है—जो पुरुष जाति स्त्रीजाति अथवा दोनों से भिन्न नपुंसकत्व को बतलाये । संस्कृत भाषा में तीन लिंग हैं । पुलिंग से स्त्रीलिंग बनाने के नियम इस प्रकार हैं ।

(१) क अ ज आदि अकारान्त शब्दों से स्त्रीलिंग में टाप् (आ) प्रत्यय लगता है । यह प्रत्यय ङीष् ङीप् (ई) प्रत्यय के लिये बाधक है, अन्यथा पञ्चाजी (पंचानां अजानां समाहारः) द्विगुसमास होने के कारण ङीप् (ई) प्रत्यय हो जाता है । अजादि शब्द—अज=अजा, एड्क=एड्का, अश्व=अश्वा, चटक=चटका, बाल=बाला, वत्स=वत्सा । शूद्र=शूद्रा, महत् शब्द पूर्व होने पर ङीप् (ई) प्रत्यय होता है । महाशूद्र महाशूद्री ।

(२) उगिदन्त—उक् इत् अन्त प्रातिपदिक शब्दों से ङीप् (ई) होता है ।

भवत्=भवन्ती ।
गच्छत्=गच्छन्ती ।
पठत्=पठन्ती ।

(क) अजाद्यतष्टाप् (ख) उगितश्च । (ग) पादोऽन्यतरस्याम ।

दीव्यत् = दीव्यती ।

पचत् = पचन्ती ।

(३) (ग) कृदन्त समासान्त पाद शब्द से स्त्री लिंग में टाप् (आ) के स्थान पर विकल्प से ङीप् (ई) प्रत्यय होता है। यथा—द्विपदी द्विपात् वा ।

मन्नन्त से ङीप् न होकर टाप् होता है जैसे—
सीमन् = सीमा, महिमन् = महिमा ।

(क) अन्नन्त बहुव्रीहि से भी ङीप् (ई) नहीं होता यथा—
बहुयज्वा इत्यादि

(४) टित् आदि प्रत्ययान्त शब्दों से भी ङीप् (ई) होता है
यथा—कुरुचर = कुरुचरी, यादृश् = यादृशी ।
ऐन्द्र = ऐन्द्री, उरुद्वयस् = उरुद्वयसी ।
तरुण = तरुणी । गार्ग्य = गार्गि

(५) (ख) प्रथम आयुवाचक शब्दों से ङीप् होता है। यथा—कुमार = कुमारी, वधूट चिरण्ट शब्दों से भी ङीप् होता है।
वधूट = वधूटी, चिरण्ट = चिरण्टी ।

(५) (ग) अन् ऋत्—अन्त बहुव्रीहि से ङीप् होता है। यथा—सुराज्ञी नाम नगरी । नेतृ = नेत्री होतृ = होत्री

(६) (घ) सपत्नी आदि शब्दों से (ई) प्रत्यय होता है यथा—

(क) अनो बहुव्रीहेः । (ख) वयसि प्रथमे—वयस्य चरमे इति
(ग) नित्यं संज्ञा छन्दसोः । (घ) वाच्यम् नित्यं सपत्न्यादिषु ।
(ङ) षिद् गौरादिभ्यश्च ।

समानः पतिः यस्याः सा सपत्नी ।

वीरः पतिः यस्याः सा वीर पत्नी ।

(७) (ङ) षिद्न्त और गौर आदि शब्दों से ङीष् होता है ।
षिद्न्त नर्तक=नर्तकी ।

गौरादिगण--गौर=गौरी, अनुडुह्=अनड्वाही ।
मत्स्य=मत्सी

(८) उदन्त और गुणवाची शब्दों से विकल्प से ङीष् होता है यथा—मृदुः=मृद्वी अथवा मृदुः एक गुरुः=गुर्वी गुरुः, पटुः=पट्वी पटुः ।

(९) (ख) बहु आदि आदि शब्दों से भी विकल्प पूर्वक ङीष् (ई) प्रत्यय होता है । यथा—बह्वी=बहुः

१० (ग) गोप आदि शब्दों से भी ङीष् (ई) होता है । यथा—गोप=गोपी, पालक शब्द अन्त में होने पर टाप प्रत्यय होता है यथा—गोपालक=गोपालिका, अश्वपालिका ।

११ (घ) इन्द्र वरुण आदि शब्दों से स्त्रीलिंग में आनुक् का आगम और ङीष् प्रत्यय होता है । यथा—

इन्द्र=इन्द्राणी,

महत् हिमम्=हिमानी,

महत् अरण्यं=अरण्यानी ।

दुष्टो यवो=यवानी ।

यवनानां लिपिः=यवनानी ।

मातुल=मातुलानी मातुलीवा ।

उपाध्याय=उपाध्यायानी उपाध्यायी वा ।

आचार्य=आचार्याणी (ङ) आचार्या=स्वयं ।

व्याख्यान करने वोली । मृड=मृडानी, रुद्र=रुद्राणी

वरुण=वरुणानी, भव=भवानी, शर्व=शर्वानी ।

१२ पाणिगृहीती विवाहिता के लिये अन्य पाणिगृहीता ।

१३ अंगयुक्त शब्दों से विकल्प से ङीष् (ई) होता है ।
यथा=चन्द्रमुख=चन्द्रमुखी, चन्द्रमुखा ।
सुमुख=सुमुखी, सुनासिक=सुनासिकी सुनासिका
सुमुखा शाला अप्राणि वाचक

१४ दिक् पूर्वपद अंग शब्द से ङीप् (ई) होता है ।
प्राङ् मुख=प्राङ् मुखी, उदङ् मुखी इत्यादि ।

१५ (क) उकारान्त मनुष्य जातिवाचक से ऊङ् होता है
यथः=कुरुः=कुरूः । वाहु अन्त शब्दों से भी ऊङ्
होता है ।

यथा—सुबाहूः योषित् भद्रबाहूः ।

पंगु शब्द से भी ऊङ् होता है यथा—पंगुः=पंगूः

(क) वोतो गुणवचनात् । (ख) बह्वादिभ्यश्च ।
(ग) पुंयोगादाख्यायाम् ( ) इन्द्रवरुण भव शर्वरुद्रमृडहिमारण्ययव यवन मातुलाचार्याणा मानुक् ।
आचार्यात् अणत्वं च ।

श्वसुरः=श्वश्रूः। उपमानवाचक उरू शब्द से भी ऊङ्
होता है यथा—करभोरूः एषा।
कद्रु कमण्डलु आदि संज्ञाओं से ऊङ् होता है।
कद्रूः, कमण्डलूः
नर=नारी (ख) शार्ङ्गरवाद्यञोङीन्।

१६ युवन् शब्द से स्त्रीलिग में तिप्रत्यय होता है।
युवन=युवतिः समास होने पर यह प्रत्यय नहीं होता
बहु युवा नगरी होता है।

अभ्यासार्थ प्रश्न

१ लिंग किसे कहते हैं और इसके कितने भेद हैं?

२ लिंग शुद्धि कीजिये :—
पंचाज्ञा, अश्वी, पंग्वी, गुर्वानी, मातुला, गौरा।

३ निम्नलिखित शब्दों का लिंग परिवर्तन कीजिये :—
चटक, वरुण, युवन, बुद्धिमत, पंगुः, अजा, राजन, सीमन,
प्राङ् मुख, श्वसुर।

४ आचार्यानी और आचार्या का अन्तर स्पष्ट करो।

५ लिंग-परिवर्तन के मुख्य २ नियम उद्धृत करो।

उपसर्ग प्रकरणम् (*Prefixes*)

उपसर्ग—वे शब्द हैं, जिनका प्रयोग अन्य शब्दों—क्रिया आदि के पूर्व होता है और उनके अर्थ में बड़ा परिवर्तन होता

(क) ऊङुतः। (ख) शार्ङ्गरव आदि से ङीन् (ई) प्रत्यय

है यथा—गच्छ् (जाना) के पूर्व अव लगाने से अर्थ जानना हो—जाता है—अवगच्छति=जानता है। सम् लगाने से मिलना हो जाता है यथा—संगच्छते—मिलता है?

अनु=पीछे चलना जैसे—राजानं अनुगच्छतिसः। वह राजा के पीछे जाता है। अधिगम=प्राप्त करना यथा—अधिगच्छति विद्याम्—विद्या को पाता है। प्रति+आ+गम=लौटना, प्रत्यागच्छति गृहम इस प्रसिद्ध बात को संस्कृत जिज्ञासु भली प्रकार जानते हैं उपसर्गेण धात्वर्थो बलादन्यत्र नीयते। प्रहाराहार संहार विहार-परिहारवत्।

प्रहाराहार संहार विहार परिहार वत्।

प्र+हार=मारना चोट करना,

आ+हार=भोजन,

सं+हार=बिनाश

वि+हार=भ्रमण करना।

परि+हार=हटाना परिहरति दोषान्।

उपसर्ग—परिचय

प्र=अधिक, उत्कर्ष—प्रबल, प्रकर्ष, प्रगति।

परा=पीछे, उल्टा=पराजय, पराभव, पराक्रम।

अप=बुरा, हीन=अपव्यय, अपमान, अपशब्द।

सम=साथ=संयोग, संलाप, संवाद।

सु=अच्छा, उत्तम=सुपुत्र, सुपात्र, सुयोग।

कु=बुरा=कुपुत्र, कुपात्र, कुयोग कुमार्ग।

अति=अतिरिक्त अधिक, अत्याचार, अतिपटु, अतिबुद्धिमान।

आ=आरम्भ से, तक=आजन्म, आजीवन, आमरण।
अनु=पीछे, अनुसार=अनुकरण, अनुनय, अनुकूल।
अव=रहित नीचे, अवगुण, अपवाद, अवसाद।
अभि+सम्मुख=अभिमुख, अभ्यागत आदि।
परि=चारों ओर=परिजन, परिमाण, परिचर्य।
उप=समीप, गौण=उपमन्त्री, उपाध्याय, उपाश्रय।
प्रति=हरएक, विरुद्ध=प्रतिरोध, प्रत्येक प्रतिदिन।
पुरस्=सामने=पुरोगामी, पुरोहित, पुरस्कार।
निस्; निर्=हीन-बिना; निरपराध; निर्गुण, निर्लेप।
दुस्=कठिन=दुस्तर; दुष्कर, दुस्साहस।
दुर्=बुरा=दुराचार, दुर्जन, दुर्गम, दुरारोह।
अधि=ऊपर, श्रेष्ठ=अध्यक्ष, अधिपति, अध्याहार।
वि=रहित=वियोग, विदेश, विरक्त।
उत्=अधिक श्रेष्ठ=उत्तम, उत्कृष्ट, उत्थान।
नि+अधिक=नियुक्त, निषेध, नियम।

अभ्यास

१ उपसर्ग किसे कहते हैं, सोदाहरण लिखो।

२ उपसर्ग से अर्थ-परिवर्तन के उदाहरण दो।

३ परा, अधि, उत्, उप् इनके अर्थ लिख कर उदाहरण भी दो।

४ कुछ मुख्य उपसर्गों का परिचय दो।

उपपद विभक्तियां

विभक्ति (Case-Endings) वे चिन्ह हैं, जो कारक को सूचित करते हैं। यह दो प्रकार की १ कारक विभक्ति और उपपदविभक्ति। १ कारक-विभक्ति—कारकों के लिये प्रयुक्त होती है। २ उपपद विभक्ति वह है, जो किसी शब्द-पद के साथ होने से आती है। यथा—सह शब्द के साथ तीसरी विभक्ति आती है। रामेण सह गच्छति (राम के साथ जाता है।

प्रथमा विभक्ति (Nominative)

१ कर्त्ता के अर्थ में कर्तृवाच्य में प्रथमा आती है।
यथा—कृष्णः रक्षति।

२ किसी शब्द का उल्लेख करने में यथा—
गौः, वृषभः, नदी।

३ कर्मवाच्य का कर्म प्रथमा विभक्ति में आता है।
यथा—राज्ञा चौरः दण्डयते।

४ संबोधन में प्रथमा होती है यथा—हे हरे! मुकुन्द! कृष्ण! (संबोधने च)

किसी शब्द का लिंग ज्ञान कराने में भी प्रथमा आती

यथा—माला, जलम्, पयोमुक्-ग्, इत्यादि।

५ परिमाण बतलाने में—द्रोणी व्रीहिः। संख्या बताने में यथा—एकः, द्वौ, त्रयः।

द्वितीया विभक्ति (Accusative)

(कर्माणि द्वितीया) कर्तृवाच्य के कर्म में दूसरी विभक्ति आती है। यथा—साधुः हरिं भजति।

१ अनिच्छित वस्तु भी कर्म में आती है यथा-ओदनं भुंजानो विषं भुङ्क्ते। इसमें अनचाही वस्तु विष भी भुज् क्रिया के साथ सम्बन्धित होने से कर्म कारक हो गई।

२ (अकथितं च) दुह्, याच्, पच्, दण्ड्, रुध्, प्रच्छि, चि, ब्रू, शास्, जि, मन्थ्, मुष्, नी, हृ, कृष्, वह् ये द्विकर्मक धातुयें जहां हों वहां कर्म कारक-द्वितीया विभक्ति का प्रयोग होता है। यथा—गां (गोः) दोग्धि पयः, पंचमी के अर्थ में यहां द्वितीया विभक्ति हुई। याच्—राजानं (राज्ञः) याचते भूमिम। यहां भी मांगने के अर्थ में पंचमी के स्थान पर द्वितीया हुई। (अविनीतं विनयं याचते)

पच्—तण्डुलान् (तण्डुलेभ्यः) ओदनं पचति।

दण्ड्—अपराधिनः (अपराधिभ्यः) शतं दण्डयति।

रुध्—व्रजं (व्रजे) अवरुणद्धि गाम्।

प्रच्छि पृच्छ्—यात्रिणं गृहं पृच्छति (यात्रिणः)।

चि—लतां अवचिनोति पुष्पाणि।

ब्रू शास् वटुं धर्मं ब्रूते शास्ति वा।

जि (जय्) शतं जयति द्यूतकारः द्यूतकारम् (द्यूतकारात्)

मथ्—सुधां सागरं मथ्नाति (सुधायै)।
मुष्—वणिग् शतं मुष्णाति माम् (भत्)।
नी, हृ, कृष् वह्, नगरं गां नयति हरति कर्षति वहति वा।

३ हृ, कृ के साथ होने पर विकल्प से द्वितीया विभक्ति लगती है। यथा—हारयति कारयति भृत्यं भृत्येन वा कटम्।

४ अधि+शी, स्था, आस् (बैठना) के साथ द्वितीया विभक्ति प्रयोग में आती है ?
यथा—अधिशेते अधितिष्ठति अध्यास्ते वा शिवः श्मशानम्।

५ अभि+नी+विश् से द्वितीया होती है।
यथा—अभिनिविशते सन्मार्गम् सत्संगंवा।

६ उप, अनु, आ उपसर्ग होने पर वस् धातु से दूसरी विभक्ति होती है। यथा—
नृपः पुरं उपवसति, अनुवसति अधिवसति वा।

७ समय और मार्गवाचक शब्द में दूसरी विभक्ति आती है।
यथा—मासं अधीते (काल) क्रोशं कुटिला सरला वानदी।
(कालाध्वनोरत्यन्त संयोगे)

७ पृथक्, विना, नाना के साथ द्वितीया, तृतीया और पंचमी का भी प्रयोग होता है।
पृथक्-विना-नाना नारीं, नार्या, नार्याः वा निष्फला लोक यात्रा। विना पृथक् वा धर्मं धर्मेण धर्माद्वान सुखम्।

८ अन्तरा (मध्य में) अन्तरेण (विना) इन शब्दों के द्वितीया विभक्ति होती है।

अन्तरा त्वां मां हरिः। अन्तरेण धर्मं न सुखम्।

९ परितः अभितः सर्वतः (सब ओर) उभयतः (दोनों ओर) समया, निकषा और हा के साथ द्वितीया का प्रयोग होता है। यथा परितः अभितः सर्वतः वा श्री कृष्णं गोपाः श्री कृष्णस्य)

उभयतः राजानं (राज्ञः) भृत्याः गच्छन्ति समया निकषा- ये समीपता वाचक अव्यय हैं। पाठशालां समया निकषा वा नगरम्। हा दुर्गाअभक्तम्!

१० धिक्, प्रति, अनु, अति, उप के साथ द्वितीया विभक्ति होती है। यथा—धिक् कृष्णाभक्तम्।

त्वं मां प्रति अकथयः।

अति भानवान् नृपः।

राजानं उपवसति भृत्यः।

उपरि+उपरि, अधि+अधि, अधोऽधः

के साथ द्वितीया आती है यथा—

उपर्युपरि लोकं (लोकेभ्यः) स्वर्गम्

ब्रह्म धाम वा। अध्यधि लोकं वैकुण्ठम्

अधोऽधः लोकं पातालम्।

जपमनु प्रावर्षत्।

११ गत्यर्थक धातुओं के साथ द्वितीया और चतुर्थी का भी प्रयोग होता है। यथा—पाठशालां पाठशालायै वा गच्छति।

१२ अभि—अनु (हीनता द्योतक) के साथ द्वितीया लगती है।
यथा—भक्तो हरिमभिवर्तते।
अनु हरिं (हरेः) सुराः
(हरेर्हीनाः)

करण—क्रिया की सिद्धि में विशेष उपकारक होता है। कर्ता और करण में तृतीया विभक्ति होती है।

१ प्रकृति गोत्र के साथ तृतीया आती है।
यथा—प्रकृत्या साधुः, गोत्रेण गार्ग्यः।

२ फल प्राप्ति बतलाने के लिये काल वा मार्ग के साथ तृतीया आती है यथा—मया दिनेन अर्थः अवगतः, मया चलता क्रोशेन व्याकरणं अधीतम्।

३ जब दिव् धातु द्यूतक्रीडा अर्थ में आये तो द्वितीया वा तृतीया विभक्ति होती है।
यथा—अक्षैः अक्षान् वादीव्यति।

४ सह, साकं, साध, समं के साथ अप्रधान शब्द को तृतीया प्रयोग होता है।
यथा भ्राता सह गच्छति भगिनी इसमें प्रधान भगिनी है उसी का मुख्य रूप से क्रिया सम्बन्ध है। (सह युक्तेचा प्रधाने)।
साधुना समं गच्छति शिष्यः।

५ जिस अंग में दोष होने से मनुष्य का दोष दिखलाई पड़ता है उसे तृतीया होती है। तथा—अक्ष्णा काणः। पादेन खंजः। शिरसा खल्वाटः।

६ मनुष्य के किसी लक्षण में तृतीया आती है, जिससे उसका ज्ञान कराया जाता हो। यथा—जटाभिः तापसः यज्ञोपवीतेन आर्यः।

७ संपूर्वक जानाति के कर्म में तृतीया भी प्रयुक्त होती है—यथा—पित्रा पितरं वा संजानीते।

८ हेतु बताने में कारण को तृतीया होती है यथा—पुण्येन दृष्टो हरिः।

६ मूल्य बोधक शब्दों के साथ तृतीया वा चतुर्थी होती है। द्वाभ्यां रुप्यकाभ्यां क्रीता शाटिका। रुप्यकाय क्रीतं इदं वसनम्।

१० अलम्, किम्, अर्थः, प्रयोजनम् के साथ तृतीया विभक्ति का प्रयोग होता है। यथा—किं तेन पुत्रेण, अलं महीपाल! तत्र श्रमेण कोऽर्थः पुत्रेण जातेन। न मया सह त्वया प्रयोजनम्।

११ हीने न्यून के साथ तृतीया आती है यथा—धनेन हीनः द्वाभ्यां माषाभ्यां न्यूनं सुवर्णम्। जिसका नाम लेकर शपथ की जाय उसे तृतीत होती है यथा अहं धर्मेणशपे दान कर्म के लिये कर्ता जिसे चाहता है वह संप्रदान है। इसमें चतुर्थी होती है। जैसे—छात्राय पुस्तकं ददाति।

१ रुच्यर्थ धातुओं के प्रयोग में जिसे कुछ अच्छा लगे उसके लिए चतुर्थी आती है। यथा—मह्यं रोचते भक्तिः। रामाय स्वदते दधि।

२ श्लाध्, ह्नु ङ्, स्था, शप् के साथ चतुर्थी होती है। यथा—कृष्णाय श्लाघते ह्नुते तिष्ठते शपते वा।

३ जिसका ऋण हो उसके लिये चतुर्थी होती है। यथा—असौ तुभ्यं सहस्रं धारयति भक्ताय धारयति मोक्षं हरिः।

४ स्पृह् धातु के साथ इच्छित वस्तुको चतुर्थी होती है। यथा-दुग्धाय स्पृहयति।

५ क्रुध्, द्रुह्, ईर्ष्य, असूय् (गुण में दोष बताना) इन धातुओं के साथ चतुर्थी होती है? यथा—
हरये क्रुध्यति कंसः। पिता पुत्राय द्रुह्यति, धनिको धनिकाय ईर्ष्यति। असौ मह्यं असूयति।

उपसर्ग पूर्व होने पर क्रुध् द्रुह् धातुओं से दूसरी विभक्ति होती है। यथा—सः क्रूरं अभि क्रुध्यति अभि-द्रुह्यति वा।

६ राध् ईक्ष् धातुओं से चतुओं से चतुर्थी लगती है। पुत्राय राध्यति ईक्षते वा अर्थात् शुभाशुभ विचार करता है।
प्रति—श्रु, आ+श्रु के साथ चतुर्थी होती है? जैसे—पित्रे तीर्थयात्रायै प्रतिश्रृणोति आश्रृणोति वा।

७ क्रय करने के अर्थ में तृतीया चतुर्थी दोनों विभक्तियां होती हैं। यथा—शतेन शताय वा परिक्रीतानि पुस्तकानि।

८ अर्थ और उत्पात बतलाने में भी चतुर्थी होती है। यथा—भक्तः मुक्तये हरिं भजति।
उत्पात—वाताय कपिला विद्युत्।

९ तुमुन् प्रत्यय के अर्थ में चतुर्थी प्रयुक्त होती है । यथा—फलेभ्यो भाति (फलान्याहर्तुं याति) यागाय याति।

१० नमः, स्वस्ति, स्वाहा, स्वधा अलं, वषट् के साथ चतुर्थी विभक्ति होती है।

नमो देव्यै। तुभ्यं स्वस्ति। देवेभ्यः स्वाहा, पितृभ्यः स्वधा दैत्येभ्यो हरिः अलम। इन्द्राय वषट्।

११ मन्य् धातु से अनादर बतलाने में द्वितीया वा चतुर्थी का प्रयोग होता है यथा—न त्वां तृणं मन्ये तृणायवा।
पंचमी का प्रयोग अपादान में होता है, पृथकृत्व प्रकट करना इसका मूल भाव है।

१ जुगुप्सा (घृणा) विराम (विश्राम) प्रमाद (असावधानता) अर्थ बतलाने में पंचमी का प्रयोग होता है यथा—अकार्यात् जुगुप्सते। कार्यात् विरमति। पठनात् प्रमाद्यति।

२ परा+जि धातु से असह्य अर्थ में पंचमी का प्रयोग होता है। यथा—पठनात् पराजयते।

३ भय तथा रक्षार्थ धातुओं के साथ भय के हेतु को पंचमी होती है यथा—सर्पाद् बिभेति तस्करात् त्रायते।

४ निषेधार्थक धातुओं के साथ इच्छित पदार्थ को पंचमी होती है। यथा—यवेभ्य गां वारयति: पापेभ्यः मित्रं वारयति।

५ जिससे अपने आप को छिपाया जाय और जिससे लज्जा आये जो उत्पत्तिस्थान वा उत्पन्न होने वाली वस्तु का कारण

हो वहां पंचमी होती है । यथा—मातुःर्निलीयते (छिपता है) कृष्णः । वधूः श्वसुरात् लज्जते ।

हिमवतो गंगा प्रभवति । ब्रह्मणः प्रजाः प्रजायन्ते ।

६ अन्य, आरात्, इतर ऋते के साथ पंचमी का प्रयोग होता है । जैसे—अन्यः भिन्न इतरो वा त्वत् नागच्छेत् । आरात् (निकट) आरात् मन्दिरात् मे गृहम् । ऋते (बिना) धर्माद्दते न सुखम्, धर्मं ऋतेन सुखम् ।

७ अप, आङ् परि उपसर्गों से पंचमी होती है । यथा—अपहरेः संसारः । परि हरेः संसारः । आमुक्तेः संसारः ।

प्रभृति=यथा—जन्मनः प्रभृति मया मांसं न भुक्तम् ।

बहिः=बाहर—ग्रामाद् बहिः पाठशाला अस्ति ।

८ प्रतिनिधि और प्रतिदान में भी पंचमी होती है । प्रद्युम्नः कृष्णात् प्रति (उसके स्थान पर है ? प्रतिदान=दान का प्रतिफल—यथा—तिलेभ्यः प्रतियच्छति माषान् ।

९ कर्तृवर्जित ऋण के कारण होने पर पंचमी आती है । यथा—शतात् बद्धः कृषकः ।

१० अनन्तरं पश्चात् से पंचमी होती है । यथा—पठनात् अनन्तरं भ्रमति । भोजनात् पश्चात् फलानि भक्षयति ।

११ स्तोक, अल्प, कृच्छ्र के साथ तृतीया और पंचमी होती है । यथा—स्तोकेन स्तोकाद् वा मुक्तः । कृच्छ्रेन कृच्छ्राद् वा अल्पेन अल्पाद् इति ।

१२ दूर अन्तिक (समीप) शब्दों के साथ द्वितीया तृतीया और पंचमी होती है। यथा—ग्रामस्य दूरं दूरात् दूरेण अन्तिकं अन्तिकात् अन्तिकेन वा।

१३ स्त्रीलिंग न होने पर गुण और हेतुवाचक शब्द पंचमी तृतीया युक्त होता है। यथा—अज्ञानाद् अज्ञानेन वा बद्धः। हेतु—पर्वतो धूमात् अग्निमान्।

१४ जिससे अध्ययन किया जाय अथवा तुलना वाचक शब्दों से से पंचमी होती है।

यथा—उपाध्यायात् अधीते शिष्यः। (नियम पूर्वक)।

तुलना—रामः त्वत्तः बुद्धिमत्तरः।

षष्ठी—स्वस्वामी भावादि सम्बन्ध बतलाने में षष्ठी, होती है यथा राज्ञः पुरुषः।

१ कारण प्रकट करने में षष्ठा आती है यथा—जीविकाहेतोः अत्र वसाति स्वल्पस्य हेतोः बहुहातु मिच्छन्।

दक्षिणतः पुरतात् उपरिष्टात् आदि के साथ षष्ठी होती है। यथा—ग्रामस्य दक्षिणतः पुरस्तात् पश्चिमतः आदि।

२ दूर अन्तिक के साथ षष्ठी भी होती है।

दूरं अन्तिकं ग्रामस्य ग्रामाद् वा।

३ स्मर् दय्, ईश् के साथ षष्ठी विभक्ति का प्रयोग होता है। यथा—मातुः स्मरति पुत्री।

अनाथाय दयते। ईश्वरः संसारस्य ईष्टे।

४ तव्यत्, अनीयर्, यत् के कर्त्ता को तृतीयाव षष्ठी होती है।

त्वया तव गंतव्यः राजपथः।

तुल्यार्थ के साथ भी तृतीया षष्ठी होती है।
यथा—मात्रा (भातुः) सदृशी इयं बाला।

५ क्तान्त भाव वाचक संज्ञा के साथ षष्ठी विभक्ति का प्रयोग होता है। यथा—मित्रस्य जल्पितम् भ्रातुः कृतं च स्मरसि।

६ क्तिन्, तृच्, अन् के साथ षष्ठी विभक्ति होती है। यथा—कृष्णस्य कृतिः। जगतः कर्ता शिवः। पाठस्य पठनम्।
सम्बन्ध कारक को स्वीकार नहीं किया गया है।
ऐसा हेतु सहित पीछे कह दिया है।

७ आशिष्, आयुष्य आदि में चतुर्थी षष्ठी का प्रयोग होता है। यथा आयुष्यं चिरजीविनं वा तुभ्यं तव भूयात्।
अधिकरण में सप्तमी होती है।

१ निमित्त में सप्तमी होती है। यथा—चर्मणि द्वीपिनं हन्ति दन्तयोः हन्ति कुञ्जरम्।

२ ईश्वर, स्वामी, अधिपति के साथ षष्ठी सप्तमी का प्रयोग होता है। यथा—अजानां अजासु वा स्वामी अधिपतिः ईश्वरः।

३ यदि किसी का समय अन्य किसी दूसरे कारण से जाना जाय वहां सप्तमी होती है। गोषु दुह्यमानासु गतः। दीपे प्रज्वलति सः गृहात् निर्गतः (यस्य च भावेन भावलक्षणम्)।

४ अनादर करने के अर्थ में षष्ठी सप्तमी दोनों विभक्तियां आती हैं। यथा—तिष्ठतः तिष्ठति वा पितुः सः दुष्कर्म नात्यजत्। रुदतः रुदति वा प्राव्राजीत् गौत्तमः।

५ जाति, गुण, क्रिया, नाम से (द्वारा) समुदाय में से किसी

एक को सर्वोत्तम बतलाने में षष्ठी सप्तमी दोनों का प्रयोग होता है यथा—नृणां नृषु ब्राह्मणः श्रेष्ठः (जाति) गवां गोषु वा कृष्णा बहुक्षीरा। (गुण) गच्छतां गच्छत्सु वा धावन् शीघ्रः (क्रिया) बालानां बालेषु वा मैत्रः पटुः।

६ स्निह्, अभिलष् के साथ सातवीं होती है। यथा—माता पुत्रेषु स्निह्यति। दुष्टे न नराः अनुरज्यन्ते अधिक बताने में सप्तमी होती है। यथा—अधि भुवि रामः। उपपरार्धे हरेः गुणाः।

अभ्यास

१ कारक और विभक्ति का सम्बन्ध दिखाइये।

२ उभयतः, प्रति, धिक्, हा, के साथ कौन सी विभक्ति लगती है, लिखो।

३ शुद्ध करो :—

अलं पठनस्य। नमः शम्भुम।
उभयतः कृष्णस्य गोपाः।
अहं पुष्पाणि स्पृहयामि।
गुरुणा अधीते सांख्य शास्त्रम्।
गोः दोग्धि पयः।
माणवकाय धर्मं ब्रूते शास्ति वा।
पापं जुगुप्सते। मां रोचते दधि।
पठनस्य अनन्तरं। ग्रामे गच्छति नरः।
अलं कृष्णो कंसम। मम सह गच्छति।
चर्मणे द्वीपिनं हन्ति।

४ पंचमी विभक्ति के तीन मुख्य २ नियम सोदाहरण लिखिये ।

५ आरात्, ऋते, विना, स्वस्ति, अलं के साथ जो २ विभक्ति लगती है सोदाहरण लिखो ।

६ संस्कृत में अनुवाद करो :—

वह मुझे मार्ग पूछता है ।

सब जीवों का कल्याण हो ।

धर्म के बिना नर जीवन व्यर्थ है ।

यह लड़का अपने भाई से आकृति में मिलता है ?

वह गोत्र से भारद्वाज है और जाति से क्षत्रिय ।

बचपन से लेकर मैं कभी झूठ नहीं बोलता ।

राजा अपराधियों को कारावास दण्ड देता है ।

मथुरा तीन लोक से न्यारी है ।

वृन्दावन में सब स्थानों से आकर्षण है ।

यमुना पर्वतों में से बहती हुई आती है ।

घरबार नष्ट हो जाने पर वह साधु बना ।

वह अपने क्षेत्रों से पशुओं को हटाती है ।

पढ़ने के पीछे लिखना अवश्य चाहिए ।

समास प्रकरणम्

समास - परस्पर सम्बन्ध रखने वाले अथवा दो से अधिक शब्दों के मेल को समास कहते हैं। जैसे—गंगाजलम्=गंगायाः जलम् ।

समास के शब्दों को पृथक् २ करके अपनी २ विभक्तियों में दिखलाने का नाम विग्रह है यथा—त्रयाणां लोकानां समाहारः (त्रिलोकी) समास के अन्त में विभक्ति आती है । यथा—

राजपुरुषः।

समास के चार भेद हैं। १ अव्ययीभाव २ तत्पुरुष
३ बहुव्रीहि ४ द्वन्द्व।

तत्पुरुष के दो भेद हैं १ व्यधिकरण।

तत्पुरुष—जहां कर्त्ता कारक के विना।
अन्य विभक्तियां पूर्वपद में आती हैं।
यथा—कृष्णस्य दासः=कृष्णदासः।

२ समानाधिकरण करण तत्पुरुष—

जहां विशेष्य विशेषण वा उपमेय उपमान में प्रथमा विभक्ति आती है।

यथा– नीलं कमलम्=नील कमलम्?

द्विगु—जहां संख्या वाचक विशेषण पूर्व पद में हो और समाहार का बोध हो। यथा– त्रिपथम्=त्रयाणां पथां समाहारः तत्पुरुष के अलुक् तत्पुरुषादि अन्य भेद हैं!

१ अव्ययी भाव समास—जिसमें पूर्वपद प्रधान हो और प्रथम पद उपसर्ग और दूसरा पद संज्ञा होता है। यथा—दिनम् दिनम्=प्रतिदिनम्।

मक्षिकानाम् अभावः=निर्मक्षिकम।
अक्ष्णोः प्रति=प्रत्यक्षम्।
गवां पश्चात्=अनुगु।
जीवनं अभिव्याप्य=आजीवनम।

२ तत्पुरुष—जिसमें दूसरा पद प्रधान होता है और कर्त्ता कारक के विना अन्य विभक्तियां पूर्व पद में आती हैं। इसके

६ भेद हैं।

१ द्वितीया तत्पुरुष—जिसमें पूर्वपद की दूसरी विभक्ति लुप्त हो जाती है । यथा—देवींश्रितः देवीश्रितः । मन्दिरं गतः मन्दिरगतः दुःखं अतीतो दुःखातीतः। अन्नं बुभुक्षुः अन्नबुभुक्षुः। शरणम् आगतः शरणागतः।

तृतीया—तत्पुरुष—मात्रा सदृशः=मातृसदृशाः।

वर्षैः पूर्वः=वर्ष पूर्वः। वाचा कलहः=वाक् कलहः,

देव्या त्राताः=देवीत्रातः।

गुडेन मिश्राः गुड़धानाः।

चतुर्थी तत्पुरुष—यूपायदारु=यूपदारु,

जीवेभ्यः बलिः=भूतबलिः, पुत्राय हितम पुत्र हितम।

मनुष्याय सुखम मनुष्यसुखम्।

पचमी तत्पुरुष—चौराद् भयम्=चौरभयम्,

सिंहाद् भीतः=सिंहभीतः। ऋणात् मुक्तः = ऋणमुक्तः।

वृक्षात् पतितः=वृक्षपतितः।

षष्ठी तत्पुरुष=नद्याः जलम्=नदीजलम्।

गुरोः उपदेशः=गुरूप देशः। राज्ञः माता = राजमाता,

कृष्णस्य लीला=कृष्ण लीला।

सप्तमी—तत्पुरुष=आतपे शुष्कः=आतप शुष्कः,

अक्षेषु शौण्डः=अक्षशौण्डः, स्थाली पक्वः।

नञ् तत्पुरुष —जिसमें किसी वस्तु का अभाव निषेध सूचित होता है।

यथा—न धर्मः=अधर्मः, न अश्वः अनश्वः न शौचम्=
अशौचम् । अब्राह्मणः ।

अलुक् तत्पुरुष—जहां तत्पुरुष समास में विभक्ति लोप नहीं होता यथा—अञ्जसा कृतम्, आत्मनेपदम् ।

स्तोकान्मुक्तः । पश्यतोहरः, देवानां प्रियः ।

इति व्यधिकरण तत्पुरुष ।

(तत्पुरुषः समानाधिकरणः कर्मधारयः)
कर्मधारय--समानाधिकरण तत्पुरुष ।

जिसमें विशेषण विशेष्य का प्रथमा विभक्ति-
(उपमेय और उपमानका)

में समास होता है । यथा--नीलम् उत्पलम्=नीलोत्पलम् ।

पुरुष व्याघ्रः=पुरुषो व्याघ्र इव शूरः ।

कृष्णः सर्पः=कृष्ण सर्पः । कृष्णः सारंगः कृष्ण सारंगः ।

गौः मतल्लिका=गौमतल्लिका (उत्तम)

कुत्सितो नृपः किन्नृपः । मध्यमपद लोपी

कर्मधारय में मध्यवर्त्ती पद का लोप हो जाता है । यथा—
शाक प्रियः पार्थिवः=शाकपार्थिवः । गुडेन मिश्राः धानाः
गुडधानाः ।

द्विगु—यह कर्मधारय का भेद है । इसमें संख्या पूर्व होती है और समाहार (इकट्ठा होना) पाया जात. है । इसमें एकवचन रहता है यथा--पंचानां पात्राणाम् समाहारः=पंचपात्रम् ।

त्रिरात्रम् त्रयाणां रात्रीणां समाहारः ।

अष्टाध्यायी=अष्टानां अध्यायानां समाहारः ।

त्रिलोकी=त्रयाणां लोकानां समाहारः ।

बहुव्रीहि समास = जिसमें कोई पद प्रधान नहीं होता, स पद विशेषण हो जाता है । जैसे—

यथा—प्राप्तं उदकं यस्मै सा प्राप्तोदका नगरी ।

उपहृतपशुः देवः=उपहृतः पशुः

यस्मै सः उपहृत पशुः देवः ।

इसके समानाधिकरण और व्यधिकरण ये दो भेद हैं ।

१ समानाधिकारण बहुव्रीहि में सब पदों की एक ही वि होती है । यथा वीरपुरुष को ग्रामः वीराः पुरुषाः यत्र सः वीर पुरुष को ग्रामः ।

२ व्यधिकरण तत्पुरुष में भिन्न २ विभक्तियां आती हैं । यथा शंखः हस्ते यस्य सः शंखहस्तः । शूलपाणिः शूलं पाए यस्य सः ।

द्वन्द्व समास—जिसमें समस्त पद प्रधान होते हैं और मध्य में च अथवा आते हैं । यथा—रामश्च लक्ष्मणश्चेतिरा लक्ष्मणौ ।

भीमार्जुनौ भीमश्च अर्जुनश्च=भीमार्जुनौ ।

इसके तीन भेद हैं । १ इतरे तर द्वन्द्व, २ समाहार द्वन ३ एक शेष द्वन्द्व ।

इतरेतर द्वन्द्व—जिसमें दो पदों का समास होता है औ

समस्त-पद द्विवचनान्त हो जाता है। यथा—
हरश्च हरिहरौ इकारान्त शब्द पूर्व हो जाता है। कवि विद्वांसौ, मतिश्च उद्योगश्चे ति मत्युद्योगौ।
माता पितरौ—पिता पुत्रौ।

१ धर्म आदि शब्दों में आगे पीछे रखने का कोई नियम नहीं है। यथा—

धर्मश्च अर्थ=धर्मार्थौ, अर्थ धर्मौ।
जाया च पतिश्च=जाया पती।
जाया शब्द को जं दं भाव निपात से हो जाता है।
दम्पती, जम्पती।
ईशश्च कृष्णश्च=ईशकृष्णौ।

यदि कहीं इस में अनेक शब्दों का समास हो, यौर अन्त में बहुवचन हो तो शब्दों के आगे पीछे रखने का कोई भी नियम नहीं होता बहुष्व नियमः। यथा—
अश्वश्च रथश्च इन्द्रश्चेति अश्वरथेन्द्राः अथवा इन्द्राश्वरथाः।

२ समान अक्षरों वाली ऋतुओं और नक्षत्रों का क्रम से समास होता है कोई भी शब्द आगे पीछे नहीं हो सकता। यथा—

हेमन्तश्च शिशिरश्च वसन्तश्चेति हेमन्त शिशिर वसन्तोः।
अपवाद—ग्रीष्मवसन्तौ इन में अक्षर समान नहीं हैं अतः क्रम भंग से समास हुआ।
नक्षत्र—कृत्तिका च रोहिणी चेति कृत्तिका रोहिण्यौ।
वर्णों का भी क्रम से समास होता है।

यथा—ब्राह्मणक्षत्रिय विट् शूद्राः=ब्राह्मणश्च क्षत्रियः च विट्च शूद्रश्चेति ।

बड़ा भाई भी समास में पूर्व होता है ।
यथा—युधिष्ठिरार्जुनौ=युधिष्ठरश्च अर्जुनश्चेति ।
दुर्योधन दुःशासनौ ।
अकारान्त पद भी पूर्व रहता है (अल्पाच्तरम्)
शिवश्च केशवश्चेति शिव केशवौ ।

२ समाहार द्वन्द्व वह है—जिसमें पदों के सम्मिलित अर्थ की प्रधानता रहती है । यथा—देह के अंग, सेना के अंग, शाश्वतिक (नित्य) विरोधी, वाद्यांग (बाजों के अंग) क्षुद्रजन्तु इनमें यह समाहारद्वन्द्व होता है और अन्त में नपुंसक लिंग का एक वचन रहता है ।
देह के अंग—पाणी च पादौचेति=पाणिपादम ।
दन्ताः ओष्ठौ चेति दन्तोष्ठम् ।
सेना के अंग—रथिकाश्च अश्वारोहाश्चेति रथिकाश्वरोहम ।
गजारोहाः अश्वारोहाश्चेति गजाश्वारोहम् ।
जन्म-शत्रु—काकश्च उलूकाश्चेति काकोलूकौ ।
अहिनकुलम्=अहिश्च नकुलश्चेति ।
बाजों के अंग—भार्दङ्गिकाश्च पाणविकाश्चेति मार्दङ्गिक पाणविकम ।

क्षुद्रजन्तु—यूकाः च लिक्षाः च यूकालिक्षम ।
नदियों के नाम—गंगा शोणम गंगा च शोण श्चेति

एक शेषद्वन्द्व—जहां दो पदों में एक पद ही शेष रहे ।
यथा—माता च पिता चेति पितरौ (पितामात्रा)

माता और पिता में से पिता ही शेष रह जाता है।
इसी प्रकार अन्य शब्दों से एक शेष द्वन्द्व में पुलिंग ही शेष रह जाता है। यथा—भ्राता च स्वसा चेति भ्रातरौ। दुहिता पुत्रश्च=पुत्रौ, श्वश्रूः च श्वसुरः च श्वशुरौ।
(पुमान् स्त्रिया) स्त्रीलिंग के साथ पुलिंग ही रह जाता है।
यथा—हंसी च हंसः च हंसौ।

अभ्यास

१ समास और विग्रह किसे कहते हैं सोदाहरण लिखो।

२ अव्ययी भाव और बहुव्रीहि का लक्षण लिखकर उदाहरण भी दो।

३ द्वन्द्व और तत्पुरुष के कितने भेद हैं। प्रत्येक भेद का लक्षण उदाहरण भी लिखिये।

४ कर्मधारय और तत्पुरुष,
कर्मधारय और द्विगु
इन में अन्तर स्पष्ट करो।

५ निम्नलिखित समस्त पदों में विग्रह सहित समासों के नाम लिखो :—आजन्म, परोक्षम्, कृष्णार्पणम्, गंगाजलम्, नीलोत्पलम्, भवसागरः, त्रिलोकी, अष्टाध्यायी, पितरौ, यूकालिक्षम्, अहिनकुलम्, महाबाहुः, घनश्यामः, रामलक्ष्मणौ, प्रतिदिनम्।

६ निम्नलिखित विग्रह-युक्त शब्दों से समस्त पद लिखो।
नरः सिंह इव, अक्ष्णोः प्रति, आतपे शुष्कः, महान् राजा,

पंचानां पात्राणां समाहारः, पटश्च घटश्च, दीर्घौ बाहू यस्यसः, न सत्यम् , युधि स्थिरः, मार्जाराः भूषिकाश्च।

७ संस्कृत में अनुवाद करो :-

राजा का सेवक इधर आयेगा।

मैं जीवनभर दुःखों को सहता आया हूँ।

इस सरोवर में बहुत से रक्त कमल हैं।

सौ वर्षों में ही बड़ा भारी परिवर्तन हुआ है।

सीता राम का जीवन आदर्श है।

बड़ी बाहों वाला अर्जुन श्रीकृष्ण का मित्र था।

मेरा धन किसी देवता के लिये अर्पण है ?

प्रतिदिन वस्तुयें चढ़ती जा रही हैं।

मैं अति शीघ्र ऋण से मुक्ति पा लूंगा।

कोई पुरुष अपनी बात का पक्का होता है।

चक्रपाणि भगवान् को देखकर राक्षस दूर भाग जाते हैं और अच्छे लोग सुखी रहते हैं।

कुकर्मों से कभी शुभ फल नहीं मिलता।

जाओ अपने मित्रों से मिलो ?

धातु-क्रिया-प्रकरण

धातु—क्रिया के मूल रूप को धातु कहते हैं।

किसी भी वाक्य में क्रिया द्वारा ही अर्थ पूर्ण होता है। एक धातु से क्रिया विभक्ति प्रयोग से कितने ही भिन्न २ क्रिया रूप हो जाते हैं। जिन का काल, पुरुष, वचनों के आधार पर प्रयोग होता है।

धातुओं से ही प्रत्यय जोड़ कर कितने अन्य संज्ञादि शब्दों का निर्माण होता है।

धातुओं से जो प्रत्यय लगाये जाते हैं, उन्हें तिङ् आदि कहते हैं अतः क्रिया को तिङन्त कहते हैं।

काल (Tenses) जिससे क्रिया के होने का समय सूचित हो। मुख्य रूप से काल तीन प्रकार के हैं। भूत, वर्तमान और भविष्यत्। कालों के भिन्न २ रूपों को संस्कृत में लकार कहते हैं। ये संस्कृत में दस है।

१ लट् (Present Tense) वर्तमान।

२ लिट् (Perfect past) पूर्णभूत।

३ लुट् (Simple future) सामान्य भविष्यत्।

४ लुट् (Perfect future) पूर्ण भविष्यत् ।

५ लेट् इसका प्रयोग वेद में होता है ।
(एषु पंचमो लकारः छन्दोमात्र गोचरः)

६ लोट् (Inperative mood) आज्ञा ।

७ लिङ् (Potential mood) विधि आज्ञा निमन्त्रण आमन्त्रण आदि ।

८ आशीलिंङ् (Benedictive mood) केवल आशर्वाद में आता है ।

९ लुङ् (Norist) सामान्यभूतार्थ ।

१० लङ् (Imperfect) अपूर्णभूत ।

११ लृङ् (Conditional) क्रिया असिद्धि द्योतक ।

प्रत्येक लकार में तीन पुरुष होते हैं ।

१ प्रथम पुरुष—जिसके लिये बात की जाय यथा—सः तौ ते (वह) (वेदो) (वे सब) ।

२ मध्यम पुरुष जिससे बात की जाय—त्वम् (तू) इत्यादि ।

३ उत्तमपुरुष—जो अपने लिये आता है—अहम् (मैं) ।

वचन—वह है जो संख्या बतलाता । है कि वस्तु एक है, दो हैं या इससे भी अधिक । एक वचन—एक के लिये द्विवचन दो के लिये और बहुवचन दो से अधिक के लिये आता है ।

गण—समूह या वर्ग का नाम है जिन धातुओं में रूप की समानता होती है वे किसी एक गण में रखी जाती हैं—जैसे भ्वादिगण की धातुयें इत्यादि । गणों की संख्या दस है—

१ भ्वादि, २ अदादि, ३ जुह्वोत्यादि, ४ दिवादि, ५ स्वादि ६ तुदादि, ७ रुधादि, ८ तनादि, ६ क्रयादि, १० चुरादि।

व्यवहार में पांच गण ही आते हैं शेष गणों का प्रयोग लोगों ने घटा दिया है। जैसे लिट्, लुङ् का काम भी लङ् से लेते हैं। भविष्यत् में लुट् के स्थान पर लृट् ही रखा जाता है।

लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ्, लृट् के प्रत्यय।

'धातुयें तीन प्रकार की हैं—१ परस्मैपदी। २ आत्मनेपदी। ३ उभयपदी।

परस्मैपदी धातुओं के प्रत्यय

लट्

	एकवचन	द्विवचन	वहुवचन
प्रमथ पुरुष —	ति (तिप्)	तः (तस्)	अन्ति (न्ति)
मध्यमपुरुष	सि सिप्)	थः (थस्)	थ
उत्तमपुरुष	मि (मिप्)	वः (वस्)	मः (मस्)

लोट्

प्र० पु०	तु	ताम्	अन्तु
म० पु०	हि	तम्	त
उ० पु०	आनि	आव	आम

विधिलिङ्

प्र० पु०	इत्	इताम्	इयुः।
म० पु०	इः	इतम्	इत।
उ० पु०	इयम्	इव	इम।

लङ्

प्र० पु०	त्	ताम्	अन् ।
म० पु०	:	तम्	त ।
उ० पु०	अम्	व	भ ।

लृट्

प्र० पु०	स्यति	स्यतः	स्यन्ति ।
म० पु०	स्यसि	स्यथः	स्यथ ।
उ० पु०	स्यामि	स्यावः	स्यामः ।

आत्मने पदी प्रत्यय

लट्

	एक वचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	ते (ता)	इते (तां)	अन्ते (झ)
म० पु०	से (थास्)	इथे (आथाम्)	ध्वे (ध्वम्)
उ० पु०	इ (इट्)	वहे (वहि)	महे (महिङ्)

लोट्

प्र० पु०	ताम्	इताम्	अन्ताम् ।
म० पु०	स्व	इथाम्	ध्वम् ।
उ० पु	ऐ	आवहे	आमहे ।

विधि लिङ्

प्रथम पुरुष	ईत	ईयाताम्	ईरन् ।
म० पु०	ईथाः	ईयाथाम्	ईध्वम्
उ० पु०	ईय	ईवहि	ईमहि ।

लङ्

प्र० पु०	त	इताम्	अन्त
म० पु०	थास्	इथाम	ध्वम्
उ० पु०	ए	वहि	महि

लृट्

प्र० पु०	स्यते	स्येते	स्यन्ते।
म० पु०	स्यसे	स्येथे	स्यध्वे
उ० पु०	स्ये	स्यावहे	स्यामहे

साम्यन्य रूप से जहां कर्ता में क्रिया फल रहे और धातु स्वरितेत और ञित् हो वहां आत्मने पद होता है। (स्वरित ञितः कर्त्रभिप्राये क्रिया फले)

आत्मने पद—कर्ता में क्रिया फल न रहने पर परस्मैपद होता है (शेषात् कर्तरि परस्मै पदम्) तिप् तस् झि आदि प्रत्यय परस्मैपदी होते हैं (लः परस्मैपदम्)।

ति तः अन्ति आदि अन्त में होने पर धातुयें क्रिया कहलाती हैं। सकर्मक अकर्मक क्रियाओं के दो मुख्य भेद हैं। सकर्मक क्रियायें कर्म सहित होती हैं उनमें क्रिया का फल कर्ता से चल कर कर्म पर पड़ता है यथा—रामः ग्रामं गच्छति इसमें गच्छ् धातु का फल ग्राम पर पड़ा है।

अकर्मक क्रियाओं का फल अपने भीतर रहता है। यथा—लज्जा, सत्ता, स्थिति, जागरण, वृद्धि, क्षय, भय, जीवित, मरण आदि अर्थों वाली क्रियायें अकर्मक होती हैं यथा—नारी

सर्वेभ्यः लज्जते । बालः, शेते इनमें क्रिया फल कर्ता में ही रहता है अतः ये अकर्मक हैं। ३ द्विकर्मक—जिसमें दो कर्म हों यथा—सः मां गीतां पाठयति। अहं त्वां पुस्तकं दर्शयामि ।

भ्वादि—गण में भू आदि धातुयें आती है,

इनसे मध्य में शप् (अ) का प्रयोग होता है ।

भू (होना-सत्ता)

लट् (वर्तमान)

	एक वचन	द्विवचन	वहुवचन
प्रथम पुरुष	भवति (होता है)	भवतः (दो होते हैं)	भवन्ति (सब होते हैं)
मध्यम पुरुष	भवसि तु (होते हो)	भवथः (दो होते हो)	भवथ (सब होते हो)
उत्तम पुरुष	भवामि (होता हूँ)	भवावः (दो होते हैं)	भवामः (सब होते हैं)

लङ्—भूत

प्रथम पुरुष	अभवत् (हुआ)	अभवताम (दो हुए)	अभवन् (सब हुए)
मध्यम पुरुष	अभवः (हुआ)	अभवतम् (दो हुए)	अभवत (सब हुए)
उत्तम पुरुष	अभवम् (हुआ)	अभवाव (दो हुए)	अभवाम (सब हुए)

विधि लिङ् (आज्ञा संभावना निमंत्रण आदि)

प्रथम पुरुष	भवेत्	भवेताम्	भवेयुः ।
मध्यमपुरुष	भवेः	भवेतम	भवेत ।
उत्तक पुरुश	भवेयम्	भवेव	भवेम ।

लृट् भविष्यत्

प्रथम पुरुष	भविष्यति	भविष्यतः	भविष्यन्ति ।
मध्यम पुरुष	भविष्यसि	भविष्यथः	भविष्यथ ।
उत्तम पुरुष	भविष्यामि	भविष्यावः	भविष्याः ।

कृदन्त प्रत्यय—भू—क्त्वा (त्वा)=भूत्वा (होकर)

भू (प्रेरणार्थक) , तुमुन (तुम्)=भवितुम (होने के लिये)

भावयति । ,, क्त (त) भूत (हुआ)

भाववाच्य—भूयते शतृ (अत्—न) भवन (होता हुआ)

तव्यत् (तव्य) भवितव्य (होना चाहिए)

अनीयर (अनीय) भवनीय (,, ,,)

यत् य—भाव्यम ।

एध् (बढ़ना) लट्

प्र० पु०	एधते	एधेते	एधन्ते
म० पु०	एधसे	एधेथे	एधध्वे ।
उत्तम पु०	एधे	एधावहे	एधामहे ।

लोट्

प्र० पु०	एधताम्	एधेताम्	एधन्ताम ।
म० पु०	एधस्व	एधेथाम	एधध्वम ।
उ० पु०	एधै	एधावहै	एधामहै ।

लङ्

प्र० पु०	ऐधत	ऐधेताम्	ऐधन्त ।
म० पु०	ऐधथाः	ऐधेथाम्	ऐधध्वम् ।
उ० पु०	ऐधे	ऐधावहि	ऐधामहि

विधिलिङ्

प्र० पु०	एधेत	एधेयाताम्	एधेरन् ।
म० पु०	एधेथाः	एधेयाथाम्	एधेध्वम् ।
उ० पु०	एधेय	एधेवहि	एधेमहि ।

लृट्

प्र० पु०	एधिष्यते	एधिष्येते	एधिष्यन्ते ।
म० पु०	एधिष्यसे	एधिष्येथे	एधिष्यध्वे ।
उ० पु०	एधिष्ये	एधिष्यावहे	एधिष्यामहे

प्रेरणार्थक एधयति । क्तान्त=एधित

'क्त्वान्त=एधित्वा, तुमुन् एधितुम्, तव्यत् अनीयर एधितव्य, एधनीय । शानच् एधमान

भाववाच्य—एध्यते ।

गम् (गच्छ्) जाना

लट्

प्रथम पुरुष	गच्छति	गच्छतः	गच्छन्ति ।
मध्यम पुरुष	गच्छसि	गच्छथः	गच्छथ ।
उत्तम पुरुष	गच्छामि	गच्छावः	गच्छामः ।

लोट्

प्र० पु०	गच्छतु	गच्छताम	गच्छन्तु ।
म० पु०	गच्छ	गच्छतम्	गच्छत ।
उ० पु०	गच्छानि	गच्छाव	गच्छाम ।

लङ्

प्रथम पु०	अगच्छत्	अगच्छताम्	अगच्छन्
मध्यम पु०	अगच्छः	अगच्छतम्	अगच्छत ।
उत्तम पु०	अगच्छम	अगच्छाव	अगच्छाम ।

विधिलिङ्

प्र० पु०	गच्छेत्	गच्छेताम	गच्छेयुः ।
म० पु०	गच्छेः	गच्छेतम्	गच्छेत ।
उ० पु०	गच्छयम्	गच्छेव	गउछेम

लृट्

प्र० पु०	गमिष्यति	गमिष्यतः	गमिष्यन्ति ।
म० पु०	गामष्यसि	गमिष्यथः	गमिष्यथ ।
उ० पु०	गमिष्यामि	गमिष्यावः	गमिष्यामः ।
	णिजन्त	गमयति	गामयते ।

क्त=गतः, क्तवत्—गतवान्, क्त्वा-गत्वा

तुमुन्=न्तुम् । शतृ=गच्छत्—न

तव्यत् गन्तव्य, अनीयर्=गमनीय ।

उपसर्ग प्रयोग कर्मवाच्य गम्यते

आगम् आना । अनुगम्=पीछे जाना

अन्वगच्छत्, अवगम = जानना।
अवगन्तुम्।
अधिगम् प्राप्त करना अध्यगच्छत्।
निर्गम् निकलना — निर्गच्छति।

स्था (तिष्ठ्) ठहरना

प्र० पु०	तिष्ठति	तिष्ठतः	तिष्ठन्ति।
म० पु०	तिष्ठसि	तिष्ठथः	तिष्ठथ।
उ० पु०	तिष्ठामि	तिष्ठावः	तिष्ठामः।

लोट्

प्र० पु०	तिष्ठतु	तिष्ठताम्	तिष्ठन्तु।
म० पु०	तिष्ठ	तिष्ठतम्	तिष्ठत
उ० पु०	तिष्ठानि	तिष्ठाव	तिष्ठाम।

लङ्

प्र० पु०	अतिष्ठत्	अतिष्ठताम्	अतिष्ठन्।
म० पु०	अतिष्ठः	अतिष्ठतम्	अतिष्ठत।
उ० पु०	अतिष्ठम्	अतिष्ठाव	अतिष्ठाम।

विधि लिङ्

प्र० पु०	तिष्ठेत्	तिष्ठेताम्	तिष्ठेयुः।
म० पु०	तिष्ठेः	तिष्ठेतम्	तिष्ठेत।
उ० पु०	तिष्ठेयम्	तिष्ठेव	तिष्ठेम।

लृट्

प्र० पु०	स्थास्यति	स्थास्यतः	स्थास्यन्ति ।
म० पु०	स्थास्यसि	स्थास्यथः	स्यास्यथ ।
उ० पु०	स्थास्यामि	स्थास्यावः	स्थास्यामः ।

भरक वाच्य स्थीयते

क्त स्थित, तुमुन्=स्थातुम, क्त्वा=स्थित्वा,
शतृ=तिष्ठत्—न् तव्यत्=स्थातव्य,
अनीयर=स्थानीय ।

णिजन्त—स्थापयति

उपसर्ग प्रयोग—प्र+स्था चल पड़ना ।
उद्+स्था उत्तिष्ठति खड़ा होता है ।
उप+स्था निकट आना उपतिष्ठति ।

दृश् (पश्म्) देखना

लट्

प्र० पु०	पश्यतु	पश्यताम्	पश्यन्तु ।
म० पु०	पश्य	पश्यतम्	षश्यत ।
उ० पु०	पश्यानि	पश्याव	पश्याम ।

लङ्

प्र० पु०	अपश्यत्	अपश्यताम्	अपश्यन् ।
म० पु०	अपश्यः	अपश्यतम्	अपश्यत ।
उ० पु०	अपश्यम्	अपश्याव	अपश्याम ।

विधि लिङ्

प्र० पु०	पश्येत्	पश्येताम्	पश्येयुः ।
म० पु०	पश्येः	पश्येतम्	पश्येत ।
उ० पु०	पश्येयम्	पश्येव	पश्येम ।

लृट्

प्र० पु०	द्रक्ष्यति	द्रक्ष्यतः	द्रक्ष्यन्ति ।
म० पु०	द्रक्ष्यसि	द्रक्ष्यथः	द्रक्ष्यथ ।
उ० पु०	द्रक्ष्यामि	द्रक्ष्यावः	द्रक्ष्यामः ।

णिजन्त—दर्शयति—दर्शयते । कर्मवाच्य

दृश्यते क्तान्त—दृष्ट तुमुन् द्रष्टुम,

क्तवत् दृष्टवान् ।

तव्यत्=द्रष्टव्य, अनीयर् दर्शनीय ।

क्त्वा दृष्ट्वा ।

उपसर्ग प्रयोग

प्र+दृश्—प्रदर्शन करना । प्रदर्शयति ।

आ+दृश्—आदर्श दिखाना—आदर्शयति ।

सम+दृश्—भली प्रकार दिखाना संदर्शयति ।

स्मृ स्मस्मर्—स्मरण करना

प्र० पु०	स्मरति	स्मरतः	स्मरन्ति
म० पु०	स्मरसि	स्मैरथः	स्मरथ ।
उ० पु०	स्मरामि	स्मरावः	स्मरामः ।

लोट्

प्र० पु०	स्मरतु	स्मरताम्	स्मरन्तु
म० पु०	स्मर	स्मरतम्	स्मरत।
उ० पु०	स्मराणि	स्मराव	स्मराम।

लङ्

प्र० प०	अस्मरत्	अस्मरताम्	अस्मरन्
म० प०	अस्मरः	अस्मरतम्	अस्मरत
म० प०	अस्मरम्	अस्मराव	अस्मराम।

विधिलिङ्

प्र० प०	स्मरेत्	स्मरेताम्	स्मरेयुः।
म० प०	स्मरेः	स्मरेतम्	स्मरेत।
उ० प०	स्मरेयम	स्मरेव	स्मरेम।

लृट्

प्र० प०	स्मरिष्यति	स्मरिष्यतः	स्मरिष्यन्ति।
म० प०	स्मरिष्यथः	स्मरिष्यथ	स्मरिष्यथ।
उ० प०	स्मरिष्यामि	स्मरिष्यावः	स्मरिष्यामः।

कर्मवाच्य—स्मर्यते

णिजन्त—स्मारयति, क्त-स्मृत क्तवत् स्मृतवान्

क्त्वा=स्मृत्वा, शतृ=स्मरत्-न्

तव्यत् स्मर्तव्य, अनीयर् स्मरणीय।

तुमुन्—स्मर्तुम।

उपसर्ग—प्रयोग—सम्+स्मृ=संस्मरति । भली प्रकार
स्मरना' वि+स्मृ जाना विस्मरति।
इसी प्रकार स्था (तिष्ठ्) पा (पिब्)
जि (जय्) इम, पठ्, पच्, रच्,
वद्, नम, भ्रमु (भ्रमण करना) भ्रमति
इत्यादि (भ्राम्यति इति दिवादिगण)
घ्रा (जिघ्र) सूंघना। वस्, भज् (सेवा करना)
भजसि—लृट् भक्ष्यति, दह्=भस्म करना।
त्यज् (हानि होना या छोड़ना) लृट् त्यक्ष्यति।
नम—नम्र होना. तृ=तैरना, सृ=सरकना—चलना, सरति,
सरतु, असरत्, सरेत्, सरिष्यति ऋच्छ्=चलना
ऋच्छति, ऋच्छतु, अरिष्यति,

आर्षीत्, अर्यात्

हृञ्=हरणे—हरति, हरतु, हरेत्, हरिष्यति, अहरत्।
बुध्=अवगमने, बोधति, बोधतु, अबोधत् बोधिष्यति,
अबोधत्।

अञ्चु—गतौ—अञ्चति, अञ्चतु, अञ्चेत्, याचनेच।
अञ्चिष्यति, आञ्चत्।
धाव् (दौड़ना) पत्=गिरना।
खाद् (खाना) दा (यच्छ्) यच्छति, यच्छतु, अयच्छत्,
यच्छेत्, दास्यति।
वाच्छ्=चाहना अर्ज्=कमाना।
अर्च=पूजना—सृ=सरकना।

लभ् पाना आत्मनेपद

लट्

प्र० प०	लभते	लभेते	लभन्ते।
म० प०	लभसे	लभेथे	लभध्वे।
उ० प०	लभे	लभावहे	लभामहे।

लोट्

प्र० प०	लभताम्	लभेताम्	लभन्ताम्।
म० प०	लभस्व	लभेथाम्	लभध्वम्
उ० प०	लभै	लभावहै	लभामहै।

लङ्

प्र० प०	अलभत	अलभेताम्	अलभन्त।
म० प०	अलभथाः	अलभेथाम्	अलभध्वम्
उ० प०	अलभे	अलभावहि	अलभामहि।

विधिलिङ्

प्र० प०	लभेत	लभेयाताम्	लभेरन्।
म० प०	लभेथाः	लभेयाथाम्	लभेध्वम्।
उ० प०	लभेय	लभेवहि	लभेमहि।

लृट्

प्र० प०	लप्स्यते	लप्स्येते	लप्स्यन्ते।
म० प०	लप्स्यसे	लप्स्येथे	लप्स्यध्वे।
उ० प०	लप्स्ये	लप्स्यावहे	लप्स्यामहे।

णिजन्त—लम्भयति—लम्भयति ।

कर्म वाच्य—लभ्यते ।

क्तान्त—लब्ध क्तवतु—लब्धवान्

तुमुन—लब्धुम्, शानच् लभमान,

तव्य—लब्धव्य, अनीयर् लम्भनीय ।

इसी प्रकार—ये धातुयें हैं ।

मुद्=प्रसन्न होना ।

वृत्=होना वर्तते—

ईक्ष्=देखना ।

वृधु (वर्ध)=बढ़ना ।

सह्=सहना ।

शिक्ष्=सीखना शिक्षते, शिक्षताम्,

श्लघ् श्लाघ् श्लाघते ।

यत=यत्न करना—यतते ।

भाष्=बोलना भाषते ।

कम्प्=कांपना—कम्पते ।

उभयपदी धातुयें ।

नी ले जाना परस्पैपद

लट्

प्रथम पुरुष	नयति	नयतः	नयन्ति ।
मध्यम पुरुष	नयसि	नयथ	नयथ ।
उत्तम पुरुष	नयामि	नयावः	नयाभः ।

लोट्

प्र० प०	नयतु	नयताम्	नयन्तु
म० प०	नय	नयतम्	नयत
उ० प०	नयानि	नयाव	नयाम ।

लङ्

प्र० प०	अनयत्	अनयताम्	अनयत्
म०प०	अनयः	अनयतम्	अनयत
उ० प०	अनयम्	अनयाव	अनयाम ।

विधि लिङ्

प्र० प०	नयेत्	नयेताम्	नयेयुः
म० प०	नयेः	नयेतम्	नयेत ।
उ० प०	नयेयम्	नयेव	नयेम ।

लृट्

प्र० प०	नेष्यति	नेष्यतः	नेष्यन्ति ।
म० प०	नेष्यसि	नेष्यथः	नेष्यथ ।
उ० प०	नेष्यामि	नेष्यावः	नेष्यामः ।

आत्मने पद

लट्

प्र० प०	नयते	नयेते	नयन्ते ।
म० प०	नयसे	नयेथे	नयध्वे
उ० प०	नये	नयावहे	नयामहे ।

लोट्

प्र० पु०	नयताम्	नयेताम	नयताम् ।
म० पु०	नयस्व	नयेथाम्	नयध्वम्
उ० पु०	नयै	नयावहै	नयायहै ।

लङ्

प्र० पु०	अनयत्	अनयेताम्	अनयन्त
म० पु०	अनयथाः	अनयेथाम्	अनयध्वम्
उ० पु०	अनये	अनयावहि	अनयामहि ।

विधि लिङ्

प्र० पु०	नयेत	नयेयाताम्	नयेरन्
म० पु०	नयेथाः	नयेयाथाम्	नयेध्वम्
उ० पु०	नयेय	नयेवहि	नये महि ।

लृट्

प्र० पु०	नेष्यते	नेष्येते	नेष्यन्ते ।
म० पु०	नेष्यसे	नेष्येथे	नेष्यध्वे
उ० पु०	नेष्ये	नेष्यावहे	नेष्यामहे ।

इसी प्रकार—

रंज् रंगना प्रसन्न करना ।

बुध्—जानना ।

वह्—उठाना ।

हृ—हरना ।

याच्—मांगना आदि धातुयें उभय पदी हैं।

१ श्रु श्रवणे (सुनना अर्थ में)

लट्

प्र० प०	शृणोति	शृणुतः	शृण्वन्ति।
म० प०	शृणोषि	शृणुथः	शृणुथ।
उ० प०	शृणोमि	शृणुवः शृण्वः	शृणुमः-शृण्मः

लोट्

प्र० प०	शृणोतु	शृणुताम्	शृण्वन्तु।
म० प०	शृणु	शृणुतम्	शृणुत।
उ० प०	शृणवानि	शृणवाव	शृणवाम।

लङ्

प्र० प०	अशृणोत्	अशृणुताम्	अशृण्वन्।
म० प०	अशृणोः	अशृणुतम्	अशृणुत।
उ० प०	अशृणवम्	अशृणुव	अशृणुम

विधिलिङ्

प्र० प०	शृणुयात्	शृणुयाताम्	शृणुयुः।
म० प०	शृणुयाः	शृणुयातम्	शृणुयात्।
उ० प०	शृणुयाम्	शृणुयाव	शृणुयाम।

---

१ श्रुवः शृ च—श्रु धातु से शप् (अ) के स्थान पर (श्नु) (नु) होता है और श्रु को 'शृ' हो जाता है। भ्रम वश लोग इसे विकरण देखकर स्वादिगण में मानते हैं।

लृट्

प्र० प०	श्रोष्यति	श्रोष्यतः	श्रोष्यन्ति ।
म० पु०	श्रोष्यसि	श्रोष्यथः	श्रोष्यथ ।
उ० पु०	श्रोष्यामि	श्रोष्यावः	श्रोष्यामः ।

णिजन्त श्रावयति । क्तान्त—श्रुत,
कर्मवाच्य—श्रूयते । क्तवत्—श्रुतवत्
तव्यत्—श्रोतव्य, अनीयर्—श्रवणीय,
शतृ—शृण्वत्, क्त्वा—श्रुत्वा ।
तुमुन्—श्रोतुम् ।
उपसर्गान्त रूप—प्रति+श्रु प्रतिज्ञा करना ।
आ+शृणोति, संशृणोति=भली प्रकार सुनता है ।

अभ्यास

१ भ्वादिगण में कौन सा विकरण चिन्ह है स्पष्ट करो ।
२ कुछ मुख्य अकर्मक धातुयें लिखो ।
३ परस्मैपद और आमने पद का अन्तर स्पष्ट करो ।
४ द्विकर्मक धातु से क्या अभिप्राय है सोदाहरण लिखो ।
५ गण और लकार कितने हैं उनका नाम निर्देश भी करो ।

संस्कृत में अनुवाद करो :—

मेरी जाति बढ़े, मेरी गायें बढ़ें ।
वह पहाड़ पर बकरियां ले जाता है ।
यमराज ने सत्यवान् के प्राण हर लिये ।
सत्य के बल से सूर्य घूमता है (भ्रमति)

आग वन को जलाती है।

वह अपने पुराने धन को पाता है (ऋच्छति)

बालिका पाठशाला में गई।

उन्होंने चलचित्र को देखा।

जब तक वह न आये, तुम यहीं ठहरो।

देखो कहीं गिर न जाना।

जो बाल्यकाल्य में नहीं पढ़ते वे फिर दुःखी होते हैं (सीदन्ति)

तुम्हारे मन के मनोरथ पूर्ण हों।

सन्ध्या तक उसका मार्ग देखो (प्रतीक्षस्व)

कोई आता है और कोई जाता है।

२ अदादिगण

इस गण में अद्, हन्, अस्, दुह् आदि धातुयें हैं। इसमें शप् (अ) का लोप हो जाता है यही इसकी विशेषता है।

अद् भक्षणे (खाना)

लट्

प्र० पु०	अत्ति	अत्तः	अदन्ति।
म० पु०	अत्सि	अत्थः	अत्थ।
उ० पु०	अद्मि	अद्वः	अद्मः।

लोट्

प्र० पु०	अत्तु	अत्ताम्	अदन्तु।

म० प०	अद्धि	अत्तम्	अत्त।
उ० प०	अदानि	अदाव	अदाम।

लङ्

प्र० प०	आदत्	आत्ताम्	आदन्।
म० प०	आदः	आत्तम्	आत्त
म० प०	आदम्	आद्व	आद्म

विधिलिङ्

प्र० प०	अद्यात्	अद्याताम्	अद्युः।
म० प०	अद्याः	अद्यातम्	अद्यात।
उ० प०	अद्याम्	अद्याव	अद्याम

लृट्

प्र० प०	अत्स्यति	अत्स्यतः	अत्स्यन्ति।
म० प०	अत्स्यसि	अत्स्यथः	अत्स्यथ।
उ० प०	अत्स्यामि	अत्स्यावः	अत्स्यामः।

णिजन्त—आदयति—ते कर्मवाच्य—अद्यते। क्तान्त—जग्ध, क्तवत्—जग्धवत्, क्त्वा—जग्ध्वा, तुमुन्—अत्तुम्, शतृ—अदत्, तव्यत्—अत्तव्य, अनीयर्—अदनीय।

अस् (होना)

लट्

प्र० पु०	अस्ति	स्तः	सन्ति

म० पु०	असि	स्थः	स्थ
उ० पु०	अस्मि	स्वः	स्मः ।

लोट्

प्र० पु०	अस्तु-स्तात्	स्ताम्	सन्तु
म० पु०	एधि-स्तात्	स्तम	स्त
उ० पु०	असानि	असाव	असाम ।

लङ्

प्र० पु०	आसीत्	आस्ताम्	आसन् ।
म० पु०	आसीः	आस्तम्	आस्त ।
उ० पु०	आसम	आस्व	आस्म ।

विधिलिङ्

प्रथम पु०	स्यात्	स्याताम	स्युः ।
मध्यम पु०	स्याः	स्यातम्	स्यात ।
उत्तम पु०	स्याम्	स्याव	स्याम ।

लृट्

प्रथम पुरुष	भविष्यति	भविष्यतः	भविष्यन्ति ।
मध्यम पुरुष	भविष्यसि	भविष्यथः	भविष्यथ ।
उत्तम पुरुष	भविष्यामि	भविष्यावः	भविष्यामः

णिजन्त—भावयति—भावयते ।

कर्मवाच्य—भूयते । क्त—भूत ।

क्तवतु—भूतवत् । क्त्वा—भूत्वा,

तुमुन—भवितुम् । तव्यत्—भवितव्य ।
अनीयर्—भवनीय, शतृ—सन्,
क्त्वा—भूत्वा । तुमुन्—भवितुम् ।

हन् धातु (मारना) हन हिंसा गत्यो:

लट्

प्र० पु०	हन्ति	हतः	घ्नंति ।
म० पु०	हंसि	हथः	हथ ।
उ० पु०	हन्मि	हन्वः	हन्मः

लोट्

प्र० पु०	हन्तु	हताम्	घ्नन्तु
म० पु०	जहि	हतम्	हत ।
उ० पु०	हनानि	हनाव	हनाम ।

लङ्

प्र० पु०	अहन्	अहताम्	अघ्नन् ।
म० पु०	,,	अहतम	अहत ।
उ० पु०	अहनम	अहन्व	अहन्म ।

विधिलिङ्

प्र० पु०	हन्यात्	हन्याताम	हन्युः ।
म० पु०	हन्याः	हन्यातम	हन्यात ।
उ० पु०	हन्याम्	हन्याव	हन्याम ।

लृट्

प्र० प०	हनिष्यति	हनिष्यतः	हनिष्यन्ति।
म० प०	हनिष्यसि	हनिष्यथः	हनिष्यथ।
उ० पु०	हनिष्यामि	हनिष्यावः	हनिष्यामः

णिजन्त—घातयति—घातयते। कर्मवाच्य—हन्यते।
क्तान्त—हत, तुमुन्नन्त—हन्तुम्, क्त्वान्त—हत्वा।
तव्यत्—हन्तव्य, अनीयर् हननीय।
शतृ—घ्नत्।
उपसर्ग—प्रयोग—निहतः=भली प्रकार मारा।
निहतः,

जागृ (निद्राक्षय होने में)

लट्

प्र० पु०	जागर्ति	जागृतः	जाग्रति।
म० पु०	जागर्षि	जागृथः	जागृथ
उ० पु०	जागर्मि	जागृवः	जागृमः

लोट्

प्र० पु०	जागर्तु	जागृताम्	जाग्रतु।
म० पु०	जागृहि	जागृतम्	जागृत।
उ० पु०	जागराणि	जागराव	जागराम।

लङ्

प्र० पु०	अजागः	अजागृताम्	अजागरुः

म० पु०	,,	अजागृतम्	अजा गृत
उ० पु०	अजागरम्	अजागृव	अजागृम ।

विधि लिङ्

प्र० पु०	जागृयात्	जागृयाताम्	जागृयुः ।
म० पु०	जागृयाः	जागृयातम्	जागृयात ।
उ० पु०	जागृयाम्	जागृयाव	जागृयाम ।

लृट्

प्रथम पुरुष	जागरिष्यति	जागरिष्यतः	जागरिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	जागरिष्यसि	जागरिष्यथः	जागरिष्यामः ।
उत्तम पुरुष	जागरिष्यामि	जागरिष्यावः	जागरिष्यः

प्रेरणार्थक जागरयति । भाववाचक—जागर्यते ।

क्त —जागरितः—क्तवतु—जागरितवान् ।

क्त्वा —जागरित्वा, तुमुन्—जागरितुम ।

शतृ—जाग्रत् तव्य—जागरितव्य ।

अनीयर्—जागरणीय ।

उपसर्गान्त प्र+जागृ=विशेष जागरण

वि+जागृ ,,

इसी प्रकार

शासु=अनुशिष्टौ—अनुशासन करना ।

शास्त, शास्तु, अशात्-दू-शिष्यात्,

शासि ष्यति ।

दरिद्रा दुर्गतौ (बुरी दशा में)

सस्ति स्वप्ने (स्वप्ने में)

श्वस् प्राणने (सांस लेने में)
अन् ,, (,,)
ञिष्वपूशये (स्वप्) (सोने में)
मृजू—शुद्धौ (शुद्ध करने में)
रुदिर् (रुद्) अश्रु विमोचने (आंसू बहाने में)
इण् (इ) गतौ (चलने में)
विद् ज्ञाने (ज्ञान करने में)

विद् लट्

प्र० पु०	वेत्ति-वेद	वित्तः-विदतुः	विदन्ति-विदुः
म० पु०	वेत्सि-वेत्थ	वित्थः-विदथुः	वित्थ-विद
उ० पु०	वेद्मि-वेद	विद्वः--विद्व	विद्मः-विद्म

लोट्

प्र० पु० वेत्तु विदांकरोतु वित्ताम विदांकुरुताम विदांकुर्वन्तु विदन्तु
म० पु० विद्धि विदांकुरु वित्तम विदांकुरुतम वित्त विदांकुरुत
उ० पु० वेदानि विदांकरवाणि वेदाव विदांकरवाव
विदांकरवाम वेदाम

लङ्

प्र० पु०	अवेत्-द्	अवित्ताम्	अविदुः ।
म० पु०	अवेः ,,	अवित्तम्	अवित्त
उ० पु०	अवेदम	अविद्व	अविद्म ।

विधि लिङ्

प्र० पु०	विद्यात्	विद्याताम	विद्यु: ।
म० पु०	विद्या:	विद्यातम	विद्यात।
उ० पु०	विद्याम	विद्याव	विद्याम

लृट्

प्रथम पुरुष	वेदिष्यति	वेदिष्यत:	वेदिष्यन्ति ।
मध्यम पुरुष	वेदिष्यसि	वेदिष्यथ:	वेदिष्यथ ।
उत्तम पुरुष	वेदिष्यामि	वेदिष्याव:	वेदिष्याम:

णिजन्त – वेदयति
कर्मवाच्य—वेद्यते । क्त—विदित, तुमुन्—वेदितु,
क्त्वा—विदित्वा, तव्यत्—वेदिव्यम्
अनीयर् वेदनीय, शतृ—विदत् ।
उपसर्गान्त—आ+विद्—आवेदन, निवेदन
सम्—संवेदन आदि ।

आत्मने पद

आस् उपवेशने (बैठने में)

लट्

प्र० पु०	आस्ते	आसाते	आसते ।
म० पु०	आस्से	आसाथे	आध्वे ।
उ० पु०	आसे	आस्वहे	आस्महे ।

लोट्

प्र० पु०	आस्ताम्	आसाताम्	आसताम्
म० पु०	आस्स्व	आसाथाम्	आध्वम्
उ० पु०	आसै	आसावहै	आसामहै।

लङ्

प्र० पु०	आस्त	आसाताम्	आसत।
म० पु०	आस्थाः	आसथाम्	आध्वम्
उ० पु०	आसि	आस्वहि	आस्महि

विधि लिङ्

प्र० पु०	आसीत	आसीयाताम्	आसीरन्।
म० पु०	आसीथाः	आसीयाथाम्	आसीध्वम्
उ० पु०	आसीय	आसीवाह	आसीमहि

लृट्

प्र० पु०	आसिष्यते	आसिष्येते	आसिष्यन्ते
म० पु०	आसिष्यसे	आसिष्येथे	आसिष्यध्वे
उ० पु०	आसिष्ये	आसिष्यावहे	आसिष्यामहे।

णिजन्त आसयति। भाववाच्य—आस्यते। क्त आसितः, क्त्वा आसित्वा, तुमुन्—आसितुम, शानच्—आसीनः, तव्यत् आसितव्य, अनीयर् =आसनीय

शीङ् स्वप्ने (सोने में)

प्र० पु०	शेते	शयाते	शेरते।

म० पु०	शेषे	शयाथे	शेध्वे।
उ० पु०	शये	शेवहे	शेमहे।

लोट्

प्र० पु०	शेताम	शयाताम्	शेरताम
म० पु०	शेष्व	शयाथाम	शेध्वम
उ० पु०	शयै	शयावहै	शयाभहै।

लङ्

प्र० पु०	अशेत	अशयताम्	अशेरत।
म० पु०	अशेथाः	अशयथाम	अशेध्वम्।
उ० पु०	अशयि	अशेवहि	अशेभहि

विधि लिङ्

प्र० पु०	शयीत	शयीयातम	शयीरन
म० पु०	शयीथाः	शयीयाथाम	शयीध्वम
उ० पु०	शयीय	शयीवहि	शयीभहि

लृट्

प्र० पु०	शयिष्यते	शयिष्येते	शयिष्यन्ते,
म० पु०	शयिष्यसे	शयिष्येथे	शयिष्यध्वे
उ० पु०	शयिष्ये	शाविष्यावहे	शयिष्यामहे

णिजन्त—शाययति, भाववाच्य—शय्यते

क्त शयितः, शानच् शयानः, तुमुन

शयितुम्, क्त्वा—शयित्बा, तव्यत्—शयितव्य,

अनीयर्—शयनीय ।
उपसर्गान्ति अधिशेते, संशेते ।

अधि+इङ् (पढ़ना)

लट्

प्र० पु०	अधीते	अधीयाते	अधीयते ।
म० पु०	अधीषे	अधीयाथे	अधीध्वे ।
उ० पु०	अधीये	अधीवहे	अधीमहे ।

लोट्

प्र० पु०	अधीताम्	अधीयाताम्	अधीयताम् ।
म० पु०	अधीष्व	अधीयाथाम्	अधीध्वम् ।
उ० पु०	अध्ययै	अध्ययावहै	अध्ययामहै ।

लङ्

प्र० पु०	अध्यैत	अध्यैयाताम्	अध्यैयत ।
म० पु०	अध्येथाः	अध्यैयाथाम्	अध्यैध्वम् ।
उ० पु०	अध्यैयि	अध्यैवहि	अध्यैमहि ।

विधिलिङ्

प्र० पु०	अधीयीत	अधियीयाताम्	अधीयीरन् ।
म० पु०	अधीयीथाः	अधियीयाथाम्	अधीयीध्वम् ।
उ० पु०	अधियीय	अधियीवहि	अधीयीमहि ।

लृट्

प्र० पु०	अध्येष्यते	अध्येष्येते	अधेष्यन्ते ।

म० पु०	अध्येष्यसे	अध्येष्येथे	अध्येष्यध्वे ।
उ० पु०	अध्येष्ये	अध्येष्यावहे	अध्येष्यामहे ।

णिजन्त—अध्यापयति, कर्मवाच्य—अधीयते

क्त—अधीतः, क्तवतु—अधीतवत्, क्त्वा—अधीत्य,

तुमुन्—अध्येतुम्, शानच्—अधीयानः, तव्यत्—अध्येतव्यः

अनीयर्—अध्ययनीयः

इसी प्रकार—

ईश् ऐश्वर्ये (संपत्ति होने में)

पिजि वर्णे (रंग होने में)

षूङ्—प्राणिगर्भविमोचने (प्रसव होने में) सूते—

वस् आच्छादने (ओढ़ना)

णिजि शुद्धौ (सफाई करने में)

उभय-पदी—

ब्रू (बोलना) लट्

परस्मैपद

प्र० पु०	ब्रवीति-आह	ब्रूतः-आहतुः	ब्रुवन्ति-आहुः ।
म० पु०	ब्रवीषि-आत्थ	ब्रूथः-आहथुः	ब्रूथ ।
उ० पु०	ब्रवीमि	ब्रूवः	ब्रूमः ।

लोट्

प्र० पु०	ब्रवीतु	ब्रूताम्	ब्रुवन्तु ।
म० पु०	ब्रूहि	ब्रूतम्	ब्रूत ।
उ० पु०	ब्रवाणि	ब्रवाव	ब्रवाम ।

लङ्

प्र० पु०	अब्रवीत्	अब्रूताम्	अब्रुवन्
म० पु०	अब्रवीः	अब्रूतम्	अब्रूत
उ० पु०	अब्रवम्	अब्रूव	अब्रूम

विधिलिङ्

प्र० प०	ब्रूयात्	ब्रूयाताम्	ब्रूयुः ।
म० प०	ब्रूयाः	ब्रूयातम्	ब्रूयात ।
उ० प०	ब्रूयाम्	ब्रूयाव	ब्रूयाम ।

लृट्

प्र० प०	वक्ष्यति	वक्ष्यतः	वक्ष्यन्ति ।
म० प०	वक्ष्यसि	वक्ष्यथः	वक्ष्यथ ।
उ० प०	वक्ष्यामि	वक्ष्यावः	वक्ष्यामः ।

आत्मनेपद —लट्

प्र० प०	ब्रूते	ब्रुवाते	ब्रुवते ।
म० प०	ब्रूषे	ब्रुवाथे	ब्रूध्वे ।
उ० प०	ब्रुवे	ब्रूवहे	ब्रूमहे ।

लोट्

प्र० प०	ब्रूताम्	ब्रुवाताम्	ब्रुवताम् ।
म० प०	ब्रूष्व	ब्रुवाथाम्	ब्रूध्वम् ।
उ० प०	ब्रवै	ब्रवावहै	ब्रवामहै ।

लङ्

प्र० पु०	अब्रूत	अब्रुवाताम	अब्रुवत
म० पु०	अब्रूथाः	अब्रुवाथाम्	अब्रूध्वम् ।
उ० पु०	अब्रूवि	अब्रूवहि	अब्रूमहि ।

विधि लिङ्

प्र० पु०	ब्रुवीत	ब्रुवीयाताम	ब्रुवीरन् ।
म० पु०	ब्रुवीथाः	ब्रुवीयाथाम्	ब्रुवीध्वम ।
उ० पु०	ब्रुवीय	ब्रुवीवहि	ब्रुवीमहि ।

लृट्

प्र० पु०	वक्ष्यते	वक्ष्येते	वक्ष्यन्ते ।
म० पु०	वक्ष्यसे	वक्ष्येथे	वक्ष्यध्वे ।
उ० पु०	वक्ष्ये	वक्ष्यावहे	वक्ष्यामहे ।

णिजन्त—वाचयति । कर्मवाच्य उच्यते ।
क्त उक्तः, क्त्वा—उक्त्वा तुमुन् वक्तुम् ।
शतृ—ब्रुवत् शानच् ब्रुवाणः, तव्यत्—वक्तव्य,
अनीयर् वचनीय ।
इसी प्रकार लिह् चाटना)
परस्मैपद—लेढि, लेढु, अलेट्-ड् आस्वादन करना)
लिह्यात् लेक्ष्यात ।
आत्मने पद—लीढे—लीढाम, अलीढ,
लिहीत, लेक्ष्यते ।
दुह् (दोहना)

दोग्धि, दोग्धु, अधोक्—ग, दुह्यात् धोद्यति ।
आ० प० दुग्धे, दुग्धाम, अदुग्ध, दुहीत धोद्यते ।

स्तु 'प्रशंसा करना'

स्तौति, स्तौतु, अस्तौत् स्तुयात् स्तुवीयात—स्तोष्यति ।
स्तुते, स्तुते, स्तुताम, अस्तुत, स्तुवीत स्तोष्यते ।

अभ्यास

१ अद्धि, जहि, ब्रुहि, आस्स्व, अधीयते, शेष्व, एति, आह, विदु, ब्रुवीत इनके धातु, लकार, पुरुष और वचन का परिचय दो ।

२ ब्रू, स्तु, दुह्, ईश्, इनके लङ्, में रूप लिखो ।

३ विद्, लोट्, में कृधातु सहित रूप लिखो ।

४ अस् का लृट्, शी-विधिलिङ् जागृ—लट् लकार का परिचय दो ।

५ अदादिगण का विकरण क्या है स्पष्ट करो ।

६ संस्कृत में अनुवाद करो :-
वे दो तुम्हारी स्तुति करें ।
हम सब भोजन कर लें ।
परमात्मा हमारे शत्रुओं को मारदे ।
रात को शिशु जागते सोते रहते हैं ।
मैं आचार्य से पणिनि व्याकरण पढ़ता हूँ ।
तुम इस आसन पर बैठ जाओ ।
सेनापति सेना पर शासन करता है (शास्ति) ।
तुम हमारी दशा को जानते हो ।

क्या आज कोई उत्सव है ?
राधा यमुना की स्तुति करती है ।
ईश्वर संसार पर प्रभुत्व रखता है ।
चोरों को नगर से बाहर ले जाकर मार दिया गया ।
हम परमात्मा की स्तुति करेंगे ।
वह यह उत्तम भोजन खा ले ।
मैं अपने मन को मारूंगा ।
राजा राजनीति पर आचरण करेगा ।
मैं इस पुस्तक को पढ़ता था ।
बालक सब कार्य प्रेम से करते हैं ।
माता से पुत्र का जन्म हुआ ।
गाय बहुत सा दूध देती है ?
गोप गायों का दूध दोहते हैं ।
घोड़ा मनुष्य की सेवा करता है ।
सेवक घर शुद्ध करता है ।
जो अधिक खाते हैं, वे रोगी हो जाते हैं ।

जुहोत्यादिगण

जुहोत्यादिगण में श्लुशप् के स्थान पर हो जाता है । जिसका कुछ भी शेष नहीं रहता । इसमें धातु द्वित्व हो जाती है ।

हु दानादनयोः दान और भक्षण में ।
दान का अर्थ फेंकना है हवन का डालना ।
दान का अर्थ प्रसन्न करना भी लिया गया है ।

लट्

प्र० पु०	जुहोति	जुहुतः	जुह्वति ।
म० पु०	जुहोषि	जहुथः	जुहुथ ।
उ० पु०	जुहोमि	जुहुवः	जुहुमः ।

लोट्

प्र० पु०	जुहोतु	जुहुताम्	जुह्वतु ।
म० पु०	जुहुधि	जुहुतम	जुहुत ।
उ० पु०	जुहवानि	जुहवाव	जुहवाम ।

लङ्

प्र० पु०	अजुहोत्	अजुहुताम	अजुहवुः ।
म० पु०	अजुहोः	अजुहुतम	अजुहुत ।
उ० पु०	अजुहवम्	अजुहुव	अजुहुम

विधिलिङ्

प्र० पु०	जुहुयात्	जुहुयाताम्	जुहुयुः
म० पु०	जुहुयाः	जुहुयातम्	जुहुयात
उ० पु०	जुहुयाम्	जुहुयाव	जुहुयाम

लृट्

प्र० पु०	होष्यति	होष्यतः	होष्यन्ति ।
म० पु०	होष्यसि	होष्यथः	होष्यथ ।
उ० पु०	होष्यामि	होष्यावः	होष्यामः ।

णिजन्त—हावयति, कर्मवाच्य हूयते ।

क्त—हुतः, क्तवत्—हुतवत्, क्त्वा—हुत्वा।
शतृ—जुह्वत्, तव्यत्—होतव्य, अनीयर
हवनीय, तुमुन्—होतुम्।
उपसर्ग—आजुहोति=बुलाता है।

ञिभी भये (भी) डरना

लट्

प्र० पु०	बिभेति	बिभी-भितः	बिभ्यति।
म० पु०	बिभेषि	बिभी-भिथः	बिभी-भिथ।
उ० पु०	बिभेमि	बिभी-भिवः	बिभी-भिमः

लोट्

प्र० पु०	बिभेतु	बिभीताम्-बिभिताम्	बिभ्यतु
म० पु०	बिभीहि-बिभिहि	बिभीतम्-बिभीत	बिभीत-बिभि
उ० पु०	बिभयानि	बिभियाव	बिभियाम।

लङ्

प्र० पु०	अबिभेत्	अबिभीताम्-भिताम्	अबिभ्युः
म० पु०	अबिभेः	अबिभीतम्-भितम्	अबिभीत-अबिभि
उ० पु०	अबिभयम्	अबिभीव-भिव	अबिभीम-भिव

विधिलिङ्

प्र० पु०	बिभीयात्-भियात्	बिभीयाताम्-भियाताम्	बिभीयुः-भियु
म० पु०	बिभीयाः-भियाः	बिभीयातम्-भियातम्	बिभीयात-भिया
उ० पु०	बिभीयाम्	बिभीयाव-भियाव	बिभीयाम-भिया

लृट्

प्र० पु०	भेष्यति	भेष्यतः	भेष्यन्ति।
म० पु०	भेष्यसि	भेष्यथः	भेष्यथ।
उ० पु०	भेष्यामि	भेष्यावः	भेष्यामः

णिजन्त—भापयति। कर्मवाच्य-भीयते।
भीत—भीत्वा बिभ्यत् भेतव्य भयनीय—भीतवत्।

ह्री (लज्जा में)

लट्

प्र० पु०	जिह्रेति	जिह्रीतः	जिह्रियति
म० पु०	जिह्रेषि	जिह्रीथः	जिह्रीथ
उ० पु०	जिह्रेमि	जिह्रीवः	जिह्रीमः।

लोट्

प्र० पु०	जिह्रेतु	जिह्रीताम्	जिह्रियतु
म० पु०	जिह्रीहि	जिह्रीतम्	जिह्रीत
उ० पु०	जिह्रयाणि	जिह्रयाव	जिह्रयाम

लङ्

प्र० पु०	अजिह्रेत्	अजिह्रीताम्	अजिह्रयुः
म० पु०	अजिह्रेः	अजिह्रीतम्	अजिह्रीत
उ० पु०	अजिह्रयम्	अजिह्रीव	अजिह्रीम

विधिलिङ्

प्र० पु०	जिह्रीयात्	जिह्रीयाताम्	जिह्रीयुः

म० पु०	जिह्रीयाः	जिह्रीयातम्	जिह्रीयात
उ० पु०	जिह्रीयाम्	जिह्रीयाव	जिह्रीयाम

लृट्

प्र० पु०	ह्रेष्यति	ह्रेष्यतः	ह्रेष्यन्ति ।
म० पु०	ह्रेष्यसि	ह्रेष्यथः	ह्रेष्यथ ।
उ० पु०	ह्रेष्यामि	ह्रेष्यावः	ह्रेष्यामः ।

णिजन्त—ह्रेपयति, कर्मवाच्य—ह्रीयते । ह्रीतः—ह्रीणः—ह्रीतवत् ह्रेतुम्, जिह्रियत् ह्रेतव्य ह्रयनीय ।

पृ—पालन पूरणयोः

लट्

प्र० पु०	पिपर्ति	पिपृतः	पिप्रति ।
म० पु०	पिपर्षि	पिपृथः	पिपृथ ।
उ० पु०	पिपर्मि	पिपृवः	पिपृमः

लोट्

प्र० पु०	पिपर्तु	पिप्रताम्	पिप्रतु
म० पु०	पिपृहि	पिपृतम्	पिपृत
उ० पु०	पिपराणि	पिपराव	पिपराम

लङ्

प्र० पु०	अपिपः	अपिपृताम्	अपिपरुः ।
म० पु०	,,	अपिपृतम्	अपिपृत ।
उ० पु०	अपिपरम्	अपिपृव	अपिपृम ।

विधिलिङ्

प्र० प०	पिपृयात	पिपृयाताम्	पिपृयुः ।
म० प०	पिपृयाः	पिपृयातम्	पिपृयात ।
उ० प०	पिपृयाम्	पिपृयाव	पिपृयाम ।

णिजन्त—पारयति, कर्मवाच्च—पूर्यते ।

क्त—पूर्ण सम्+पूर्ण+सम्पूर्णः, पूरितः वा, क्त्वा—क्तवत्—
पूरितवत्

पूर्त्वा—तुमुन—परीतुम्, शतृ पिपृन, तव्यन्—पूरितव्यः
अनीयर्—पूरणीयः ।

उपसार्ग आ+पूरितः—सब ओर से भरा हुआ ।

परि+पूर्त्वा चारों ओर से भर कर ।

इसी प्रकार—डुभृञ् (भृ) धारणपोषणयोः
बिभर्त्ति, बिभर्तु, अबिभः बिभृयात्, भरिष्यति'

ओहाक् (हा) त्यागे (छोड़ना अर्थ में) ।

जहाति, जह्यात, अजहात्, जह्यात्, हास्यति, ओहाङ्
(हा) गतौ—जिहीते, जिहीताम् अजहात् जहीत हास्यते ।

उभयपदी—डुदाभ् (दाने) दान देने में ।

परस्मैपदि—ददाति, ददातु, अददात्, दद्यात्, दास्यति
आत्मनेपद दत्ते, दत्ताम, अदत्त ददीत, दास्यते ।

उ० पदी डुधाञ् धारण पोषण में—

प० पदी० दधाति, दधातु, अदधात्, दध्यात्, धास्यति ।

आ० प० धत्ते, धत्ताम्, अधत्त, दधीत, धास्यते ।

———

अभ्यास

१ जुहोत्यादिगण में कौन सा विकरण आता है लिखो।

२ भृ, धा, दा के लोट् में रूप लिखो।

३ धातु, लकार, पुरुष, वचन बताइये :—
दद्यात्, दत्ताम्, जिह्नीयात्।
बिभीयाः, होष्यति, धत्ते, दधातु, ददीत।

४ संस्कृत में अनुवाद करो :—
सूर्य की किरणें इससे गर्भ को धारण करती हैं।
वह भिखारियों को दान देता था।
राजा ने विशाल यज्ञ किया।
राजा कवियों की इच्छायें पूर्ण करे।
जो सुपात्र को दान देता है, वह पुण्य का भागी होता है।
अपने घर में वह कल जायेगा।
भूमि सब वस्तुओं को धारण करती है।
सूर्य समस्त प्राणियों का पालन करे।

दिवादिगण

इस में श्यन् (य) शप् के स्थान पर प्रयुक्त होता है।
दिवु—क्रीडा, व्यवहार, द्युति, स्तुति, मोद आदि अर्थ में

लट्

प्र० पु०	दीव्यति	दीव्यतः	दीव्यन्ति।

म० पु०	दीव्यसि	दीव्यथ	दीव्यथ ।
उ० प०	दीव्यामि	दीव्याव:	दीव्याम: ।

लोट्

प्र० प०	दीव्यतु	दीव्यताम	दीव्यन्तु ।
म० प०	दीव्य	दीव्यतम	दीव्यत ।
उ० प०	दीव्या	दीव्यार्वान	दीव्याम ।

लङ्

प्र० प०	अदीव्यत	अदीव्यताम	अदीव्यन
म० प०	अदीव्य:	अदीव्यतम्	अदीव्यत
उ० प०	अदीव्यम्	अदीव्याव	अदीव्याम

विधिलिङ्

प्र० प०	दीव्येत्	दीव्येताम्	दीव्येयु: ।
म० प०	दीव्ये:	दीव्येतम्	दीव्येत ।
उ० प०	दींव्येयम्	दीव्येव	दीव्येभ

लृट्

प्र० प०	देविष्यति	देविष्यत:	देविष्यन्ति ।
म० प०	देविष्यास	देविष्यथ:	देविष्यथ ।
उ० प०	देविष्यामि	देविष्याव:	देविष्माभ: ।

णिजन – देवयति । कर्मवाच्य—दीव्यते ।
वत—द्यूत:क्तवत्-द्यूतवान्, देवितवत्, देवितुभ—
दीव्यत्‌-न देवितव्य, देवनीय ।

षिवु (षिव्) सूत्र की तारें फैलाने में षीव्यति, षीव्य, अषीव्यत्, षीव्येत् षीविव्यति विर्तवु (स्रिवु) जाने और सरवाने में ।

स्त्रीव्यति, स्त्रीव्यतु, अस्त्रीव्यत, स्त्रीव्येत् स्त्रीविष्यति ।

ष्णसु—निरसने - छोड़ने में ।

स्नस्यति, (स्नस्) स्नस्यतु, अस्नस्यत, स्नस्येत्, स्नसिष्यति

व्युष् दाहे जलाने अर्थ में —

व्युष्यति, व्युष्यतु, अव्युष्यत्, व्युष्येत्, व्युषिष्यति प्रुष्—जलाने में प्रुष्यति—

नृती (नृत्) गात्र विक्षेपे—अंग फेंकने में ।

लट्

प्र० पु०	नृत्यति	नृत्यतः	नृत्यन्ति ।
म० पु०	नृत्यसि	नृत्यथः	नृत्यथ ।
उ० पु०	नृत्यामि	नृत्यावः	नृत्यामः ।

लोट्

प्र० पु०	नृत्यतु	नृत्यताम्	नृत्यन्तु ।
म० पु०	नृत्य	नृत्यतम्	नृत्यत
उ० पु०	नृत्यानि	नृत्याव	नृत्याम ।

लङ्

प्र० पु०	अनृत्यत्	अनृत्यताम्	अनृत्यन् ।
म० पु०	अनृत्यः	अनृत्यतम्	अनृत्यत ।
उ० पु०	अनृत्यम्	अनृत्याव	अनृत्याम

विधिलिङ्

प्र० प०	नृत्येत्	नृत्येताम्	नृत्येयुः ।
म० प०	नृत्येः	नृत्येतम्	नृत्येत ।
उ० प०	नृत्येयम्	नृत्येव	नृत्येय

लृट्

प्र० प० नर्त्स्यति—नर्तिष्यति नर्तिष्यतः-स्यतः नर्तिष्यन्ति-स्यन्ति
म० प० नर्त्स्यसि-ष्यसि नर्तिष्यथः-स्यथः नर्तिष्यथ-स्यथ
उ० प० नर्तिष्यामि-नर्त्स्यामि नर्तिष्यावः-स्यावः नर्तिष्यामः-स्याम

णिजन्त—नर्तयति, भाववाच्य—नृत्यते

क्तान्त—नृत्तः । क्तवत्, नृत्तवान्, क्त्वा=नर्तित्वा

नर्तितुम् नृत्यन्, नर्तितव्यम्, नर्तनीयम् ।

व्यध्—लक्ष्य करना

विध्यति विध्यतु अविध्यत् विध्येत् व्यत्स्यति

दूङ् परितापे—दूयते, दूयताम्, अदूयत, दूयेत, दूयिष्यते,

पीङ् (पीङ्) पाने—पीयते, पीयताम्, अपीयत, पीयते, पास्यते

जनी (जन) प्रादुर्भाव-जन्मलेना—

लट्

प्र० प०	जायते	जायेते	जायन्ते ।
म० प०	जायसे	जायेथे	जायध्वे ।
उ० प०	जाये	जायावहे	जायामहे ।

लोट्

प्र० प०	जायताम्	जायेताम्	जायन्ताम् ।

म० प०	जायस्व	जायेथा:	जायध्वम् ।
उ० प०	जायै	जायावहै	जायामहै ।

लङ्

प्र० प०	अजायत	अजायेताम्	अजायन्त ।
म० प०	अजायथा:	अजायेथाम्	अजायध्वम् ।
उ० प०	अजाये	अजायावहि	अजायामहि

विधिलङ्

प्र० प०	जायेत	जायेताम	जायेरन् ।
म० प०	जायेथा:	जायेयाथाम् ।	जायेध्वम ।
उ० प०	जायेय	जायेवहि	जायेमहि ।

लृट्

प्र० प०	जनिष्यते	जनिष्येते	जनिष्यन्ते ।
म० प०	जनिष्यसे	जनिष्येथे	जनिष्यध्वे ।
उ० प०	जनिष्ये	जनिष्यावहे	जनिष्यामहे ।

णिजन्त—जनयति वाच्य—जन्यते ।

जात:, जातवान्, जनितुम्, जायमान:

जनित्वा—जनितव्य—जननीय

श्लिष्—आलिङ्गन में, श्लिष्यति ।

पुष्—पुष्ट होना—पुष्यति

युज्—समाधि लगाना—युज्यते ।

राध्—भाग्य देखना—राध्यति—अप+राध्यति (दोष करता है)

विराध्यति—द्रोह करता है ।

षिधु (सिध्) सफल होना—सिध्यति ।
णश् —अदर्शने—नश्यति,
तृप् =प्रीणने – तृप्त करने में—तृप्यति ।
द्रुह् =द्रोह करना या मारने की इच्छा करना ।
द्रुह्यति ।
मुह् —वैचित्ये—विवेक का न रहना मुह्यति ।
ष्णिह् —प्रीतौ स्निह्यति स्निह्यतु, अस्निह्यत्
शमु (शम्) उपशमे – शान्त होने में – शाम्यति—
भ्रमु (भ्रम्) अनवस्थाने—एक स्थान में न बैठना
भ्राम्यति । भ्राम्यतु, भ्राम्यताम् भ्राम्येत ।
श्रम्=तप् करना और श्वेद होना श्राम्यति ।
क्षम (क्षम) सहने—क्षाम्यति ।
क्लमु—ग्लानौ – क्लाम्यति—क्लाम्यतु ।
मदी – हर्षे—माद्यति, माद्यतु, अमाद्यत माद्येत
असु—अस् – क्षेपणे फेंकने में अस्यति ।
कुप् —क्रोधे—कुप्यति कुप्यतु—अकुप्यत

अभ्यास

१ श्रम, शम, भ्रम्, मुह्, ष्णिह् धातुओं का अर्थ लिखकर विधिलिङ् के रूप लिखो :—

२ युध् —जनी (जन्) धातुयें कौन से पद में हैं इनके लृट् में रूप लिखो ।

३ संस्कृत में अनुवाद करो ।
मैं कार्यों के भार से थक गया हूँ ।
तप से मन सर्वथा शान्त हो जायेगा ।
संसार के लोग मोह में पड़े हुए हैं ।

जो उत्पन्न होता है, वह नष्ट भी होता है।
नर्तकियों का नृत्य छात्र न देखें।
तुम्हारा दोष तुम्हें परिताप दे रहा है (दूयते)
मैं उसके कार्यों से प्रसन्न हूँ।
जो द्रोह करते हैं, वे अपनी ही हानि करते हैं।
मनुष्य अपराधी को क्षमा कर दे।
मन धन से तृप्त नहीं होता।
धन से मनुष्य मोहित हो जाते हैं।
योधा निर्भय होकर युद्ध करें।
दुष्कर्मों से मन शान्त नहीं होता।
अग्नि लकड़ियों से तृप्त नहीं होती।
स्वादिगण—मेंश्नु विकरण होता है जिस से नु शेष रह जाता है।

शक्लृ (शक्) शक्त होने में—

लट्

प्रथम पु०	शक्नोति	शक्नुतः	शक्नुवन्ति।
मध्यम पु०	शक्नोषि	शक्नुथः	शक्नुथ।
उत्तम पु०	शक्नोमि	शक्नुवः	शक्नुमः।

लोट्

प्र० प०	शक्नोतु	शक्नुताम्	शक्नुवन्तु।
म० प०	शक्नुहि	शक्नुतम्	शक्नुत।
उ० प०	शक्नवानि	शक्नवाव	शक्नवाम।

लङ्

प्र० प०	अशक्नोत्	अशक्नुताम्	अशक्नुन् ।
म० प०	अशक्नोः	अशक्नुतम्	अशक्नुत ।
उ० प०	अशक्नुवम्	अशक्नुव	अशक्नुम ।

विधिलिङ्

प्र० प०	शक्नयात्	शक्नयाताम्	शक्नुयः
म० प०	शक्नुयाः	शक्नुयातम्	शक्नुयात
उ० प०	शक्नुयाम्	शक्नुयाव	शक्नुयाम

लृट्

प्र० प०	शक्ष्यति	शक्ष्यतः	शक्ष्यन्ति ।
म० प०	शक्ष्यसि	शक्ष्यथः	शक्ष्यथ ।
उ० प०	शक्ष्यामि	शक्ष्यावः	शक्ष्यामः ।

णिजन्त—शाकयति—भाव वाच्च—शक्यते ।

शक्तः, शक्तवत्, शक्त्वा, शक्तुम् ।

शक्तुवत्—नु, शक्तव्यम् शकनीयम् ।

आप्लु—व्याप्तौ (आप्) विस्तार होना ।

लट्

प्र० प०	आप्नोति	आप्नुतः	आप्नुवन्ति ।
म० प०	आप्नोषि	आप्नुथः	आप्नुथ ।
उ० प०	आप्नोमि	आप्नुवः	आप्नुमः ।

लोट्

प्र० प०	आप्नोतु	आप्नुताम्	आप्नुवन्तु

म० प०	आप्नुहि	आप्नुतम्	आप्नुत :
उ० प०	आप्नवानि	आप्नवाव	आप्नवाम ।

लङ्

प्र० प०	आप्नोत्	आप्नुताम्	आप्नुवन्
म० प०	आप्नोः	आप्नुतम्	आप्नुत ।
उ० प०	आप्नवम्	आप्नुव	आप्नुम ।

विधि लिङ्

प्र० प०	आप्नुयात्	आप्नुयाताम्	आप्नुयुः ।
म० प०	आप्नुयाः	आप्नुयातम्	आप्नुयात ।
उ० प०	आप्नुयाम्	आप्नुयाव	आप्नुयाम ।

लृट्

प्र० प०	आप्स्यति	आप्स्यतः	आप्स्यन्ति
म० प०	आप्स्यसि	आप्स्यथः	आप्स्यथ
उ० प०	आप्स्यामि	आप्स्यावः	आप्स्यामः

णिजन्त, आपयति, कर्मवाच्य, आप्यते
आप्तः, आप्तवत्, अप्त्वा, आप्तुमः ।
आप्तवत्-न्, आप्तव्यः, आपनीयः ।
षुञ्-अभिषवे, सुरानिकालना, स्नान करना आदि ।

परस्मैपद लट्

प्र० प०	सुनोति	सुनुतः	सुन्वन्ति
म० प०	सुनोषि	सुनुथः	सुनुथ
उ० प०	सुनोमि	सुनुवः-सुन्वः	सुनुमः-सुन्मः

लोट्

प्र० पु०	सुनोतु	सुनुताम्	सुन्वन्तु
म० पु०	सुनु	सुनुतम	सुनुत
उ० पु०	सुनवानि	सुनवाम	सुनवाम

विधिलिङ

प्र० पु०	सुनुयात्	सुनुयाताम	सुनुयुः
म० पु०	सुनुयाः	सुनुयातम	सुनुयात
उ० पु०	सुनुयाम	सुनुयाव	सुनुयाम

लृट्

प्र० पु०	सोष्यति	सोष्यतः	सोष्यन्ति
म० पु०	सोष्यसि	सोयष्थः	सोष्यथ
उ० पु०	सोष्यामि	सोष्यावः	सोष्यामः

आमने पद

प्र० पु०	सुनुते	सुन्वाते	सुन्वते
म० पु०	सुनुषे	सुन्वाथे	सुनुध्वम्
उ० पु०	सुन्वे	सुनुवहे-सुन्वहे	सुनुमहे-सुन्महे

लोट्

प्र० पु०	सुनुताम	सुन्वाताम्	सुन्वताम्
म० पु०	सुनुष्व	सुन्वाताम्	सुन्वाताम्
उ० पु०	सुनवै	सुनवावहै	सुनवामहै

लङ्

प्र० प०	असुनुत	असुन्वाताम	असुन्वत
प्र० म०	असुनुथाः	असुन्वाथाम	असुनुध्वम
उ० प०	असुन्वि	असुनुवहि-असुन्वहि	असुनुमहि-असुन्महि

विधिलिङ्

प्र० प०	सुन्वीत	सुन्वीयाताम	सुन्वीरन्
म० प०	सुन्वीथाः	सुन्वीयाथाम	सुन्वीध्वम्
उ० प०	सुन्वीय	सुन्वीवहि	सुन्वीमहि

लृट्

प्र० प०	सोष्यते	सोष्येते	सोष्यन्ते
म० प०	सोष्यसे	सोष्येथे	सोष्यध्वे
उ० प०	सोष्ये	सोष्यावहे	सोष्यामहे

धुञ् कम्पने । लट् परमैपद-विकल्प से सर्वत्र नु हो जाता है ।

प्र० प०	धुनोति	धुनुतः	धुन्वन्ति ।
म० प०	धुनोषि	धुनुथः	धुनुथ ।
उ० प०	धुनोमि	धुनुवः-धुन्वः	धुनुमः धुन्मः

लोट्

प्र० प०	धुनोतु	धुनुताम्	धुन्वन्तु ।
म० प०	धुनु	धुनुतम्	धुनुत ।
उ० प०	धुनवानि	धुनवाव	धुनवाम ।

लङ्

लङः

प्र० प०	अधुनोत्	अधुनुताम्	अधुन्वन्
म० प०	अधुनोः	अधुनुतम्	अधुनुत।
उ० प०	अधुनवम्	अधुनुव-अधुन्व	अधुनुम अधुन्म।

विधिलिङ्

प्र० प०	धुनुयात्	धुनुयाताम्	धुनुयुः।
म० प०	धुनुयाः	धुनुयातम्	धुनुयात।
उ० प०	धुनुयाम्	धुनुयाव	धुनुयाम

लृट्

प्र० प०	धोष्यति	धोष्यतः	धोष्यन्ति
म० प०	धोष्यसि	धोष्यथ	धोष्यथ।
उ० प०	धोष्यामि	धोष्यावः	धोष्यामः

आत्मनेपद

प्र० प०	धुनुते	धुन्वाते	धुन्वते
म० प०	धुनुषे	धुन्वाथे	धुनुध्वे
उ० प०	धुन्वे	धुनुवहे-धुन्वहे	धुनुमहे-धुन्महे

लोट्

प्र० प०	धुताम्	धुन्वाताम्	धुन्वताम्
म० प०	धुनुष्व	धुन्वाताम्	धुनुध्वम्
उ० प०	धुनवै	धुनवावहै	धुनवामहै।

लङ्

प्र० पु०	अधुनुत	अधुन्वाताम्	अधुन्वत।
म० पु०	अधुनुथाः	अधुन्वाथाम्	अधुनुवम्
पु० पु०	अधुन्वि	अधुनुवहि-अधुन्वहि	अधुनुमहि अधुन्महि

विधि लिङ्

प्र० पु०	धुन्वीत	धुन्वीयातम्	धुन्वीरत्
म० पु०	धुन्वीथाः	धुन्वीयाथाम	धुन्वीध्वम
उ० पु०	धुन्वीय	धुन्वीहि	धुन्वीमहि

लृट्

प्र० पु०	धोष्यते	धोष्यते	धोष्यध्वे।
म० पु०	धोष्यसे	धोष्येथे	धोष्यध्वे
उ० पु०	धोष्ये	धोष्यावहे	धोष्यामहे

षध हिंसायम (हिंसा करने में। सध्नोति, असध्नोत्
दम्भु-दम्भ् दम्भने—पाखण्ड करने में। दम्नोति, दम्नोतु,
साध् साध् संसिद्ध (अच्छी सफलता में) आध्नोति साध्नोति
चम (चम्) भक्षणे खाने में) चम्नोति, चम्नोतु
अह (व्याप्तौ) विस्तार में अह्नोति अह्नोतु
अश् (अश्) व्याप्ति और संघात अश्नते अश्नुताम्।

अभ्यास

१ स्वादि गण में अन्य गणों से क्या विशेषता है लिखो।

२ शक्, आप्, दम्भ्, साध्, चम इन धातुओं का अर्थ लिख कर प्रत्येक लकार का प्रथम पुरुष लिखो।

३ इन गणकी किसी आत्मने पदी धातु का लोट् लकार लिखो।

४ संस्कृत में अनुवाद करोः-

वह यह काम कर सकेगा।

जो दूसरों का साथ देते हैं, वे विरले मनुष्य हैं।

साधु लोग दूसरों का कार्य पूरा करते हैं।

पाखण्डी लोग कई प्रकार का दम्भ करते हैं।

पशु हरा घास खाकर तृप्त होते हैं।

कोई मुझे गन्ने का रस निकाल दे (सन्वीत)।

भगवान् की शक्ति सर्वत्र व्याप्त है (अह्नोति)।

किसी की भी हिंसा मत करो (सध्नुत)

तुदादिगण

तुदादिगण में 'शकार' होता है जिस से अकार शेष रह जाता है। (अ)

तुद् व्यथने—पीड़ा देने में

परस्मैपद

लट्

प्र० प०	तुदति	तुदतः	तुदन्ति।
म० प०	तुदसि	तुदथ	तुदथ।
उ० प०	तुदामि	तुदावः	तुदामः।

लोट्

प्र० प०	तुदतु	तुदताम्	तुदन्तु।

म० प०	तुद	तुदतम्	तुदत ।
उ० प०	तुदानि	तुदाव	तुदाम ।

लङ्

प्र० प०	अतुदत्	अतुदताम्	अतुदन् ।
म० प०	अतुदः	अतुदतम्	अतुदत ।
उ० प०	अतुदम्	अतुदाव	अतुदाम ।

विधिलिङ्

प्र० प०	तुदेत्	तुदेताम्	तुदेयुः ।
म० प०	तुदेः	तुदेतम्	तुदेत ।
उ० प०	तुदेयम्	तुदेव	तुदेम ।

लृट्

प्र० प०	तोत्स्यति	तोत्स्यतः	तोत्स्यन्ति ।
म० प०	तोत्स्यसि	तोत्स्यथः	तोत्स्यथ ।
उ० प०	तोत्स्यामि	तोत्स्यावः	तोत्स्यामः

प्रेरणार्थक क्रिया– तोदयति कर्मवाच्य-तुद्यते
क्त– तुन्नः, क्तवत् –तुन्नवान् तुमुन् तोत्तुम्
शतृ– तुदत् –न, क्त्वा–-तुत्वा, तव्यत्, तोत्तव्यः ।
अनीयर्– तोदनीयम् ।

णुदनुद्दाप्रे॰ णो प्रेरणा देने में, उभयपदी ।

परस्मैपदी

लट्

प्र० प०	नुदति	नुदतः	नुदन्ति ।

म० प०	नुदसि	नुदथः	नुदथ ।
उ० प०	नुदामि	नुदावः	नुदामः

लोट्

प्र० प०	नुदतु	नुदताम्	नुदन्तु ।
म० प०	नुद	नुदतम्	नुदत ।
उ० प०	नुदानि	नुदाव	नुदाम ।

लङ्

प्र० प०	अनुदत्	अनुदताम्	अनुदन् ।
म० प०	अनुदः	अनुदतम्	अनुदत ।
उ० प०	अनुदम्	अनुदाव	अनुदाम ।

विधि लिङ्

प्र० प०	नुदेत्	नुदेताम्	नुदेयुः ।
म० प०	नुदेः	नुदेतम	नुदेत ।
उ० प०	नुदेयम	नुदेव	नुदेम ।

लृट्

प्र० प०	नोत्स्यति	नोत्स्यतः	नोत्स्यन्ति ।
म० प०	नोत्स्यसि	नोत्स्यथ	नोत्स्यथ ।
उ० प०	नोत्स्यामि	नोत्स्यावः	योत्स्यामः

आत्मनेद—

लट्

प्र० प०	नुदते	नुदेते	नुदन्ते ।

म० प०	नुदसे	नुदथे	नुदध्वे ।
उ० प०	नुदे	नुदावहे	नुदामहे ।

लोट्

प्र० प०	नुदताम्	नुदेताम	नुदन्ताम् ।
म० प०	नुदस्व	नुदेथाम्	नुदध्व ।
उ० प०	नुदै	नुदावहै	नुदामहै ।

लङ्

प्र० प०	अनुदत	अनुदेताम्	अनुदन्त ।
म० प०	अनुदथाः	अनुदेथाम	अनुदध्वम्
उ० प०	अनुदे	अनुदावहि	अनुदामहि ।

विधिलिङ्

प्र० प०	नुदेत	नुदेयाताम्	नुदेरन् ।
म० प०	नुदेथाः	नुदेयाथाम्	नुदेध्वम् ।
उ० प०	नुदेय	नुदेवहि	नुदेमहि ।

लृट्

प्र० प०	नोत्स्यते	नोत्स्येते	नोत्स्यन्ते ।
म० प०	नोत्स्यसे	नोत्स्येथे	नोत्स्यध्वे ।
उ० प०	नोत्स्ये	नोत्स्यावहे	नोत्स्यामहे ।

एवं दिश् अतिसर्जने अतिसर्जनम् = दानम्
दिशति, दिशतु, अदिशत्, दिशेत, दिक्ष्यति ।
भ्रस्ज् पाके (पकाने में) उभयपदी

परस्मैपद—लट्

प्र० पु०	भृज्जति	भृज्जतः	भृज्जन्ति ।
म० पु०	भृज्जसि	भृज्जथः	भृज्जथ
उ० पु०	भृज्जामि	भृज्जावः	भृज्जामः ।

लोट्

प्र० पु०	भृज्जतु	भृज्जताम्	भृज्जन्तु ।
म० पु०	भृज्ज	भृज्जतम्	भृज्जत
उ० पु०	भृज्जानि	भृज्जाव	भृज्जाम ।

लङ्

प्र० पु०	अभृज्जत्	अभृज्जताम्	अभृज्जन् ।
म० पु०	अभृज्जथाः	अभृज्जतम्	अभृज्जत ।
उ० पु०	अभृज्जम्	अभृज्जाव	अभृज्जाम ।

विधिलिङ्

प्र० पु०	भृज्जेत्	भृज्जेताम्	भृज्जेयुः ।
म० पु०	भृज्जेः	भृज्जेतम्	भृज्जेत ।
उ० पु०	भृज्जेयम्	भृज्जेव	भृज्जेम ।

लृट्

प्र० पु०	भ्रक्ष्यति-भर्क्ष्यति	भ्रक्ष्यतः	भ्रक्ष्यन्ति ।
म० पु०	भ्रक्ष्यसि	भ्रक्ष्यथः	भ्रक्ष्यथ
उ० पु०	भ्रक्ष्यामि	भ्रक्ष्यावः	भ्रक्ष्यामः

आत्मनेपद—लट्

प्र० पु०	भृञ्जते	भृञ्जेते	भृञ्जन्ते ।
म० पु०	भृञ्जसे	भृञ्जेथे	भृञ्जध्वे ।
उ० पु०	भृञ्जे	भृञ्जावहे	भृञ्जामहे ।

लोट्

प्र० पु०	भृञ्जताम्	भृञ्जेताम्	भृञ्जंताम् ।
म० पु०	भृञ्जस्व	भृञ्जेथाम्	भृञ्जध्वम्
उ० पु०	भृञ्जै	भृञ्जावहै	भृञ्जामहै ।

लङ्

प्र० पु०	अभृञ्जत	अभृञ्जेताम्	अभृञ्जन्त
म० पु०	अभृञ्जथाः	अभृञ्जेथाम्	अभृञ्धध्वम
उ० पु०	अभृञ्जे	अभृञ्जावहि	अभृञ्जामहि

विधिलिङ्

प्र० पु०	भृञ्जेत	भृञ्जेयाताम	भृञ्जेरन्
म० पु०	भृञ्जेथाः	भृञ्जेयाथाम्	भृञ्जेध्वम्
उ० पु०	भृञ्जेय	भृञ्जेवहि	भृञ्जेमहि

लृट्

प्र० पु०	भ्रक्ष्यते-भर्क्ष्यते	भर्क्ष्यते	भर्क्ष्यन्ते ।
म० पु०	भ्रक्ष्यसे	भ्रक्ष्येथे	भ्रक्ष्यध्वे ।
उ० पु०	भ्रक्ष्ये	भ्रक्ष्यावहे	भ्रक्ष्यामहे

क्षिप् प्रेरणा देने में परस्मैपदी—

क्षिपति—क्षिपतु, अक्षिपत्, क्षिपेत, क्षेप्स्यति

कृष्—विलेखने—भूमिके उखाड़ने में।

उभयपदी—कृषति—कृषते।

ऋषी (ऋष्) गति में। ऋषति।

ऋच्छ्—चलने में-ऋच्छति।

ऋच्=स्तुति करने में ऋचति आदि।

ध्रु—गति—स्थिरता

ध्रुवति, ध्रुवतु, अध्रुवत्, ध्रुवेत, ध्रुविष्यति

मृङ् (मृ) प्राणत्याग करने में

यह धातु लिङ् लट् आदि में आत्मने पदी हो जाती है।

लट्

प्र० पु०	म्रियते	म्रियेते	म्रियन्ते
म० पु०	म्रियसे	म्रियेथे	म्रियध्वे
उ० पु०	म्रिये	म्रियावहे	म्रियामहे।

लोट्

प्र० पु०	म्रियताम्	म्रियेताम्	म्रियन्ताम्
म० पु०	म्रियस्व	म्रियेथाम्	म्रियध्वम्
उ० पु०	म्रियै	म्रियावहै	म्रियामहै

लङ्

प्र० पु०	अम्रियत	अम्रियेताम्	अम्रियन्त।

म० पु०	अम्रियथाः	अम्रियेथाम्	अम्रियध्वम्
उ० पु०	अम्रिये	अम्रियावहि	अम्रियामहि

विधिलिङ्

प्र० पु०	म्रियेत	म्रियेयाताम्	म्रियेरन् ।
म० पु०	म्रियेथाः	म्रियेयाथाम्	म्रियेध्वम् ।
उ० पु०	म्रियेय	म्रियेवहि	म्रियेवहि ।

लृट्

प्र० पु०	मरिष्यति	मरिष्यातः	मरिष्यन्ति
म० पु०	मरिष्यसि	मरिष्यथः	मरिष्यथ ।
उ० पु०	मरिष्यामि	मरिष्यावः	मरिष्यामः

गॄ निगरणे—निगलने—ग्रासने में

(अचि विभाषा) गॄ के रेफ को ल् हो जाता है।

गिरति, गिलति, गिरतु गिलतु ।

पृच्छ् ज्ञीप्स्यायाम्—जानने की इच्छा में

परस्मैपदी धातु—लट्

प्र० प०	पृच्छति	पृच्छतः	पृच्छन्ति ।
म० पु०	पृच्छसि	पृच्छथः	पृच्छथ ?
उ० प०	पृच्छामि	पृच्छावः	पृच्छामः

लोट्

प्र० प०	पृच्छतु	पृच्छताम्	पृच्छन्तु ।
म० प०	पृच्छ	पृच्छतम्	पृच्छत ।

उ० प०	पृच्छानि	पृच्छाव	पृच्छाम ।

लङ्

प्र० प०	अपृच्छत्	अपृच्छताम्	अपृच्छन्
म० प०	अपृच्छः	अपृच्छतम्	अपृच्छत ।
उ० प०	अपृच्छम्	अपृच्छाव	अपृच्छाम

विधिलिङ्

प्र० प०	पृच्छेत्	पृच्छेताम्	पृच्छेयुः
म० प०	पृच्छेः	पृच्छेतम्	पृच्छेत ।
उ० प०	पृच्छेयम्	पृच्छेव	पृच्छेम ।

लृट्

प्र० प०	प्रक्ष्यति	प्रक्ष्यतः	प्रक्ष्यन्ति
म० प०	प्रक्ष्यसि	प्रक्ष्यथः	प्रक्ष्यथ
उ० प०	प्रक्ष्यामि	प्रक्ष्यावः	प्रक्ष्यामः ।

णिजन्त—प्रच्छयति, कर्मवाच्य - पृच्छयते ।

पृष्टः, पृष्टवान्, प्रष्टुम्, पृच्छत्, पृष्ट्वा, प्रष्टव्यः पृच्छनीयम् ।

कृती छेदने (काटने में)

कृत् (लट्) कृन्तति

लोट् कृन्ततु

लङ् अकृन्तत्

विः लिङ् कृन्तेत्

लृट् कर्तिष्यति

क्षिप्—फेंकना—उभय पदी

परस्मैपद-क्षिपति, क्षिपतु, अक्षिपत, क्षिपेत्, क्षेप्स्यति,

आत्मनेपद—क्षिपते, क्षिपताम्, अक्षिपत

क्षिपेत, क्षेप्स्यते।

मिल्—संयोग होना—

मिलति, मिलतु, अमिलत्, मिलेत् मिलिष्यति।

षिच् (सिच्) क्षरण-सींचने में-सिंचति-सिंचते।

सृज्—उत्पन्न करना—

सृजति, सृजतु, असृजत, सृजेत, स्रक्ष्यति।

विश्—प्रवेश करता, विशति, विशतु अविशत्,

विशेत्, वेक्ष्यति।

लिख् लिखना—लिखति, लिखतु, अलिखत् लिखेत्

लेखिष्यति।

पृङ् (पृ) व्यायाम करने में प्रियते

मुचॢ—मोक्षणे (मुच्) उभदपदी-मुंचति-मुंचते।

पृङ् (प्रायेणायं व्याङ् पूर्व :) प्राय: इस धातु से

पूर्व वि+आ उपसर्ग रहते हैं यथा-व्याप्रियते

कृ=विक्षेप करने में फेंकने में।

किरति, किरतु, अकिरत, किरेत्वि लि०

स्फुट्—खिलना—स्फुटति स्फुटतु।

टुमस्जो—शुद्धि में- स्नान करने में

मज्जति, मज्जतु, अमज्जत्, मज्जेत्

विद्,

मङ्‌दयति। विद्‌लृ-लाभ में विन्दति—विन्दते।

लुभ् विमोहने लुभा जाने में—

लुभति, लुभतु, अलुभत, लुभेत लोभिष्यति।

उज्भ् उत्सर्ग—त्याग करने में—

उज्भति, उज्भतु।

इष् इच्छा करने में

इच्छति, इच्छतु, इच्छतु, इच्छेत्, एषिष्यति

णु स्तवने स्तुति करने के लिए—नुवति, नुवतु।

अभ्यास

१ स्पृश् लृट् इच्छ् लङ्, तुद् लृट् मृ विधि लिङ् के रूप लिखो।

२ धातु, लकार, पुरुष, वचन बतलाइये।
मरिष्यति, कृन्तेत्, अपृच्छः तोत्स्यति
एषिष्यति, मङ्‌दयति, विशेत्, त्रोप्स्यति।

३ रिक्त स्थान पूर्ति करो :—
सः जले नैव—शीतकाले।
पुष्पाणि उद्याने—प्रातः
कृषकः—वीजं—
छात्रः गुरुं—।
सः वाराणसी गन्तुं—।

४ संस्कृत में अनुवाद करो :—

वह क्या करना चाहता है ?
तुम क्या पूछते हो ?
उस ने सारी पैतृक सम्पति त्याग दी ।
उद्यान में फूल खिलते हैं ।
सूर्य चढ़ने से अन्धकार बिखर गया ।
यदि वह पत्र लिखे तो मुझे अवश्य मिल जाय ।
वे पाठशाला में प्रविष्ट होंगे ।
हम सब मार्ग में जा रहे थे ।
वह राजा की स्तुति करता है ।
आप ने मेरी ओर क्या फेंका है ?

———

रुधादि-गण

रुधादि गण में श्नम् (न) होता है। शप् (अ) का इस में अपवाद है।

रुध्-उभयपदी निवारण करना।

परस्मैपद लट्

प्र० पु०	रुणद्धि	रुन्द्धः	रुन्धन्ति।
म० प०	रुणत्सि	,,	रुन्द्ध।
उ० म०	रुणध्मि	रुन्ध्वः	रुन्ध्मः

लोट्

प्र० प०	रुणद्धु-रुन्धात्	रुंद्धाम्	रुन्धन्तु।
म० प०	रुन्द्धि	रुन्द्धम्	रुन्द्ध।
उ० प०	रुणधानि	रुणधाव	रुणधाम।

लङ्

प्र० प०	अरुणत्-द्	अरुद्धाम्	अरुन्धन्।
म० प०	,, ,,	अरुद्धाम्	अरुन्द्ध
उ० पु०	अरुणधम्	अरुन्ध्व	अरुन्ध्म।

विधिलिङ्

प्र० प०	रुन्ध्यात्	रुन्यातास	रुन्ध्युः

म० प०	रुन्ध्याः	रुन्ध्यातम्	रुन्ध्यात
उ० प०	रुन्ध्याम्	रुन्ध्याव	रुन्ध्याम

लृट्

प्र० प०	रोत्स्यति	रोत्स्यतः	रोत्स्यन्ति ।
म० प०	रोत्स्यसि	रोत्स्यथः	रोत्स्यथ
उ० प०	रोत्स्यामि	रोस्यावः	रोत्स्यामः ।

आत्मनेपद लट्

प्र० पु०	रुन्द्धे	रुन्धाते	रुन्धते
म० पु०	रुन्त्से	रुन्धाथे	रुन्दध्वे
उ० पु०	रुन्धे	रुन्ध्वहे	रुन्ध्महे

लोट्

प्र० पु०	रुन्द्धाम्	रुन्धाताम्	रुन्धताम्
म० पु०	रुन्त्स्व	रुन्धाथाम्	रुन्ध्वम् ।
उ० पु०	रुणधै	रुणधावहै	रुणधामहै

लङ्

प्र० प्र०	अरुन्द्ध	अरुन्धाताम्	अरुन्धत ।
म० प्र०	अरुन्धाः	अरुन्धाथाम्	अरुन्दूध्वम
उ० प०	अरुन्धि	अरुन्ध्वहि	अरुन्ध्वहि ।

लोट्

प्र० प०	रुन्द्धाम्	रुन्धाताम्	रुन्धताम् ।
म० प०	रुन्त्स्व	रुन्धाथाम्	रुन्दूध्वम् ।
उ० प०	रुणधै	रुणधावहै	रुणधामहै

लङ्

प्र० पु०	अरुन्द्ध	अरुन्धाताम्	अरुन्धत ।
म० पु०	अरुन्द्धाः	अरुन्धाथाम्	अरुन्ध्वम्
उ० पु०	अरुन्धि	अरुन्ध्वहि	अरुन्ध्महि

विधिलिङ्

प्र० पु०	रुन्धीत	रुन्धीयाताम्	रुन्धीरन्
म० पु०	रुन्धीथाः	रुन्धीयाथाम्	रुन्धीध्वम्
उ० पु०	रुन्धीय	रुन्धीवहि	रुन्धीमहि ।

लृट्

प्र० पु०	रोत्स्यते	रोत्स्यते	रोत्स्यन्ते ।
म० पु०	रोत्स्यसे	रोत्स्येथे	रोत्स्यध्वे
उ० पु०	रोत्स्ये	रोत्स्यावहे	रोत्स्यामहे

णिजन्त-रोधयति, कर्मवाच्य रुध्यते
रुद्धः, रुद्धवान्, रुद्ध्वा, रोद्धुं, रुन्धन्
शानच्-रुन्धानः, रोद्धव्यम्-रोधनीयम् ।

भिद्

इसी प्रकार भिदिर् विदारणे-फाड़ने में
भिनत्ति, भिन्ते, उभयपदी भिन्ताम्, अभिनत्-द्
अभिन्न, भिन्दीत, भेत्स्यति-भेत्स्यते ।
छिदिर् छिद्) दो भाग करने में-छिनत्ति छिनत्तु-
रिचिर् (रिच्) बिरेचन देना—रिणक्ति, रिङ्क्ते ।
उच्छृदिर् (छृद्) छृणत्ति (दीप्ति-चमक ।
विचिर् (विच्) अलग होने में विनक्ति—विङ्क्ते

उतृदिर् -(तृद्) हत्या और निरादर में तृणत्ति (चमकता है)

कृती (कृत्) लपेटने में कृणत्ति, कृणत्तु।

पिषॢ-पिष्)संचूर्णने-पीसने अर्थ में पिनष्टि इत्यदि।

भुज् पालन और अभ्यवहार (भोजन में)उभय पदी

परस्मैपदी लट्

प्र० प०	भुनक्ति	भुंक्तः	भुञ्जन्ति
म० प०	भुनक्षि	भुंक्थः	भुंक्थ
उ० प०	भुनज्मि	भुञ्ज्वः	भुञ्ज्मः।

लोट्

प्र० प०	भुनक्तु	भुङ्क्ताम्	भुञ्जन्तु
म० प०	भुङ्ग्धि	भुङ्क्तम्	भुङ्क्।
उ० प०	भुनजानि	भुनजाव	भुनजाम।

लट्

प्र० प०	अभुनक्-ग्	अभुङ्क्ताम्	अभुञ्जन्।
म० प०	,, ,	अभुङ्क्तम्	अभुङ्क।
उ० म०	अभुनजम्	अभुञ्ज्व	अभुञ्ज्म।

विधिलिङ्

प्र० पु०	भुञ्ज्यात्	भुञ्ज्याताम्	भुञ्ज्युः।
म० पु०	भुञ्ज्याः	भुञ्ज्यातम्	भुञ्ज्यात।
उ० पु०	भुञ्ज्याम्	भुञ्ज्याव	भुञ्ज्याम।

लृट्

प्र० पु०	भोद्यति	भोद्यतः	भोद्यन्ति ।
म० पु०	भोद्यसि	भोद्यथः	भोद्यथ ।
उ० पु०	भोद्यामि	भोद्यावः	भोद्यामः ।

आत्मनेपद

प्र० पु०	भुङ्क्ते	भुञ्जाते	भुञ्जते ।
म० पु०	भुङ्क्षे	भुञ्जाथे	भुङ्ग्ध्वे ।
उ० पु०	भुञ्जे	भुञ्ज्वहे	भुञ्ज्महे ।

लोट्

प्र० पु०	भुङ्क्ताम	भुञ्जाताम्	भुञ्जताम् ।
म० पु०	भुङ्क्ष्व	भुञ्जाथाम्	भुङ्ग्ध्वम् ।
उ० पु०	भुनजै	भुनजावहै	भुनजामहै ।

लङ्

प्र० पु०	अभुङ्क्त	अभुंजाताम	अभुञ्जत ।
म० पु०	अभुंकथाः	अभुञ्जाथाम	अभुङ्ग्ध्वम् ।
उ० पु०	अभुञ्जि	अभुञ्ज्वहि	अभुञ्ज्महि ।

विधिलिङ्

प्र० पु०	भुञ्जीत	भुञ्जीयाताम्	भुंजीरन् ।
म० पु०	भुंजीथाः	भुञ्जीयाथाम	भुञ्जीध्वम् ।
उ० पु०	भुञ्जीय	भुञ्जीवहि	भुञ्जीमहि ।

लृट्

प्र० पु०	भोदयते	भोदयेते	भोदयन्ते ।
म० पु०	भोद्यसे	भोदयेथे	भोदयध्वे ।
उ० पु०	भोदये	भोदयावहे	भोदयामहे ।

णिजन्त भोजयति, कर्मवाच्य भुज्यते ।

क्त – भुक्तः क्तवत्—भुक्तवान—क्त्वा भुक्त्वा,

तुमुन्—भोक्तुम शानच् भुञ्जानः ।

तव्यत्––भोक्तव्य ।

अनीयर्––भोजनीयः ।

हिंसि (हिंस्) हिंसायाम ।

परस्मैपद लट्

प्र० पु०	हिनस्ति	हिंस्तः	हिंसन्ति ।
म० पु०	हिनस्सि	हिंस्थः	हिंस्थ ।
उ० पु०	हिंनस्मि	हिंस्वः	हिंस्मः ।

लोट्

प्र० पु०	हिनस्तु	हिंस्ताम्	हिंसन्तु ।
म० पु०	हिन्धि	हिंस्तम्	हिंस्त ।
उ० पु०	हिनसानि	हिंसाव	हिनसाम ।

लङ्

प्र० पु०	अहिनत्–द्	अहिंस्ताम्	अहिंसन् ।
म० पु०	,, ,,	अहिंस्तम्	अहिंस्त ।
उ० पु०	अहिनसम्	अहिंस्व	अहिंस्म ।

विधिलङ्

प्र० पु०	हिंस्यात्	हिंस्याताम्	हिंस्युः
म० पु०	हिंस्याः	हिंस्यातम्	हिंस्यात
उ० पु०	हिंस्याम	हिंस्याव	हिंस्याम

लृट्

प्र० पु०	हिंसिष्यति	हिंसिष्यतः	हिंसिष्यन्ति
म० पु०	हिंसिष्यसि	हिंसिष्यथः	हिंसिष्यथ
उ० पु०	हिंसिष्यामि	हिंसिष्यावः	हिंसिष्यामः

णिजन्त हिंसयहि, कर्मवाच्य – हिंस्यते।
क्तान्त—हिंसितः, क्तवत्—हिंसितवत्,

क्त्वा हिंसित्वा, तुमुन् हिंसितुम्।
शतृ – हिंसत् तव्यत् हिंसितव्यः
अनीयर हिंसनीयः। यत् हिंस्यः।

अभ्यासार्थ प्रश्न

१ निम्नलिखित शब्दों के धातु, लकार, पुरुष, वचन का निर्देश करो।

अहिनद्, अरुद्ध, हिंस्याम, रुन्धे।
भुङ्ग्धि, भुनक्ति, रोत्स्यते, भुक्ते, हिन्धि।

२ छिद्, कृत्, पिष्, रिच्, तृद् के लट् लोट् प्रथम पुरुष के रूप लिखो।

३ भुज् धातु के आत्मने पद में समस्त रूप लिखो।

४ संस्कृत में अनुवाद करो :—

राजा पृथ्वी का भोग करता है।
लकड़हारा लकड़ियां काटता है।
सब जीवों को मत मारो।
सिंह वन के पशुओं को मारता है।
हम बढ़ते हुए चीनी सैनिकों को रोकेंगे।
किसी श्रेष्ठ मनुष्य के मार्ग को मत रोको।
दुर्बल मनुष्य किसी की हिंसा नहीं करते।
जो काम करेगा, वह उसका फल भी भोगेगा।
वैद्य रोगी को रेचन देता है।
नारी गेहूँ पीसती है (गोधूमान्नम्)।

तनादिगणः (तनादयः)

इस गणमें उ मध्य में आता है (तनादिकृञ्भ्य उः)
तनु (तन्) विस्तार करना। उभयपदी

परस्मैपद—लट्

प्र० प०	तनोति	तनुतः	तन्वन्ति।
म० प०	तनोषि	तनुथः	तनुथ।
उ० प०	तनोमि	तनुवः-तन्वः	तनुमः-तन्मः

लोट्

प्र० प०	तनोतु	तनुताम्	तन्वन्तु।
म० प०	तनु	तनुतम्	तनुत।
उ० प०	तनवानि	तनवाव	तनवाम

लङ्

प्र० प०	अतनोत्	अतनुताम्	अतन्वन् ।
म० प०	अतनोः	अतनुतम्	अतनुत
उ० प०	अतनवम्	अतनुव-अतन्व	अतनुम-अतन्म ।

विधिलिङ्

प्र० प०	तनुयात्	तनुयाताम्	तनुयुः ।
म० प०	तनुयाः	तनुयातम्	तनुयात ।
उ० प०	तनुयाम्	तनुयाव	तनुयाम ।

लृट्

प्र० प०	तनिष्यति	तनिष्यतः	तनिष्यन्ति ।
म० पु०	तनिष्यसि	तनिष्यथः	तनिष्यथ ।
उ० पु०	तनिष्यामि	तनिष्यावः	तनिष्यामः ।

आत्मनेपद—लट्

प्र० पु०	तनुते	तन्वाते	तन्वते ।
म० पु०	तनुषे	तन्वाथे	तनुध्वे ।
उ० पु०	तन्वे	तनुवहे-तन्वहे	तनुमहे-तन्महे

लोट्

प्र० पु०	तनुताम्	तन्वाताम्	तन्वताम् ।
म० पु०	तनुष्व	तन्वाथाम्	तनुध्वम् ।
उ० पु०	तनवै	तनवावहै	तनवामहै ।

लङ्

प्र० पु०	अतनोत	अतन्वाताम्	अतन्वत ।
म० पु०	अतनुथाः	अतन्वाथाम्	अतनुध्वम्
उ० पु०	अतन्वि	अतनुवहि-अतन्वहि अतनुमहि-अतन्महि ।	

विधिलिङ्

प्र० पु०	तन्वीत	तन्वीयाताम्	तन्वीरन् ।
म० पु०	तन्वीथाः	तन्वीयाथाम्	तन्वीध्वम् ।
उ० पु०	तन्वीय	तन्वीवहि	तन्वीमहि ।

लृट्

प्र० पु०	तनिष्यते	तनिष्येते	तनिष्यन्ते
म० पु०	तनिष्यसे	तनिष्येथे	तनिष्यध्वे
उ० पु०	तनिष्ये	तनिष्यावहे	तनिष्यामहे

णिजन्त—तानयति—तानयते ।

कर्मवाच्य—तन्यते ।

क्तान्त—ततम्, क्तवत्—ततवान्,

क्त्वा—तत्वा, तनित्वा ।

शतृ—तन्वत्, शानच् तन्वानः ।

तव्यत्—तनितव्यम्, अनीयर्—तननीयम

एवं —

षणु (सन्) दाने—सनोति—सनुते ।

क्षणु (क्षण्) हिंसा करना क्षणोति—क्षणुते ।

ऋणु—चलना—ऋणोति-अर्णोति

तृणु तृण्—भक्षण करना—तृणोति-तर्णोति तृणुते—तर्णुते ।
वनु (वन्) मांगना—वनोति-वनुते ।
मनु (मन्) जानना आत्मने पदी—

लट्

प्र० पु०	मनुते	मान्वाते	मन्वते
म० पु०	मनुषे	मन्वाथे	मनुध्वे
उ० पु०	मन्वे	मनुवहे-मन्वहे	मनुमहे-मन्महे

डुकृञ् (कृ) करना उभयपदी

परस्मैपद लट्

प्र० पु०	करोति	कुरुतः	कुर्वन्ति ।
म० पु०	करोषि	कुरुथः	कुरुथ ।
उ० पु०	करोमि	कुर्वः	कुर्मः ।

लोट्

प्र० पु०	करोतु	कुरुताम्	कुर्वन्तु ।
म० पु०	कुरु	कुरुतम	कुरुत ।
उ० पु०	करवाणि	करवाव	करवाम ।

लङ्

प्र० पु०	अकरोत्	अकुरुताम	अकुर्वन
म० पु०	अकरोः	अकुरुतम	अकुरुत
उ० पु०	अकरवम्	अकुर्व	अकुर्म

विधिलिङ्

प्र० पु०	कुर्यात्	कुर्याताम्	कुर्युः
म० पु०	कुर्याः	कुर्यातम्	कुर्यात
उ० पु०	कुर्याम्	कुर्याव	कुर्याम

लृट्

प्र० पु०	करिष्यति	करिष्यतः	करिष्यन्ति ।
म० पु०	करिष्यसि	करिष्यथः	करिष्यथ
उ० पु०	करिष्यामि	करिष्यावः	करिष्यामः

आत्मनेपद लट्

प्र० पु०	कुरुते	कुर्वाते	कुर्वते
म० पु०	कुरुषे	कुर्वाथे	कुरुध्वे
उ० पु०	कुर्वे	कुर्वहे	कुर्महे ।

लोट्

प्र० पु०	कुरुताम्	कुर्वाताम्	कुर्वताम्
म० पु०	कुरुष्व	कुर्वाथाम्	कुरुध्वम्
उ० पु०	करवै	करवावहै	करवामहै ।

लङ्

प्र० पु०	अकुरुत	अकुर्वाताम्	अकुर्वत
म० पु०	अकुरुथाः	अकुर्वाथाम्	अकुरुध्वम्
उ० पु०	अकुर्वि	अकुर्वहि	अकुर्महि

विधिलिङ्

प्र० पु०	कुर्वीत	कुर्वीयाताम्	कुर्वरिन्
म० पु०	कुर्वीथाः	कुर्वीयाथाम्	कुर्वीध्वम्
उ० पु०	कुर्वीय	कुर्वीवहि	कुर्वीमहि ।

लृट्

प्र० पु०	करिष्यते	करिष्येते	करिष्यन्ते
म० पु०	करिष्यसे	करिष्येथे	करिष्यध्वे
उ० पु०	करिष्ये	करिष्यावहे	करिष्यामहे ।

णिजन्त—कारयति, कर्मवाच्य—कार्यते
कृतः, कृत्वा, कर्तुम्, कुर्वन्, कर्तव्यम्, करणीयम्
अलंकरोति=शोभित करता है ।
संस्करोति—सुधारता है । आविष्करोति=नई वस्तु निकालता है ।

अभ्यास

१ धातु, लकार, पुरुष, वचन लिखो ।
कुर्याः, कुर्वते, तन्वीत, तन्वे ।
कुरुष्व, कुर्वीवहि, मनुते, अमनुत ।

२ कृ, तनु के विधिलिङ् लोट् में रूप में रूप लिखो ।

३ संस्कृत में अनुवाद करो :—
जुलाहा सूत फैलाता है । (तन्तुवायः) ।
तुम सब अपना काम ध्यान से करो ।

स्त्री भूषणों से अलंकृत होती है (अलंकरोति)।
बन्दर नट का अनुकरण करता है।
नारी चावलों को स्वच्छ करती है (संस्करोति)।
हम दो इस दरी (सुत्रा सनम्) को फैलाये (तन्)।
वैज्ञानिक नित्य प्रति नये-नये आविष्कार करते हैं। (आविष्कुर्वन्ति)।
तुम क्या फैलाना चाहते हो।
हम सब यह काम करेंगे।

क्र्यादिगण

इसमें श्ना (ना) का प्रयोग होता है।

क्री उभयपदी

आत्मनेद—लट्

प्र० पु०	क्रीणाति	क्रीणीत:	क्रीणन्ति।
म० पु०	क्रीणासि	क्रीणीथ:	क्रीणीथ।
उ० पु०	क्रीणामि	क्रीणीव:	क्रीणीम:

लोट्

प्र० पु०	क्रीणातु	क्रीणीताम्	क्रीणन्तु।
प्र० म०	क्रीणीहि	क्रीणितम्	क्रीणीत।
उ० पु०	क्रीणानि	क्रीणाव	क्रीणाम।

लङ्

प्र० पु०	अक्रीणात्	अक्रीणीताम्	अक्रीणन्
म० पु०	अक्रीणाः	अक्रीणीतम्	अक्रीणीत
उ० पु०	अक्रीणाम्	अक्रीणीव	अक्रीणीम

विधिलिङ्

प्र० पु०	क्रीणीयात्	क्रीणीयाताम्	क्रीणीयुः
म० पु०	क्रीणीयाः	क्रीणीयातम्	क्रीणीयात
उ० पु०	क्रीणीयाम्	क्रीणीयाव	क्रीणीयाम ।

लृट्

प्र० पु०	क्रेष्यति	क्रेष्यतः	क्रेष्यन्ति
म० पु०	क्रेष्यसि	क्रेष्यथः	क्रेष्यथ ।
उ० पु०	क्रेष्यामि	क्रेष्यावः	क्रेष्यामः

आत्मनेपद लट्

प्र० पु०	क्रीणीते	क्रीणाते	क्रीणते ।
म० पु०	क्रीणीषे	क्रीणाथे	क्रीणीध्वे
उ० पु०	क्रीणे	क्रीणीवहे	क्रीणीमहे

लोट्

प्र० पु०	क्रीणीताम्	क्रीणाताम्	क्रीणताम् ।
म० पु०	क्रीणीष्व	क्रीणाथाम्	क्रीणीध्वम्
उ० पु०	क्रीणै	क्रीणावहै	क्रीणामहै ।

लङ्

प्र० प०	अक्रीणात (त)	अक्रीणाताम्	अक्रीणत
म० प०	अक्रीणीथाः	अक्रीणाथाम्	अक्रीणीध्वम्
उ० प०	अक्रीणि	अक्रीणीवहि	अक्रीणीमहि

विधिलिङ्

प्र० प०	क्रीणीत	क्रीणीयाताम्	क्रीणीरन्
म० प०	क्रीणीथाः	क्रीणीयाथाम्	क्रीणीध्वम्
उ० प०	क्रीणीय	क्रीणीवहि	क्रीणीमहि

लृट्

प्र० प०	क्रेष्यते	क्रेष्येते	क्रेष्यन्ते
म० प०	क्रेष्यसे	क्रेष्येथे	क्रेष्यध्वे
उ० प०	क्रेष्ये	क्रेष्यावहे	क्रेष्यामहे

णिजन्ति—क्रापयति—क्रापयते ।

कर्मवाच्य—क्रीयते ।

क्तान्त—क्रीतम्, क्तवत्—क्रीतवत्

तुमुन् क्रेतुम् । क्त्वा—क्रीत्वा

शतृ—क्रीणत् शानच्—क्रीणानः

तव्यत् क्रेतव्यम्, अनीयर्—क्रयणीयम्

उप० वि+क्रीणाति बेचता है ।

बन्ध् बान्धना परस्मैपदी धातु

लट्

प्र॰ पु॰	बध्नाति	बध्नीतः	बध्नन्ति
म॰ पु॰	बध्नासि	बध्नीथः	बध्नीथ
उ॰ पु॰	बध्नामि	बध्नीवः	बध्नीमः

लोट्

प्र॰ पु॰	बध्नीतु	बध्नीताम्	बध्नन्तु
म॰ पु॰	बधान	बध्नीतम्	बध्नीत
उ॰ पु॰	बध्नानि	बध्नाव	बध्नाम

लङ्

प्र॰ पु॰	अबध्नात्	अबध्नीताम्	अबध्नन्
म॰ पु॰	अबध्नाः	अबध्नीतम्	अबध्नीत
उ॰ पु॰	अबध्नाम्	अबध्नीव	अबध्नीम

विधि लिङ्

प्र॰ पु॰	बध्नीयाताम्	बध्नीयाताम्	बध्नीयुः
म॰ पु॰	बध्नीयाः	बध्नीयातम्	बध्नीयात
उ॰ पु॰	बध्नीयाम्	बध्नीयाव	बध्नीयाम

लृट्

प्र॰ पु॰	भन्त्स्यति	भन्त्स्यतः	भन्त्स्यन्ति
म॰ पु॰	भन्त्स्थसि	भन्त्स्यथः	भन्त्स्यथ
उ॰ पु॰	भन्त्स्यामि	भन्त्स्यावः	भन्त्स्यामः

प्रेरणार्थक क्रिया—बन्धयति बन्धमते
क्तप्रत्यय—बद्धः, क्तवतु—बद्धवत्, क्त्वा
बद्धवा, तुमुन् बद्धुम्, शतृ बध्नत्
तव्यत्—बद्धव्यः, अनीयर् बन्धनीयम्
इसी प्रकार मुष् स्तेये (चोरी करने के अर्थ में)

परस्मैपदी

मुष्णाति, मुष्णातु, अमुष्णात्, मुष्णीयात् मोषिष्यति।
प्रेरणार्थक—मोषयति।
कर्मवाच्य—मुष्यते।
शतृ—मुष्णत्, तव्यत्—मोषितव्यम्।
अनीयर्—मोषणीयम्। क्तान्त,—मुषितम्।
क्तवतु—मुषितवत्, क्त्वा मुषित्वा।
तुमुन् मोषितुम्।

ग्रह लेना या पकड़ना

उभयपदी

परस्मैपद लट्

प्र० पु०	गृह्णाति	गृह्णीतः	गृह्णन्ति
म० पु०	गृह्णासि	गृह्णीथः	गृह्णीथ
उ० पु०	गृह्णामि	गृह्णीवः	गृह्णीमः।

लोट्

प्र० पु०	गृह्णातु	गृह्णीताम्	गृह्णन्तु
म० पु०	गृहाण	गृह्णीतम्	गृह्णीत

उ० पु०	गृह्णामि	गृह्णीव	गृह्णीम

लङ्

प्र० पु०	अगृह्णात्	अगृह्णीताम्	अगृह्णान्
म० पु०	अगृह्णाः	अगृह्णीतम्	अगृह्णीत
उ० पु०	अगृह्णाम्	अगृह्णीव	अगृह्णीम

विधिलिङ्

प्र० पु०	गृह्णीयात्	गृह्णीयाताम्	गृह्णीयुः
म० पु०	गृह्णीयाः	गृह्णीयातम्	गृह्णीयात
उ० पु०	गृह्णीयाम्	गृह्णीयाव	गृह्णीयाम

लृट्

प्र० पु०	ग्रहीष्यति	ग्रहीष्यतः	ग्रहीष्यन्ति
म० पु०	ग्रहीष्यसि	ग्रहीष्यथः	ग्रहीष्यथ ।
उ० पु०	ग्रहीष्यामि	ग्रहीष्यावः	ग्रहीष्यामः

आत्मनेपद लट्

प्र० पु०	गृह्णीते	गृह्णाते	गृह्णते
म० पु०	गृह्णीषे	गृह्णाथे	गृह्णीध्वे
उ० पु०	गृह्णे	गृह्णीवहे	गृह्णीमहे

लोट्

प्र० पु०	गृह्णीताम्	गृह्णाताम	गृह्णताम
म० पु०	गृह्णीष्व	गृह्णाथाम	गृह्णीध्वम्
उ० पु०	गृह्णै (णै)	गृह्णीवहै	गृह्णीमहै

लङ्

प्र० पु०	अगृह्णीत	अगृह्णाताम	अगृह्णत
म० पु०	अगृह्णीथाः	अगृह्णाथाम	अगृह्णीध्वम
उ० पु०	अगृह्णि	अगृह्णीवहि	अगृह्णीमहि

विधि लिङ्

प्र० पु०	गृह्णीत	गृह्णीमानाम्	गृह्णीरन्
म० पु०	गृह्णीथाः	गृह्णीयाथाम	गृह्णीध्वम
उ० पु०	गृह्णीय	गृह्णीवहि	गृह्णीमहि

लृट्

प्र० पु०	ग्रहीष्यते	ग्रहीष्येते	ग्रहीष्यन्ते
म० पु०	ग्रहीष्यसे	ग्रहीष्यथे	ग्रहीष्यध्वे
उ० पु०	ग्रहीष्ये	ग्रहीष्यावहे	ग्रहीष्यामहे

णिजन्त—ग्राहयति—ग्राहयते

कर्मवाच्य गृह्यते । क्तान्त—गृहीतः, क्तवत्— गृहीतवत

क्त्वा—गृहीत्वा, तुमुन्— गृहीतुम

शतृ—गृह्णत, शानच्— गृह्णानः ।

तव्यत्—गृहीतव्यम । अनीयर् ग्रहणीयम ।

ज्ञा—जानना उभयपदी

प० जानाति, जानातु, अजानात, जानीयात

ज्ञास्यति । मन्थ् विलोडन करने में— मथ्नाति

आ० जानीते, जानीताम, अजानीत ।

जानीत, ज्ञास्यते । वृङ्० वरना—वृणीते

क्लिशू—बाधा पहुंचाना—क्लिश्नाति ।

अभ्यास

१ क्र्यादिगण का विकरण क्या है लिखो ।

२ बन्ध्, क्री, ज्ञा के लोट् में रूप लिखो ।

३ रिक्त स्थान पूर्ति करो :—

१ त्वं——बध्नान । २ सः राज्ञः धनं—— ।

३ मया इदं वस्त्रं——। ४ ईश्वरः सर्वं सर्वत्र——।

५ अहं पुस्तकानि——।

४ संस्कृत में अनुवाद करो :—

वह हमसे कपड़े क्रय करता है (क्रीणाति)।
वे घृत बेचते हैं (विक्रीणन्ति)।
हम दो क्या बेचेंगे ? (विक्रेष्यावः) ?
राजा प्रजा की दशा जानता है।
तुम सब शास्त्रों का मर्म जानो ।
वह सब कुछ जान गया ।
बालक दूध लेने के लिये गया ।
सैनिक चोर को पकड़ कर पीटते हैं।
वह इन पुस्तकों को ले ले।
सैनिक शत्रुओं को बान्धते हैं।
छात्र क्या जानना चाहते हैं ?
साधु ब्रह्म विद्या का मर्म जानेगा।

पिता की आज्ञा मानो ।

स्त्रियां मृत्पात्र खरीदती हैं ।

चुरादिगण

इस गण में णिच् होता है जिससे सन्धि नियम से अ
हो जाता है ।

उभयपदी

चुर् स्तेये (चोरी करने में)

परस्मैपदी लट्

प्र० पु०	चोरयति	चोरयतः	चोरयन्ति
म० पु०	चोरयसि	चोरयथः	चोरयथ
उ० पु०	चोयामि	चोरयावः	चोरयामः

लोट्

प्र० पु०	चोरयतु	चोरयताम्	चोरयन्तु
म० पु०	चोरप	चोरयतम्	चोरयत
उ० पु०	चोरयाणि	चोरयाव	चोरयाम

लङ्

प्र० पु०	अचोरयत्	अचोरयताम्	अचोरयन्
म० पु०	अचोरयः	अचोरयतम्	अचोरयत
उ० पु०	अचोरयम	अचोरयाव	अचोरयाम

विधिलिङ्

प्र० पु०	चोरयेत्	चोरयेताम	चोरयेयुः
म० पु०	चोरयेः	चोरयेतम	चोरयेत
उ० पु०	चोरयेयम	चोरयेव	चोरयेम

लृट्

प्र० पु०	चोरयिष्यति	चोरयिष्यतः	चोरयिष्यन्ति
म० पु०	चोरयिष्यसि	चोरयिष्यथः	चोरयिष्यथ
उ० पु०	चोरयिष्यामि	चोरयिष्यावः	चोरयिष्यामः

आत्मनेपद—लट्

प्र० पु०	चोरयसे	चोरयेते	चोरयन्ते
म० पु०	चोरयसे	चोरयेथे	चोरयध्वे
उ० पु०	चोरये	चोरयावहे	चोरयामहे

लोट्

प्र० पु०	चोरयताम्	चोरयेताम	चोरयन्ताम
म० पु०	चोरयस्व	चोरयेथाम	चोरयध्वम
उ० पु०	चोरयै	चोरयावहै	चोरयामहै

लङ्

प्र० पु०	अचोरयत	अचोरयताम	अचोरयन्त
म० पु०	अचोरयथाः	अचोरयेथाम	अचोरयध्वम
उ० पु०	अचोरये	अचोरयावहि	अचोरयामहि

विधिलिङ्

प्र० प०	चोरयेत	चोरयेताम	चोरयेरन्
म० प०	चोरयेथाः	चोरयेयाथाम	चोरयेध्वम्
उ० प०	चोरयेय	चोरयेवहि	चोरयेमहि

लृट्

प्र० प०	चोरयिष्यते	चोरयिष्येते	चोरयिष्यन्ते
म० प०	चोरयिष्यसे	चोरयिष्येथे	चोरयिष्यध्वे
उ० प०	चोरयिष्ये	चोरयिष्यावहे	चोरयिष्यामहे

णिजन्त—चोरयति—चोरयते ।

क्तान्त—चोरितः, क्तवत्—चोरितवान्

क्त्वा—चोरयित्वा, तुमुन्—चोरयितुम्

शतृ—चोरयत्, शानच्—चोरयमाणः

तव्यत्—चोरयितव्यः, अनीयर्=चोरणीयम्

ताड्—पीटना उभयपदी

परस्मैपद—लट्

प्र० प०	ताडयति	ताडयतः	ताडयन्ति
म० प०	ताडयसि	ताडयथः	ताडयथ
उ० प०	ताडयामि	ताडयावः	ताडयामः

लोट्

प्र० प०	ताडयतु	ताडयताम्	ताडयन्तु
म० पु०	ताडय	ताडयतम्	ताडयत

उ० प०	ताडयानि	ताडयाव	तायाम

लङ्

प्र० प०	अताडयत्	अताडयताम्	अताडयन्
म० प०	अताडयः	अताडयतम्	अतमडत
उ० प०	अताडयम्	अताडयाव	अताडयाम

विधिलिङ्

प्र० प०	ताडयेत्	ताडयेताम	ताडयेयुः
म० प०	ताडयेः	ताडयेतम्	ताडयेत
उ० प०	ताडयेयम्	ताडयेव	ताडयेम

लृट्

प्र० प०	ताडयिष्यति	ताडयिष्यतः	ताडयिष्यन्ति
म० प०	ताडयिष्यसि	ताडयिष्यथः	ताडयिष्यथ
उ० प०	ताडयिष्यामि	ताडयिष्यावः	ताडयिष्यामः

आत्मनेपद लट्

प्र० प०	ताडयते	ताडयेते	ताडयन्ते
म० प०	ताडयसे	ताडयेथे	ताडयध्वे
उ० प०	ताडये	ताडयावहे	ताडयामहे

लोट्

प्र० प०	ताडयताम्	ताडयेताम्	ताडयन्ताम्
म० प०	ताडयस्व	ताडयेथाम	ताडयध्वम्
उ० प०	ताडयै	ताडयावहै	ताडयामहै

लङ्

प्र० पु०	अताडयत	अताडयेताम	अताडयन्त
म० प०	अताडयथाः	अताडयेथाम	अताडयध्वम्
उ० प०	अताडये	अताडयावहि	अताडयामहि

विधिलिङ्

प्र० प०	ताडयेत	ताडयेयाताम्	ताडयेरन्
म० प०	ताडयेथाः	ताडयेयाथाम्	ताडयेध्वम्
उ० प०	ताडयेय	ताडयेवहि	ताडयेमहि

लृट्

प्र० प०	ताडयिष्यते	ताडयिष्येते	ताडयिष्यन्ते
म० प०	ताडयिष्यसे	ताडयिष्येथे	ताडयिष्यध्वे
उ० प०	ताडयिष्ये	ताडयिष्यावहे	ताडयिष्यामहे

णिजन्त – ताडयति – ताडयते
कर्मवाच्य—ताड्यते ।
ताडितः, ताडितवान्, ताडयित्वा,
ताडयितुम्, ताडयत्, ताडयमानः,
ताडयितव्यः, ताडनीयम् ।

भक्ष् खाना उभयपदी

परस्मैपद लट्

प्र० प०	भक्षयति	भक्षयतः	भक्षयन्ति
म० प०	भक्षयसि	भक्षयथः	भक्षयथ
उ० प०	भक्षयामि	भक्षयावः	भक्षयामः

लोट्

प्र० प०	भक्षयतु	भक्षयताम्	भक्षयन्तु
म० प०	भक्षय	भक्षयतम्	भक्षयत
उ० प०	भक्षयाणि	भक्षयाव	भक्षयाम

लङ्

प्र० प०	अभक्षयत्	अभक्षयताम्	अभक्षयन्
म० प०	अभक्षयः	अभक्षयतम्	अभक्षयत
उ० प०	अभक्षयम्	अभक्षयाव	अभक्षयाम

विधिलिङ्

प्र० प०	भक्षयेत्	भक्षयेताम्	भक्षयेयुः
म० प०	भक्षयेः	भक्षयेतम्	भक्षयेत
उ० प०	भक्षयेयम्	भक्षयेव	भक्षयेम

लृट्

प्र० प०	भक्षयिष्यति	भक्षयिष्यतः	भक्षयिष्यन्ति
म० प०	भक्षयिष्यसि	भक्षयिष्यथः	भक्षयिष्यथ
उ० प०	भक्षयिष्यामि	भक्षयिष्यावः	भक्षयिष्यामः

आत्मनेद—लट्

प्र० प०	भक्षयते	भक्षयेते	भक्षयन्ते
म० प०	भक्षयसे	भक्षयेथे	भक्षयध्वे
उ० प०	भक्षये	भक्षयाबहे	भक्षयामहे

लोट्

प्र० प०	भक्षयताम्	भक्षयेताम्	भक्षायन्ताम्
म० प०	भक्षायस्व	भक्षयेथाम्	भक्षयध्वम्
उ० प०	भक्षयै	भक्षयावहै	भक्षयामहै

लङ्

प्र० प०	अभक्षयत	अभक्षायेताम्	अभक्षायन्त
म० प०	अभक्षायथाः	अभक्षायेथाम्	अभक्षायध्वम्
उ० प०	अभक्षाये:	अभक्षयावहि	अभक्षायामहि

विधिलिङ्

प्र० प०	भक्षयेत	भक्षयेयाताम्	भक्षयेरन्
म० प०	भक्षयेथाः	भक्षयेयाथाम्	भक्षयेध्वम्
उ० प०	भक्षयेय	भक्षयेवहि	भक्षयेमहि

लृट्

प्र० प०	भक्षयिष्यते	भक्षयिष्येते	भक्षयिष्यन्ते
म० प०	भक्षयिष्यसे	भक्षयिष्येथे	भक्षयिष्यध्वे
उ० प०	भक्षयिष्ये	भक्षयिष्यावहे	भक्षायिष्यामहे

णिजन्त—भक्षयति—भक्षयते।

क्त्वान्त—भक्षयित्वा, शतृ—भक्षयत्,
शानच—अन्त भक्षयमाणम्, क्तान्त—भक्षितम्,
क्तवत्वन्त - भक्षितवत्, तव्यत्—भक्षायितव्यम्,
अनीयर् =भक्षाणीयम्।

कथ् —कहना उभयपदी

परस्मैपद लट्

प्र० प०	कथयति	कथयतः	कथयन्ति
म० प०	कथयसि	कथयथः	कथयथ
उ० प०	कथयामि	कथयावः	कथयामः

लोट्

प्र० प०	कथयतु	कथयताम्	कथयन्तु
म० प०	कथय	कथयतम्	कथयत
उ० प०	कथयानि	कथयाव	कथयाम

लङ्

प्र० प०	अकथयत्	अकथयताम्	अकथयत्
म० प०	अकथयः	अकथयतम्	अकथयत
उ० प०	अकथयम्	अकथयाव	अकथयाम

विधिलिङ्

प्र० प०	कथयेत्	कथयेताम्	कथयेयुः
म० प०	कथयेः	कथयेतम्	कथयेत
उ० प०	कथयानि	कथयाव	कथयाम

लृट्

प्र० प०	कथयिष्यति	कथयिष्यतः	कथयिष्यति

म० प०	कथयिष्यसि	कथयिष्यथः	कथयिष्यथ
उ० प०	कथयिष्यामि	कथयिष्यावः	कथयिष्यामः

आत्मनेपद—लट्

प्र० प०	कथयते	कथयेते	कथयन्ते
म० प०	कथयसे	कथयेथे	कथयध्वे
उ० प०	कथये	कथयावहे	कथयामहे

लोट्

प्र० प०	कथयताम्	कथयेताम्	कथयन्ताम्
म० प०	कथयस्व	कथयेथाम्	कथयध्वम्
उ० प०	कथयै	कथयावहै	कथयामहै

लङ्

प्र० प०	अकथयत	अकथयेताम्	अकथयन्त
म० प०	अकथयथाः	अकथयेथाम्	अकथयध्वम्
उ० प०	अकथये	अकथयावहि	अकथयामहि

विधिलिङ्

प्र० प०	कथयेत	कथयेयाताम्	कथयेरन्
म० प०	कथयेथाः	कथयेयाथाम्	कथयेध्वम्
उ० प०	कथयेय	कथयेवहि	कथयेमहि

णिजन्त—कथयति— कथयते

कर्मवाच्य—कथ्यते । क्तान्त— कथितः,

क्तवत्—कथितवत् ।

क्त्वान्त—कथयित्वा, तुमुन्नन्त—कथयितुम्

शानजन्त—कथयमानः, तव्यत् ।
कथयितव्यम्, अनीयर्—कथनीयम् ।
इसी प्रकार यन्त्रि-संकोच में, यन्त्रयति
कुद्रि—असत्य बोलने में कुन्द्रयति ।
पीड् अवगाहन या पीड़ा देने अर्थ में ।
पीडयति ।
पॄ—पूरणे—पूरयति, बध्—संयमने—
बान्धने में—बाधयति । पथि—गति में
पन्थयति । पूज्—पूजा में, पूजयति ।
कॄत्—कीर्त्तन करने में—कीर्त्तयति ।
घुषिर् (घुष्) शब्द करने में—घोषयति ।
प्रीञ् (प्री) प्रसन्न करने में—प्रीणयति, प्रीणयतु ।
वर्—इच्छा करना—वरयति—वरयतु ।
चित्र्—चित्रित करने में—चित्रयति ।
सुख् दुःख—सुख दुःख देने में ।
सुखयति, दुःखयति ।

अभ्यास

१ कथ्, चुर्, ताड् के आत्मने पद विधिलिङ् में रूप लिखो ।

२ निम्नलिखित शब्दों के धातु, लकार, पुरुष, वचन लिखो :—
कथयीत, अताडयन्त, ताडयेथाः, गणयस्व
सुखयेत्, अचोरयेताम्, चोरयेः कथयै ।

३ रिक्त स्थान भरो :—

१ चौरः तव धनं——। २ कः छात्रं श्वः——।

३ सैनिकः तस्करान्——।

४ वह दुष्टों को दण्ड दे। सः दुष्टेभ्यः—— ।

५ हम राज-सभा में जाते हैं। वयं राज-सभायां ——

६ कः तावत् एतत्—— ।

७ चित्रकारः चित्रं—— ।

४ संस्कृत में अनुवाद करो :—

१ हम सब दुष्टों को दण्ड देते हैं।

२ चित्रकार सुन्दर चित्र खींचता है।

३ हम सब अपनी पुस्तकें गिनें।

४ पौराणिक कथायें कहता है (कथयति)

५ राजा अपने सेवकों से बोला।

६ हम सब भगवान् की पूजा करें।

७ भक्तों की मण्डली कीर्त्तन करेगी।

८ यह सन्देश नगर भर में घोषित होगा।

९ वह कलशों को पानी से भर रहा है (पूरयति)

१० वह ईश्वर से मुक्ति की इच्छा रखता है। (वरयति)

११ छात्र अपने अच्छे चरित्र से गुरुओं को प्रसन्न करते हैं (प्रीणयन्ति)।

१२ भक्त इष्ट देव को पूजेगा (पूजयिष्यति)

१३ हम मध्याह्न के समय भोजन खायें (भक्षयाम)

१४ शत्रु हृदय को पीड़ित करता है (पीडयति)

१५ तुम क्यों असत्य बोल रहे हो (कुन्द्रयसि) ?

———

प्रेरणार्थक क्रिया

तिङन्ते णयन्त प्रक्रिया

सामान्य क्रियाओं में कर्त्ता एक ही होता है, किन्तु जिन क्रियाओं में प्रेरक और प्रेर्य दो कर्त्ता होते हैं उन्हें प्रेरणार्थक क्रिया कहते हैं। यथा—माता शेते इसमें माता कर्त्ता है, किन्तु माता पुत्रं धात्र्या शयियति इसमें धात्री सुलाने का काम माता की प्रेरणा से कर रही है वह प्रेर्य कर्त्ता है और माता केवल उसे प्रेरणा देने के कारण प्रेरक कर्त्ता है। ऐसी क्रियाओं को णिच् का प्रयोग होने से णिजन्त या णयन्त क्रिया भी कहते हैं। पीछे सन्धि नियम से गुण और अयादेश हो जाता है। इसमें प्रेरक कर्त्ता सदा प्रथमान्त होता है और दूसरा प्रेर्य कर्त्ता तृतीया में रहता है। यथा—मम मित्रं मया पत्रं लेखयति। प्रेरणार्थक क्रिया में अकर्मक क्रियायें भी सकर्मक हो जाती हैं। जैसे—राजा मन्त्रिभिः प्रजां वर्धयति। इसमें प्रजा कर्म है।

णिजन्त धातुयें प्रायः परस्मैपदी ही होती हैं जैसे सेव् धातु आत्मनेपदी है परन्तु णिजन्त में परस्मैपदी हो जाती है। यथा—पुत्रः सेवकेन मातरं सेवयति इत्यादि।

धातुयें णिजन्त रूप में—

भू—भावयति, पठ्—पाठयति ।

पच्—पाचयति, दृश्—दर्शयति

श्रु—श्रावयति, नम्—नामयति

पा—पाययति, जि—जापयति

हस्—हासयति, गम्—गमयति,

स्था—स्थापयति, घ्रा—घ्रापयति,

भ्रम्—भ्रामयति, स्मृ—स्मारयति

ईक्ष्—ईक्षयति, आस्—आसयति,

ज्ञा—ज्ञापयति, रुध्—रोधयति

कथ्—कथयति, नी—नाययति

शक्—शाकयति, तन्—तानयति

ग्रह्—ग्राहयति, प्रच्छ्—प्रच्छयति

बुध्—बोधयति, भी—भाययति—भीषयते ।

क्री—क्रापयति, हु—हावयति

कृ—कारयति, लिख्—लेखयति

ग्रह्—ग्राहयति, अधि=इङ्=अध्यापयति

स्पृश्—स्पर्शयति, तड्—ताडयति।

स्तु—स्तावयति, ब्रू—वाचयति ।

हृ—हारयति, भ्रम्—भ्रामयति ।

नश्—नाशयति, अट्—आटयति,

हन्—घातयति, जन्—जनयति ।

मुच्—मोचयति, धाव्—धावयति,

रच्—रचयति, भृ—भारयति ।

जागृ—जागरयति, मृ—मारयति ।
सृ—सारयति, यज्—याजयति ।
राज्—राजयति, दा—दापयति ।
विद्—वेदयति, दुह्—दोहयति ।
लिह्—लेहयति, मुष्—मोषयति,
मन्—मानयते, आस्—आसयति,
तृ—तारयति, नृत्—नर्तयति,
दृ—दारयति, क्रुध्—क्रोधयति,
युध्—योधयते, चि—चाययति ।
बन्ध्—बन्धयति, मुह्—मोहयति ।
स्वप्—स्वापयति, हा—हापयति ।
वद्—वादयति—वृत्—वर्त्तयति ।
चुर्—चोरयति, सु—सावयति
लुप्—लोपयति, लभ्—लम्भयति
हिंस्—हिंसयति, रुद्—रोदयति

अभ्यासार्थ प्रश्न

१ णिजन्त क्रिया का परिचय दो ।

२ पा, दृश्, रक्ष्, हन्, श्रु,
लभ्, गम्, दा, जि, वद् के णयन्त रूप लोट् में लिखो ।

३ रिक्त समान भरो :—

१ माता पित्रा पुत्रं——— ।

२ राजा सैनिकेन चौरं——— ।

३ अहं सेवकेन अतिथिं भोजनं——— ।

४ नारी भृत्येन भोजनं———— ।

५ गुरुः शिष्येण जलं———— ।

४ संस्कृत में अनुवाद करो :—

१ मैं राम के द्वारा उसे चित्र दिखलाता हूँ ।

२ दासी सेवक के द्वारा भार उठवाती है ।

३ हम सब पण्डितों से जप करवाते हैं ।

४ दुष्ट मनुष्य अपने भाई के द्वारा मुझे डराता है ।

५ मनुष्य नारी से घर का काम करवाता है ।

६ गायें बछड़ों द्वारा बड़ा उपकार कराती हैं ।

७ कोई तुझ से समाज की सेवा करवाले ।

८ साधुआनी भक्त के द्वारा दूध मंगवाती है ।

———

वाच्य (Voices)

क्रिया का सम्बन्ध जिससे हो वह वाच्य है । क्रिया के जिस रूप से उसका सम्बन्ध कर्त्ता, कर्म यह भाव से सूचित हो उसे वाच्य कहते हैं । वाच्य के तीन भेद हैं कर्तृ-कर्म और वाच्य ।

१ कर्तृवाच्य (*Active vioce*)—यहां क्रिया का सम्बन्ध मुख्य रूप से कर्त्ता के साथ होता है । कर्त्ता प्रथमान्त और भाव कर्म द्वितीयान्त होता है यथा—भक्तः हरिं स्मरति ।

(भक्त हरि को स्मरण करता है)

(यदा सौकर्यातिशयं द्योतयितुं कर्तृ व्यापारो न विवक्ष्यते तदा कारकान्तराण्यपि कर्तृ संज्ञां लभन्ते) ।

२ कर्मवाच्य—जहां कर्त्ता के साथ क्रिया नहीं होती अपितु कर्म के साथ होती है। कर्त्ता तीसरी विभक्ति में और कर्म प्रथमा विभक्ति में आता ह। यथा—भक्तेन हरिः स्मर्यते। भक्त से हरि का स्मरण किया जाता है।

३ भाववाच्य—जहां कर्त्ता कर्म में से कोई भी प्रधान न हो यथा—मया स्थीयते (मुझ से ठहरा जाता है)।
त्वया शय्यते (तुमसे सोया जाता है)।
क्रिया इसमें प्रथमपुरुष एकवचन में ही प्रायः रहती है। कर्मणास्तु कर्तृत्व विवक्षायां प्राक् सकर्मका अपि प्रायेण कर्मकाः तेभ्यो भावे कर्तरि च लकाराः)।
स्मरणीय—कर्मवाच्य और भाववाच्य क्रिया आत्मने—पदी हो जाती है और लट्, लोट्, लङ् विधिलिङ् में य मध्य में क्रिया-प्रत्यय से पूर्व प्रयुक्त होता है, लृट् में नहीं।

कृ—कर्मवाच्य रूप—लट्

प्रथम पुरुष	क्रियते	क्रियेते	क्रियन्ते
म० पु०	क्रियसे	क्रियेथे	क्रियध्वे
उ० पु०	क्रिये	क्रियावहे	क्रियामहे

लोट्

प्र० पु०	क्रियताम	क्रियेताम	क्रियन्ताम
म० पु०	क्रियस्व	क्रियेथाम्	क्रियध्वम्
उ० पु०	क्रियै	क्रियावहै	क्रियामहै

लङ

प्र० पु०	अक्रियत	अक्रियेताम्	अक्रियन्त
म० पु०	अक्रियथाः	अक्रियेथाम्	अक्रियध्वम्
उ० पु०	अक्रिये	अक्रियावहि	अक्रियामहि

विधिलिङ्

प्र० पु०	क्रियेत	क्रियेयाताम्	क्रियेरन्
म० पु०	क्रियेथाः	क्रियेयाथाम्	क्रियेध्वम्
उ० पु०	क्रियेय	क्रियेवहि	क्रियेमहि

लृट्

प्र० पु०	करिष्यते	करिष्येते	करिष्यन्ते
म० पु०	करिष्यसे	करिष्येथे	करिष्यध्वे
उ० पु०	करिष्ये	करिष्यावहे	करिष्यामहे

भू—भूयते, भूयताम्, अभूयत, भूयेत, भविष्यते
पठ्—पठ्यते, पठ्यताम्, अपठ्यत, पठ्येत, पठिष्यते
पच्—पच्यते, पच्यताम्, अपच्यत पच्येत, पक्ष्यते
सेव्—सेव्यते, सेव्यताम्, असेव्यत, सेव्येत, सेविष्यते
वर्ध्—वर्ध्यते, वर्ध्यताम्, अवर्ध्यत, वर्ध्येत, वर्धिष्यते
सह्— सह्यते, सह्यताम, असह्यत, सह्येत, सहिष्यते
ईक्ष्—ईक्ष्यते, ईक्ष्यताम, ऐक्ष्यत, ईक्ष्येत, ईक्षिष्यते
पा (पिब्) पीयते, पीयताम, अपीयत, पीयेत, पास्यते
स्था (तिष्ठ्) स्थीयते स्थीयताम्, अस्थीयत, स्थीयते, स्थास्यते

स्मृ (स्मर्)—स्मर्य्यते, स्मर्यताम अस्मर्यत, स्मर्येत, स्मरिष्यते

हस्—हस्यते, हस्यताम, अहस्यत, हस्येत, हसिष्यते

रक्ष्—रक्ष्यते, रक्ष्यताम, अरक्ष्यत, रक्ष्येत, रक्षिष्यते

नम—नम्यते, नम्यताम, अनम्यत, नम्येत, नंस्यते

भ्रम—भ्रम्यते, भ्रम्यताम, अभ्रम्यत, भ्रम्येत, भ्रमिष्यते

हन्—हन्यते, हन्यताम, अहन्यत, हन्येत, हनिष्यते

क्रीड्—क्रीड्यते, क्रीड्यताम, अक्रीड्यत, क्रीड्येत, क्रीडिष्यते

दा—दीयते, दीयताम, अदीयत, दीयेत, दास्यते

दह्—दह्यते, दह्यताम, अदह्यत, दह्येत, दहिष्यते

तृ—तर् तर्य्यते तर्य्यताम, अतर्य्यत, तर्य्येत, तरिष्यते

अर्च्—अर्च्यते, अर्च्यताम, अर्च्यत, अर्च्येत, अर्चिष्यते

भक्ष्—भक्ष्यते, भक्ष्यताम, अभक्ष्यत, भक्ष्येत, भक्षिष्यते

युध्—युध्यते, युध्यताम, अयुध्यत, युध्येत, योत्स्यते

प्रच्छ्—पृच्छ्यते, पृच्छ्यताम, अपृच्छ्यत, पृच्छ्येत, प्रक्ष्यते

मृ—म्रियते, म्रियताम, अम्रियत, म्रियेत, मरिष्यते

मुच्—मुच्यते, मुच्यताम, अमुच्यत, मुच्येत, मोक्ष्यते

चुर्—चोर्यते, चोर्यताम्, अचोर्यत, चोर्येत, चोरयिष्यते

कथ्—कथ्यते, कथ्यताम, अकथ्यत, कथ्येत, कथयिष्यते

शी—शय्यते, शय्यताम, अशय्यत, शय्येत, शयिष्यते

दुह्—दुह्यते, दुह्यताम, अदुह्यत, दुह्येत, धोक्ष्यते

भुज्—भुज्यते, भुज्यताम्, अभुज्यत, भुज्येत, भोक्ष्यते

जागृ—जागर्यते, जागर्यताम, अजागर्यत, जागृयेत, जागरिष्यते

तनु—तन्यते, तायते, तन्यताम, अतन्यत, तन्येत, तनिष्यते

नृत—नृत्यते, नृत्यताम, अनृत्यत, नृत्येत, नर्त्तिष्यते

श्रु—श्रूयते, श्रूयताम, अश्रूयत, श्रूयेत, श्रोष्यते

आप—आप्यते, आप्यताम्, आप्यत, आप्येत, आप्स्यते
दृश्, दृश्यते, दृश्यताम्, अदृश्यत, दृश्येत, द्रक्ष्यते
ग्रह्—गृह्यते, गृह्यताम्, अगृह्यत, गृह्येत, ग्रहीष्यते
ज्ञा—ज्ञायते, ज्ञायताम्, अज्ञायत, ज्ञायेत, ज्ञास्यते

अभ्यासार्थ प्रश्न

१ कर्मवाच्य और भाववाच्य का सोदाहरण अन्तर स्पष्ट करो।

२ दुह्, ज्ञा, पच्, श्रु, हन्, तन्, कृ, मुच्, दृश्, पा के कर्मवाच्य रूप लिखो।

३ रिक्त स्थान भरो :—

त्वया इदं पुस्तकं———। बालेन जलं नैव———?
स्त्रिया गीतं सुष्ठुतया———। गवा दुग्धं सदा नैव———।
छात्रैः निजपाठः———।

४ कर्मवाच्य से कर्तृवाच्य रूप लिखो :—

मया अतिथयः नैव अभोज्यन्त।
सेवकैः भोजनं नैव अदीयत।
राजभिः कवयः सदा अपूज्यन्त।
पुत्रैः माता पितरौ सेव्येताम्।
केन मार्गः अद्य रुध्यते।
पिता पुत्राः प्रयत्नेन अपाल्यन्त।
गोपेन गोः पयः दुह्यताम्।

कृदन्त—अध्याय

जो प्रत्यय क्रिया के अन्त में आते हैं उन्हें कृदन्त कहा

जाता है। इन प्रत्ययों के प्रयोग क्रिया द्वारा संज्ञा अव्ययादि का विकास होता है। यथा गै धातु से अक प्रत्यय लगने पर प्रत्यय लगने पर गायक हो जाता है क्त लगने से गीत हो जाता है। शब्दों का कोष बढ़ाने के लिये कृदन्त विशेष उपकारक हैं। ये प्रत्यय मुख्यरूप से ये हैं। शतृ, शानच्, क्त, क्तवतु, क्त्वा, तुमुन्, तव्यत्, अनीयर्, यत्।

शतृ—शानच् (Present Active Participles)

1 शतृ का अत् शेष रह जाता है और शानच् से आन-मान शेष रह जाते हैं। परस्मैपदी धातुओं से शतृ का प्रयोग होता है और आत्मनेपदी धातुओं से शानच् का उभय पदी धातुओं से दोनों का प्रयोग होता है।

शतृ (अत) ये प्रत्यय कर्तृवाच्य हैं। शानच् (आनमान इनका अर्थ वर्तमान में होता हुआ होता है।

यथा—पिवत् पीता हुआ, धावत्—दौड़ता हुआ।

शतृ स्त्रीलिग में ई और शानच् से आ प्रयुक्त होता है।

यथा—पठन्-पठन्ती वर्धमानः=वर्धमाना रीतिः।

कुछ धातुओं के उदाहरण

शतृ	शानच्
पच्—पचत्	वर्ध—वर्धमानः।
जि—जयत्	सेव्—सेवमानः
कृ—कुर्वत्	अधिइङ्—अधीयानः
स्वप्—स्वपत्	शी—शयानः
अद्—अदत्	आस्—आसीनः,

हन्—घ्नत्	मुद्—मोदमानः
अस्—सत्	लभ—लभमानः
ब्रु—ब्रुवत्	वृत्—वर्तमानः
कथ्—कथयत्-कथयमानः	ईक्ष्—ईक्षमाणः
भुज्—भुञ्जत्—भुञ्जानः	सह्—सहमानः
तन्—तन्वत्—तन्वानः	कम्प्—कम्पमानः
दा—ददत्—ददानः	शङ्क—शंकमानः
हु—जुह्वत	एध्—एधमानः
भी—बिभ्यत्	यत्—यतमानः
भू—भवत्	शुभ्—शोभमानः
नम्—नमत्	भाष्—भाषमाणः
स्मर—स्मरत्	शिक्ष्—शिक्षमाणाः
दुह्—दुहत्—दुहानः	श्लाघ्—श्लाघमानः

	शतृ		शतृ	शानच्
पत्	पतत्	चुर्	चोरयत्	चोरयमाणः
शुच्	शोचत	चिन्त्	चिन्तयत्	चिन्तयमानः
त्यज्	त्यजत्	कथ्	कथयत्	कथयमानः
सद्	सीदत्	ताड्	ताडयत	ताडयमानः
घ्रा	जिघ्रत्	भक्ष्	भक्षयत्	भक्षयमाणः
शुष्	शुष्यत्	क्षल्	क्षालयत	क्षालयमानः
सिच्	सिचत्	तुल्	तोलयत्	तोलयमानः
भूष्	भूषयत्	पाल्	पालयत्	पालयमानः
शास्	शासत्	जन्	जायमानः	
शक्	शकुवत्	मृग्	मृगयमाणः	

भृ	बिभ्रत्	सु	सुवानः
मुष्	मुष्णत्	विद्	विद्यमानः
ज्ञा	जानत्		जानानः
ग्रह्	गृह्णत्		गृह्णानः
क्री	क्रीणत्		क्रीणानः
युज्	युञ्जत्		युञ्जानः
धु	धुन्वत्	वन्द्	वन्दमानः
रुध्	रुन्धत्		रुन्धानः
सृज्	सृजत्	ईश्	ईशानः
ब्रू	ब्रुवत्		ब्रुवाणः
गण्	गणयत्		गणयमानः

अभ्यास

१ शतृ शानच् का प्रयोग कहां २ होता है सोदाहरण समझाइये।

२ पच्, हन, श्रु, ब्रु, दृश्, लिख्, दा, कथ्, भू, भी इनसे शत्रन्त रूप लिखो।

३ संस्कृत में अनुवाद करो।

छात्र ने अपना पाठ पढ़ लिया।
हमने मित्रों को पत्र लिख दिये।
वह पढ़ता हुआ लिख भी रहा है।
उसने पानी पीते हुए कहा।
उसे बढ़ते हुए देखकर सब ईर्ष्या कर रहे हैं।
सेवक धन प्राप्त करता हुआ प्रसन्न हो रहा है।

योधा लड़ता हुआ मारा गया ।
दानी दान देता हुआ मधुर भाषण कर रहा है ।
मैं नाटक देखता हुआ आनन्दित होता हूँ ।
तुम शत्रु को मारते हुए यश पाते हो ।
सैनिक आता हुआ कड़क कर बोला ।
छात्र सूचना देता हुआ प्रणाम करने लगा
राजा प्रजा की रक्षा करता हुआ पूजा जाता है ।
धोबी कपड़े धोता हुआ थक गया ।

क्त Past Passive Participles.

क्तवत् Past active participles.

क्त—क्तवतु (हुआ) दोनों भूतकालिक प्रत्यय हैं—
इनके द्वारा लङ् लकार का अर्थ पूर्ण होता है ।
क्त (त) क्तवतु (तवत्) क्रम से कर्मवाच्य
और कर्तृवाच्य के अर्थ में प्रयुक्त होते हैं यथा:—
तेन पाठः पठितः, सः पाठं पठितवान ।
क्त प्रत्यय कर्तृवाच्य के साथ भी आता है क्तवतु
कर्मवाच्य के साथ प्रयुक्त नहीं होता । यथा—
सः ग्रामं गतः, तेन ग्रामं गतम् ।

धातु	क्त	क्तवतु
भू	भूत	भूतवत्
पठ्	पठित	पठितवत्
हन्	हत	हतवत
श्रु	श्रुत	श्रुतवसत
स्मृ	स्मृत	स्मृतवत्

मृ	मृत	मृतवत्
कथ्	कथित	कथितवत्
ताड्	ताडित	ताडितवत्
भक्ष्	भक्षित	भक्षितवत्
गण्	गणित	गणितवत्
रच्	रचित	रचितवत्
भू	भूत	भूतवत्
	क्त	क्तवत्
इ (गतौ)	इत	इतवत्
विद्	विदित	विदितवत्
रुद्	रुदित	रुदितवत्
या	यात	यातवत्
जागृ	जागरितः	जागरितवत्
शास्	शिष्ट	शिष्टवत्
गम्	गत	गतवत्
दृश्	दृष्ट	दृष्टवत्
स्पृश्	स्पृष्ट	स्पृष्टवत्
नम्	नत	नतवत्
अद्	जग्ध	जग्धवत्
त्यज्	त्यक्त	त्यक्तवत्
सिच्	सिक्त	सिक्तवत्
ब्रू	उक्त	उक्तवान्
भुज्	भुक्त	भुक्तवान्
श्रम्	श्रान्त	श्रान्तवत्

छिद्	छिन्न	छिन्नवान्
भिद्	भिन्न	भिन्नवान्
तन्	तत	ततवत्
नश्	नष्ट	नष्टवान्
वृध्	वृद्ध	वृद्धवान्
वस्	उषित	उषितवान्
युध्	युद्ध	युद्धवान्
बन्ध्	बद्ध	बद्धवत्
लभ्	लब्ध	लब्धवान्
क्रुध्	क्रुद्ध	क्रुद्धवान्
वद्	उदित	उदितवत्
ग्रह्	गृहीत	गृहीतवत्
स्वप्	सुप्त	सुप्तवत्
प्रच्छ्	पृष्ट	पृष्टवत्
नी	नीत	नीतवत्
पा	पीत	पीतवत्
बुध्	बुद्ध	बुद्धवत्
तृप्	तृप्त	तृप्तवत्
चुर्	चोरित	चोरितवत्
लिख्	लिखित	लिखितवत्
कृ	कृत	कृतवत्
पत्	पतित	पतितवत्
क्री	क्रीत	क्रीतवत्

दा	दत्त	दत्तवत्
ईत्त्	ईक्षित	ईक्षितवत्

अभ्यास

१ क्त और क्तवतु किस काल का अर्थ देते हैं सोदाहरण लिखो।

२ निम्नलिखित धातुओं से क्त क्तवतु प्रत्यय दिखाइये।
छिद्, वस, पृच्छ्, इच्छ्, वृध्, नश्, अद्, हन्, अस्, ब्रू।

३ संस्कृत में अनुवाद करो :—

१ वह कल ही यहां से गया।
२ हम दो भोजन से अतितृप्त हुए।
३ दुष्ट अपने दोषों से नष्ट हो गया।
४ हमने पानी पी लिया।
५ छात्र सब कुछ पढ़ गया।
६ उसने आग में हवन डाला।
७ जो तुमने किया सब ठीक है।
८ लड़के रात को देर से सोये।
९ हमने चित्रपट नहीं देखा।
१० राजा ने भली प्रकार शासन किया।

क्त्वा Indeclinable participle

तुमुन् Infinitive of purpose

क्त्वा (त्वा) करके तुमुन् (के लिये)

ये दोनों प्रत्यय धातु को अव्यय शब्द बना देते हैं जिससे

कुछ वचन आदि का भेद नहीं रहता। यथा गम्+क्त्वा=गत्वा तुमुन=गन्तुम् इत्यादि।

धातु	क्त्वा	तुमुन्
भू	भूत्वा	भवितुम्
पठ्	पठित्वा	पठतुम्
नम्	नत्वा	नन्तुम्
अस्	भूत्वा	भवितुम्
स्मृ	स्मृत्वा	सस्तुम
बन्ध्	बद्ध्वा	वद्धुम्
भुज्	भुक्त्वा	भोक्तुम्
कृ	कृत्वा	कर्तुम्
तत्	तत्वा-तनित्वा	तनितुम्
मत्	मत्वा	मन्तुम्
युज्	युक्त्वा	योक्तुम्
युज्	भुक्त्वा	भोक्तुम्
क्री	क्रीत्वा	क्रेतुम्
ग्रह्	गृहीत्वा	ग्रहीतुम्
ज्ञा	ज्ञात्वा	ज्ञातुम्
श्रु	श्रुत्वा	श्रोतुम्
आप्	आप्त्वा	आप्तुम्
शक्	शक्त्वा	शक्तुम्
दृश्	दृष्ट्वा	द्रष्टुम्
प्रच्छ्	पृष्ट्वा	प्रष्टुम्
हिंस्	हिंसित्वा	हिंसितुम्
रुध्	रुद्ध्वा	रोद्धुम्

विद्	विदित्वा	वेत्तुम्-वेदितुम्
याच्	याचित्वा	याचितुम्
रक्ष्	रक्षित्वा	रक्षितुम्
सेव्	सेवित्वा	सेवितुम्
जन्	जनित्वा	जनितुम्
ईक्ष्	ईक्षित्वा	ईक्षितुम्
हृ	हृत्वा	हर्तुम्
छिद्	छित्वा	छेत्तुम्
नृत्	नर्तित्वा	नर्तितुम्
आस्	आसित्वा	आसितुम्
जि	जित्वा	जेतुम्
स्था	स्थित्वा	स्थातुम्
नश्	नष्ट्वा	नशितुम्
लभ्	लब्ध्वा	लब्धुम्
दुह्	दुग्ध्वा	दोग्धुम्
वस्	उषित्वा	वस्तुम्
जन्	जनित्वा	जनितुम्
युध्	युद्ध्वा	योद्धुम्
भ्रम्	भ्रमित्वा-भ्रान्त्वा	भ्रमितुम्
शम्	शान्त्वा-शमित्वा	शमितुम्
नृत्	नर्तित्वा	नर्तितुम्
नी	नीत्वा	नेतुम्
वर्ध्	वृद्ध्वा	वर्धितुम्
मुद्	मुदित्वा	मोदितुम्
सेव्	सेवित्वा	सेवितुम्

खाद्	खादित्वा	खादितुम्
वद्	उदित्वा	वदितुम्
पच्	पक्त्वा	पक्तुम्
पा	पीत्वा	पातुम्
अद्	जग्ध्वा	अत्तुम्
जागृ	जागरित्वा	जागरितुम्
शी	शयित्वा	शयितुम्
दा	दत्वा	दातुम्
सह्	सहित्वा-सोढ्वा	सहितुम्-सोढुम्

उपसर्ग पूर्व होने पर क्त्वा का ल्यप् हो जाता है। जिससे 'य' शेष रह जाता है यथा—

अधि+इङ्+त्वा—य अधीत्य।

उप+गम्+त्वा—य उपगम्य—उपगत्य

वि+क्री+त्वा—य विक्रीय

प्र+हन्+त्वा—य प्रहृत्य

सम्+कृ+त्वा—य संस्कृत्य

वि+हा त्वा—य विहाय

अभ्यास

१ क्त्वा और तुमुन अव्यय प्रत्यय क्यों कहे जाते हैं स्पष्ट करो।

२ क्त्वा को ल्यप् कहां होता है उदाहरण देकर लिखो।

३ निम्नलिखित धातुओं क्त्वान्त और तुमुन्नन्त रूप दिखाओ।

शम्	आस्	रुद्
पच्	अस्	क्री
लभ्	याच्	कृ
दृश्	वर्ध	तल्
नम्	क्रुध्	नश्
श्रु	प्रच्छ्	स्मृ (स्मर)

तव्यत्-अनीयर् यत् Potential passive participles

इन प्रत्ययों का अर्थ चाहिए आज्ञा वाचक होता है। लोट् विधिलिङ् लकारों के स्थान पर इनका प्रयोग होता है। इन प्रत्ययों का प्रयोग होने पर धातुओं में पुरुष भेद नहीं रहता केवल वचन भेद रह जाता है। यथा—तेन त्वया मयावाइदं पुस्तकं पठितव्यम् पठनीयम् पठ्यम् वा।

कर्मवाच्य या भाववाच्य में इनका प्रयोग होता है। तेन इदं वस्तु क्रेतव्यम्। अकर्मक धातु वृध्, शी आदि के साथ भाववाच्य में प्रयोग होता है। यथा—त्वया—शेतव्यम्—शयनीयम्।

धातु	तव्यत्	अनीयर्
भू	भवितव्यम्	भवनीयम्
दा	दातव्यम्	दानीयम्
ज्ञा	ज्ञातव्यम्	ज्ञानीयम्
पत्	पतितव्यम्	पतनीयम्
स्मृ (स्मर)	स्मर्तव्यम्	स्मरणीयम्
विद्	वेदितव्यम्	वेदनीयम्

जि	जेतव्यम्	जयनीयम्
हृ	हर्तव्यम्	हरणीयम्
सह्	सोढव्यम्	सहनीयम्
दुह्	दोग्धव्यम्	दोहनीयम्
कृ	कर्तव्यम्	करणीयम्
विद्	वेदितव्यम्	वेदनीयम्
सृज्	स्रष्टव्यम्	सृजनीयम्
ग्रह्	ग्रहीतव्यम्	ग्रहणीयम्
श्रु	श्रोतव्यम्	श्रवणीयम्
भुज् (भुज्)	भोक्तव्यम्	भोजनीयम्
दृश्	द्रष्टव्यम्	दर्शनीयम्
प्रच्छ्	प्रष्टव्यम्	प्रच्छनीयम्
लभ्	लब्धव्यम्	लम्भनीयम्
प्र+आप्	प्राप्तव्यम्	प्रापणीयम्
भी	भेतव्यम्	भयनीयम्
अद्	अत्तव्यम्	अदनीयम्
ब्रू	वक्तव्यम्	वचनीयम्
भृ	भर्तव्यम्	भरणीयम्
हु	होतव्यम्	हवनीयम्
चिन्त्	चिन्तयितव्यम्	चिन्तनीयम्

यत्	हृ	हार्यम्
	कृ	कार्यम्
	स्मृ	स्मार्यम्
	नी	नेयम्

दा	देयम्
पा	पेयम्
त्यज्	त्याज्यम्
भक्ष्	भक्ष्यम्
दृश्	दृश्यम्
स्पृश्	स्पृश्यम्
स्तु	स्तुत्यम्
भुज्	भोज्यम्
युज्	योज्यम्
हु	हव्यम्
हा	हेयम्
ची	चेयम्
क्री	क्रेयम्
स्तु	स्तुत्यम्
गम्	गम्यः
नम्	नम्यः
लिख्	लेख्यम्

अभ्यासार्थ प्रश्न

१ तव्यम अनीयर् कर्मवाच्य और भाववाच्य में कहां-कहां आते हैं सोदाहरण सहित लिखो ?

२ प्रच्छ् + तव्यत्, सह् + तव्यत् ।
नम + अनीय, कृ + तव्यत् ।
अद् + तव्यत्, दुह् + तव्यत्
इनके एक-एक शब्द बनाइये ।

३ स्मृ, नी, दा, पा, भक्ष्, दृश् के यत्+अन्त रूप लिखो।

४ संस्कृत में अनुवाद करो :—

१ निर्धनों को दान देना चाहिए।
२ अपना पाठ ध्यान से पढ़ना चाहिए।
३ गंगा नदी नमस्कार करने के योग्य है।
४ गुरुओं की आज्ञा सिर पर धारने योग्य है।
५ सब को अपना कर्तव्य पालने योग्य है।
६ विद्या चोरों से चुराने योग्य नहीं है।
७ कभी भी चिन्ता नहीं करनी चाहिए।
८ कुसंग सदा ही छोड़ने योग्य है।
९ यह पाठ स्मरण करने योग्य है।
१० छोटों के अपराध क्षमा के योग्य हैं।

सूक्तियां और लोकोक्तियां

सूक्ति का अर्थ अच्छी बात है जो भली प्रकार से अपने अनुभव से निकली हो इसी को उपदेश का बचन भी कहते हैं। लोकोक्ति—कहावत का नाम है जो सर्व साधारण में किसी सचाई के लिये प्रचलित हो गई हो।

सूक्ति जैसे– न सत्यात् सुकृतं परम्
(सचाई से बड़ा कोई भी पुण्य नहीं)।

लोकोक्ति—न निम्ववृक्षः मधुरत्वमेति
(नीम का वृक्ष मधुर नहीं होता)

दुष्ट कई उपायों के द्वारा भी अच्छा नहीं होता।
सूक्ति—लोकोक्ति का रूप धारण कर लेती है।

लोकोक्तयः

१ बुभुक्षितः किं न करोति पापम्
(भूखा कौन सा पाप नहीं करता)

२ महाजनो येन गतः सः पन्थाः
(जिससे श्रेष्ठ लोग जायें वही मार्ग है)

३ छिद्रेष्वनर्थाः बहुली भवन्ति ।
(एक दुःख पर कई दुःख आ जाते हैं)

४ उद्योगिनं पुरुषसिंह मुपैति लक्ष्मीः
(उद्यम करने वाले सिंह के समान पुरुष को लक्ष्मी मिलती है) ।

५ धर्मस्य त्वरिता गतिः । (धर्म की चाल तेज होती है) कोई भी विघ्न उसे नहीं घेर सकता ।

६ इष्टं धर्मेण योजयेत् (मित्रको धर्म में लगाना चाहिए)

७ स्वामिनं सर्वभावेन (स्वामी की सेवा सब प्रकार से करनी चाहिए ।

८ महीयांसः प्रकृत्या मितभाषिणः (बड़े आदमी स्वभाव से ही कम बोलते हैं)

९ परोपकाराय सतां विभूतयः (अच्छे लोगों की सम्पत्तियां परोपकार के लिये होती हैं)

१० हितं मनोहारी च दुर्लभं वचः (हितकारी और प्रिय लगने वाली बात दुर्लभ है)

११ अर्थो हि लोके पुरुषस्य बन्धुः (धन मनुष्य का सबसे बड़ा सम्बन्धी हैं ।

१२ अविवेकः परमापदां पदम (बिना विचारे काम करना विपत्तियों का मूल है)

१३ चय भास्कन्दति भस्मनां जनः (लोग राख को पार कर लेते हैं जलती हुई आग को नहीं । तेजस्वी का ही जीवन है ।

१४ नासत्यात् पातकं परम (मिथ्या भाषण से बढ़ कर कोई भी पाप नहीं है)

१५ युक्तिः शक्तेः गरीयसी (उपाय बलसे बलवान हैं ।

१६ बुद्धिर्यस्य बलं तस्य (बुद्धि में ही बल है) ।

१७ परोपदेशे पाण्डित्यम् (दूसरों को सिखाना सरल है)

१८ स्थानं प्रधानं न बलं प्रधानम्
(स्थान का बल बड़ा होता है)

१९ विनयो भूषणं महत् (नम्रता बड़ा भूषण है)

२० एको हि दोषो गुण सन्ति पाते निमज्जतीन्दोः
किरणेष्विवांकः एक दोष गुण समूह में ऐसे छिप जाता है जैसे चान्द की किरणों में कलंक छिप जाता है ।

———

अभ्यास (१)

सर्वनाम शब्द

१ कोई किसी का भार नहीं उठा सकता। (कस्यचित्)
२ ये फल तुम्हारे लिये लाये गये हैं (आनीतानि)
३ यह पाठशाला किस की है। (कस्य)
४ मेरे लिये गर्मी असह्य हो जाती है। (मह्यम्)
५ मुझ पर विश्वास रखो, कोई भी भय मत करो।
६ जो पढ़ते हैं, वे सफल भी अवश्य होते हैं।
७ वे स्त्रियां उन नारियों के साथ जा रही हैं। नारीभिःसह)
८ इन नदियों के तट पर कई नगर बसे हुए हैं।
(अवस्थिताः)
९ कौन-कौन सी वस्तुयें वहां बिकती हैं। विक्रीयन्ते)
१० सूर्य किस दिशा में उदय होता है। (कस्यां दिशि)
११ यह हमारा प्राचीन निवास स्थान है।
१२ तुम सब किसे मिलना चाहते हो। (वाञ्छसि)
१३ आप किस स्थान की शोभा बढ़ाते हैं। (वर्धयन्ति)
१४ हमें जीवन में सुख कहां ?
१५ सब इस बात पर सहमत हो गये (अभवाम)
१६ आज का दिन कैसा विचित्र है। (कीदृशः)
१७ तुम में से कोई मेरा साथी बने।
१८ आओ इन पाठों को पढ़ लो।
१९ तुम्हारे लिये यह घर है।
२० हम तुम्हें क्या कहें। (कथयाम)

अभ्यास (२)

सरल वाक्य लट्-लोट्

संस्कृत में अनुवाद करो :—

१ आओ, यहां बैठो। (उपविश)
२ मैं ग्राम में रहता हूँ।
३ बालक घर जाता है।
४ तुम भोजन खाते हो।
५ तुम सब क्या देखते हो।
६ जाओ यहां क्या करते हो। (करोषि)
७ अपनी पुस्तकें देखो। (पश्य)
८ मेरा भाई वहां जाये। (गच्छतु)
९ नौकर काम करता है। (भृत्यः)
१० छात्र अपना पाठ पढ़ता है।
११ मैं बाज़ार जाता हूँ (रथ्याम्)
१२ वह शीतल जल पीता है।
१३ तुम भगवान् का स्मरण करो (स्मरत)
१४ हम सब फल खाते हैं। (अद्मः)
१५ सूर्य उदय होता है।
१६ आग जलती है। (ज्वलति)
१७ वर्षा बरस रही है। (वर्षति)
१८ वायु बहती है।
१९ शिव मन्दिर में जाओ (गच्छत)
२० तुम कहां रहते हो। (वससि)

———

अभ्यास (३)

सरल वाक्य—लृट्

संस्कृत में अनुवाद करो

१ तुम कब घूमने जाओगे। (गमिष्यसि)
२ मैं गन्ने का रस पान करूंगा। (पास्यामि) इक्षुरसम्
३ तुम दो कहां ठहरोगे। (स्थास्यथः)
४ वह पानी लायेगा। (आनेष्यति)
५ हम दो घर जायेंगे। (गमिष्यावः)
६ कौन मेरे पास आयेगा। (आगमिष्यति)
७ राजा चोरों को दण्ड देगा (दास्यति)
८ रात्रि के समय मैं पढ़ूंगा। (पठिष्यामि)
९ तुम्हारी परीक्षा कब होगी। (भविष्यति)
१० लड़के पाठशाला में पढ़ेंगे। (पठिष्यन्ति)
११ पिता पुत्र को पीटेगा। (ताडयिष्यति)
१२ सखी सखी के पास जाएगी। (गमिष्यति)
१३ कोई तो अवश्य आयेगा।
१४ सूर्य का तेज नहीं सहा जायेगा। (सहिष्यते)
१५ वह बात नहीं छिपाई जायेगी (गोपायिष्यते)
१६ तुम्हारा खर्च बढ़ जाएगा (वर्धिष्यते)
१७ क्या तुम मेरे साथ जाओगे।
१८ परस्पर लड़ोगे नष्ट हो जाओगे।
१९ सेवक राजा के पास जाएगा।
२० गाय दूध नहीं देगी।
२१ वह हवन करेगा। (होष्यति)

अभ्यास (४)

सरल वाक्य लङ्

संस्कृत में अनुवाद करो

१ मैं घर गया।
२ तुम सब भोजन खा गये (अभक्षयत)
३ राजा शिकार खेलने गया (अगच्छन)
४ मेरा साथी रोगी हो गया। (अभवत्)
५ मैंने पानी पी लिया। (अपिवम)
६ सेवक ने भार उठाया। (अवहत्)
७ महात्मा जी ने उपदेश दिया। (अयच्छत्)
८ सूर्य का प्रकाश हो गया।
९ वह पुस्तक पढ़ चुका। (अपठत्)
१० वह कहां रहता था। (अवसत)
११ शीत का डर था। (आसीत्)
१२ मैं अस्वस्थ हो गया। (अभवम्)
१३ घोड़ा भार उठाता था। (वहतिस्म)
१४ वह यह वस्तु ले गया। (अनयत)
१५ कौन वहां आया। (आगच्छत्)
१६ राजा न्याय करता था। (अकरोत्)
१७ मुझे दुर्बलता हो गई।
१८ बातचीत में वह बोला। (अवदत्)
१९ दोपहर हो गई।
२० कौन सी ऋतु थी।
२१ तुमने क्या खाया। (अभक्षयः)

अभ्यास (५)

विधिलिङ्

संस्कृत में अनुवाद करो

१ वह आजाय, तो अच्छा हो जाय। (आगच्छेत)
२ कौन उसे निमंत्रण दे। (दद्यात्)
३ तुम अभी चले जाओ । (गच्छेः)
४ भोजन खा लीजिये। (अद्याः)
५ यह बोझ वह उठाये। (वहेत)
६ मैं इस बात को सह लूं। (सहे)
७ क्या वह पीटा जाय । (ताडयेत)
८ वह दूध पिये। (पिबेत्)
९ हम पत्र लिख लें। (लिखेम)
१० सेवक वहां रहे। (बसेत्)
११ हम दो पानी लायें। (आनयेब)
१२ राजा चोर को दण्ड दे। (दण्डयेत्)
१३ वह पाठ पढ़े। (पठेत)
१४ हम दो शत्रुओं को मारें। (हन्याव)
१५ कोई भी कहीं न जाय । (गच्छेत)
१६ अन्धेरा दूर हो जाय और प्रकाश हो जाय। (भवेत्)
१७ हम असत्य न बोलें। (ब्रूयाम)
१८ तुम अब पूरा लिखो। (लिखेः)
१९ हम दो व्यायाम करें । (कुर्याव)
२० जुलाहा कपड़ा फैलाये। तन्वीत)

अभ्यास (६)

संख्या वाचक शब्द

संस्कृत में अनुवाद करो

१ मेरे चार भाई और तीन बहनें हैं। (चत्वारः, तिस्रः)
२ तुम १५०) रु० वेतन पाते हो। (पंचाशदुत्तरशतम)
३ आज तुम्हें पढ़ते हुए ३० दिन हो गये। (त्रिंशत)
४ यह दरी ९६) रु० की है। (षरण्णवति)
५ दो हज़ार ३ सौ साठ रुपये ये हैं।
(षष्टिशतत्रय उत्तरं सहस्र द्वयम)
६ अब पौने १२ का समय हुआ। (पादोन द्वादश वादनस्य)
७ सवा रुपया मन्दिर में चढ़ा दो। (सपाद रुप्यकम)
८ उन्नीस वर्ष की आयु तुम्हारी हो गई।
(नवदशवर्ष देशीया)
९ ये सैनिक सहस्र के लगभग हैं। (निकटे)
१० कोई मुझे पांच रुपये दे दे।
११ ३२७ रुपये मुझे तुम्हारे देने हैं।
(सप्तविंशत्युत्तर शतत्रयम)
१२ वर्ष में ३६५ दिन होते हैं। (पंचषष्टि उत्तर शतत्रयम)
१३ सात दिनों का एक सप्ताह होता है।
१४ पन्द्रह दिनों का एक पक्ष होता है।
१५ रुपये का दूध ले जाओ।
१६ आज मुझे सौ रुपये का खर्च पड़ गया।
(व्यय आपतितः)
१७ आज मैं तुम्हें दस रुपये की सहायता देता हूँ।
१८ लाखों करोड़ों मनुष्य यहां रहते हैं। (लक्ष-कोटि)

अभ्यास (७)

लिंग

संस्कृत में अनुवाद करो

१ कुमारी का पूजन अनन्त फल प्रद है।
२ गुरु आनी माता के तुल्य होती है। (आचार्याणी)
३ यह चिड़िया शब्द कर रही है। (चटका)
४ वह बकरी तुम्हारी है यह मेरी है। (अजा)
५ घोड़ी की गति बड़ी तीव्र है। (बडवा)
६ दुष्टों का प्रेम आरम्भ में अधिक और अन्त में थोड़ा होता है। (लध्वी, गुर्वी)
७ सांख्य लोग तो प्रकृति को कर्त्री मानते हैं।
८ रानी राजा से बोली मेरे तो आप ही आधार हैं। (राज्ञी)
९ आचार्य की स्त्री शिष्यों पर स्नेह करती है। (शिष्येषु)
१० हमारे घर की चूहिया छिप रही है। (मूषिका)
११ श्रीमती जी आप कब से यहां रहती है। (कस्मात् कालात्)
१२ उपाध्याय की स्त्री बोली। घर पर कोई भी नहीं है। (उपाध्यायानी)
१३ इन्द्राणी ने नहुष को छल से गिरा दिया।
१४ युवति फूलों की मालायें बना रही है।
१५ यह कुतिया (शुनी) बहुत भौंकती रहती है। (शब्दायते)
१६ कुम्हारिन प्रत्येक कार्य में पति का साथ देती है। (कुम्भकारी)
१७ यह श्रेष्ठ नारी है, जो पति की सेवा कर रही है।
१८ उसकी सास उस पर बड़ा स्नेह रखती है। (श्वश्रूः)
१९ लंगड़ी नारी दुःख से चलती है। (पंगूः)
२० यह नर्तकी अपनी कला में बड़ी प्रवीण है।

अभ्यास (८)

अव्यय शब्द

संस्कृत में अनुवाद करो

१ तुम कहां से (कुतः) आ रहे हो।
२ हम जहां (यत्र) भी जायेंगे अपने कर्मों का ही फल पायेंगे। (अद्यत्वे)
३ आजकल लोगों की अवस्था अच्छी नहीं।
४ इस प्रकार (एवं) काम कर लो।
५ जितना (यावत्) परिश्रम करोगे उतना (तावत् एव) फल पाओगे।
६ जैसा करोगे, वैसा भरोगे।
७ सब स्थानों में भूख जल रही है। (सर्वत्र)
८ हम सब तुमको वहां मिल जायेंगे।
९ वह नारी कल (ह्यः) कहां गई थी।
१० मैं कल (श्वः) जाने वाला हूँ। (अद्यप्रभृति)
११ मैं आज तक सब कुछ सहता रहा।
१२ नीचे (अधः) बैठो और काम करो।
१३ मैं धीरे २ चलूंगा, मुझे देर हो जायेगी।
१४ चुप (तूष्णीम) रहो।
१५ यह कैसे (कथम) होगा।
१६ लड़का कितना परिश्रमी है। (कियत)
१७ यहां वहां ऐसा हो रहा है। (अत्र तत्र)
१८ वह नहीं पढ़ेगा क्योंकि वह रोगी है। (यतः)

अभ्यास (९)

उपसर्ग शब्द

संस्कृत में अनुवाद करो

१ यह बात मेरी आंखों देखी (प्रत्यक्ष) है।

२ छोटा मंत्री (उपमंत्री) इस बात पर सहमत हो गया। (अभवत्)

३ प्रतिदिन तुम आया करो।

४ उसका निरादर (पराभव) मत करो।

५ मेरा उसका मेल (संयोग) नहीं हुआ।

६ वह मेरा पुराना अनुचर है।

७ किसी को अपशब्द मत करो।

८ हे प्रभु! मेरे अवगुण चित्त न धरो।

९ दुष्कृत्यों से दूर रहो।

१० सहधर्मी सदा परिश्रम करते हैं।

११ मेरा उसका कोई भी विरोध नहीं है। (कश्चित् विरोधः)

१२ व्यर्थ खर्च करने का स्वभाव छोड़ दो।

१३ मुझे बड़ा संशय हो गया।

१४ मैं आजीवन आपका उपकार स्मरण करूंगा।

१५ अध्यक्ष मेरे पक्ष में नहीं है।

१६ मेरा शत्रु प्रबल हो गया है।

१७ यह एक विशेष बात है।

१८ बहुत हुआ रहने दो। (अलमतिविस्तरेण)

१९ प्रधान महोदय आ गये।

२० तुम प्रचार क्यों कर रहे हो। (प्रचारयसि)

अभ्यास (१०)

अजन्त शब्द

संस्कृत में अनुवाद करो

१ गोप गायों का दूध दोहते हैं। (दुहन्ति)

२ पुत्र पिता की आज्ञा का पालन करते हैं। (रक्षन्ति)

३ सन्ध्या का समय भगवद् भजन के लिये होता है। (भक्त्यै)

४ हरि संसार के संकट हरता है।

५ सूर्य के उदय होने पर कमल खिलते हैं। (विकसन्ति)

६ पति स्त्री का देवता है। (पतिरेको गुरुः स्त्रीणाम्)

७ सच्चे मित्र बड़े हितैषी होते हैं। (सखि पु०)

८ मालाओं से नेता लदा हुआ है। (भाराक्रान्तः)

९ हमारी बुद्धि विपत्ति काल में हमारा साथ न छोड़े। (संगं नत्यजेत्)

१० नदी के तट पर पुराना मन्दिर है।

११ बहू की शोभा शील से होती है।

१२ स्त्रियां कभी भी मिलकर शान्ति से नहीं बैठतीं।

१३ बैल (गो) भूमि के लिये बड़े उपकारक होते हैं।

१४ रत्न समुद्र से निकलते हैं। (निर्गच्छन्ति)

१५ समुद्र का पानी खारी (क्षारम्) होता है।

१६ दही से माखन पृथक् किया जाता है।

१७ मधु बड़ा पौष्टिक होता है।

१८ ज्ञान से मानव की शोभा होती है।

१९ धन दुःखों को हरता है।

२० वनों से हमें अनन्त लाभ होते हैं।

अभ्यास ११

हलन्त शब्द

संस्कृत में अनुवाद करो—

१ पुरुषों का (पुंसाम्) स्वभाव एक जैसा नहीं होता।

२ युवकों का कर्तव्य बड़ा ऊंचा होता है। (अत्युन्नतः)

३ कुत्तों का परस्पर बड़ा वैर होता है।

४ इन्द्र (मघवा) देवताओं के तप को सहन नहीं कर सकता। (सोढुम्)

५ राजा लोग प्रजा की रक्षा के लिए अपना सुख छोड़ते हैं।

६ वाणी सत्य और प्रिय अति दुर्लभ है। (वाक्)

७ बादल जल की वर्षा करते हैं। (पयोमुचः)

८ पानी का स्वभाव शीतल रहता है। (शैत्यम्)

९ संसार में नाम प्राप्त करने के लिये क्या नहीं होता।

१० प्रेम का (प्रेम्णः) मार्ग टेढा है। (वक्रः)

११ नारियां गृहस्थ की शोभा होती हैं (योषितः)

१२ प्रभुता पाकर किसे मद नहीं होता। (माद्यति)।

१३ जलचरों का बल पानी में होता है। (पयसि)

१४ चन्द्रमा नक्षत्रों का राजा होता।

१५ मन वाणी, कर्म से शुद्ध रहना चाहिये।

१६ गुणवानों का सर्वत्र आदर होना चाहिए।

१७ धन वाले सब प्रकार का सुख भोगते हैं। (भुञ्जते)

१८ मानी लोग मान को ही धन कहते हैं।

१९ स्वामी सेवकों की रक्षा करते हैं।

२० संसार का धर्म नष्ट होता है।

अभ्यास १२

णिजन्त रूप

संस्कृत में अनुवाद करो—

१ पिता पुत्र को पढ़ाता है। (पाठयति)
२ माता पुत्र की धाय से देख-भाल करवाती है। (पालयति)
३ वह सेवक से भोजन पकवाता है। (पाचयति)
४ राजा अपने वैरियों को शस्त्रों से कटवाता है। (छेदयति)
५ गुरु शिष्यों को आचार सिखाता। (शिक्षयति) है।
६ माता पुत्री को घर का काम सिखाती है।
७ मैं अपने कमरे को साफ करवाता हूं। (मार्जयामि)
८ तुम माली से बाग लगवाते हो। (रोपयसि)
९ कोई भी दूसरों से ही काम करवाता है। (कारयति)
१० माता बच्चे को सुलाती है। (शाययति)
११ वह तुम्हें बहुत सा धन दिलाता है। (दापयति)
१२ साधु बालक से घर छुड़वाता है। (हापयति)
१३ अधिकारी लेखकों से लिखवाते हैं। (लेखयन्ति)
१४ सैनिक सबका मोह दूर करवाते हैं। (कारयन्ति)
१५ हम बस बन्दीयों को बन्धन से निकलवाते हैं।
(निष्कासयामः)
१६ चोर दूसरों से भी चोरी करवाते हैं।
१७ आचार्य यजमानों से हवन करवाता है। (हावयति)
१८ महात्मा लोग भगवान् का नाम स्मरण कराते हैं।
(स्मारयन्ति)

अभ्यास १३

वाच्य

संस्कृत में अनुवाद करो—

१ मुझ से काम किया जाता है। (क्रियते)
२ दाता से दान दिया जाता है। (दीयते)
३ मुझ से सोया नहीं जाता (शय्यते)
४ मालियों से उद्यान लगाये जाते हैं। (रोप्यन्ते)
५ धर्म से रोग नष्ट होते हैं। (हन्यन्ते)
६ छात्रों से विद्या पढ़ी जाती है। (अधीयते)
७ हम से पत्र लिखे जाते हैं। लिख्यन्ते)
८ भिखारी से भिक्षा मांगी जाती है (याच्यते)
९ तुमसे भगवान् की स्तुति की जाती है (स्तूयते)
१० नीचों की संगति से बुद्धि हीन हो जाती है (हीयते)
११ लड़कों से पानी पिया जाता है (पीयते)
१२ छात्राओं से भोजन खाया जाता है (भक्ष्यते)
१३ मैं खड़ा नहीं हो सकता (स्थीयते)
१४ सत्संग से ज्ञान का लाभ होता है (लभ्यते)
१५ धोबी से कपड़े फैलाये जायें (तन्यन्ताम)
१६ हम से तुम्हारा काम किया जायेगा (करिष्यते)
१७ लड़के से भोजन खाया गया (अखाद्यत)
१८ राजा से अपने (वैरी) बैरी मारे गये (अहन्यन्त)
१९ उससे यह काम किया जाय (क्रियेत)
२० तुमसे गुरुओं की आज्ञा पालन की जाय (पाल्येत)

अभ्यास १४

क्तान्त क्तवत्वन्त

संस्कृत में अनुवाद करो—

१ राम चौदह वर्षों के लिये बन को गये (गतवान्)

२ सीता से पति की आज्ञा पालन की गई (कृतवती) वा।अक्रियत

३ उसने बन में पति की सेवा की (कृता)

४ धनवान् से धन दिया गया। (दत्तम्)

५ सैनिक ने चोर को पीटा (ताडितः)

६ मैंने भोजन नहीं खाया (भक्षितम्)

७ प्रजा ने राजा की आज्ञा मानी (अंगीकृता)

८ पाचक ने भोजन पकाया (पक्वम्)

९ बढ़ई ने लकड़ियां काटीं (छिन्नानि)

१० कृष्ण ने चाणूर को मारा (हतवान्)

११ उसने पत्र लिखे (लिखितानि)

१२ किसने तुम्हारी रक्षा की (रक्षितवान्)

१३ दशरथ जब बूढ़ा हो गया (जातः) तब उसने अपने मन में विचारा (चिन्तितवान्)

१४ कोई समय आया कि उसकी इच्छा पूर्ण हो गई। (आगतः–पूर्णा)

१५ स्वामी रामतीर्थ ने सब कुछ छोड़ दिया (त्यक्तवान्)

१६ महात्मा सियाराम यहां आये थे (आगतवान्)

१७ तुमने यह वस्तु क्यों छुई (स्पृष्टम्)

१८ अध्यापक ने शिष्यों की सब बातें देख लीं (दृष्टवान्)

१९ क्या तुमने पाठ स्मरण कर लिया। (स्मृतवान्)

२० वह बात समाप्त हो गई (समाप्ता)

अभ्यास (१५)

क्त्वान्त

संस्कृत में अनुवाद करो

१ समय पर उठकर अपना काम करो। (उत्थाय)
२ वहां जाकर (गत्वा) अपना काम कर लेना।
३ मुझे अपना पाठ स्मरण करके सुनाओ (स्मृत्वा)
४ उसे सारी बात पूछ कर मेरे पास आओ (पृष्ट्वा)
५ भोजन करके (कृत्वा) वह चला गया।
६ होने वाली बात होकर ही रहती है (भूत्वा)
७ तुम कहकर (कथयित्वा) भूल जाते हो (विस्मरसि)
८ व्यापारी हानि उठाकर दुःखी हुआ। (प्राप्य)
९ वह घोड़े पर चढ़कर (आरुह्य) गांव को गया।
१० स्त्री पुस्तकों को लेकर (गृहीत्वा) पढ़ेगी।
११ विद्यार्थी भ्रमण करके लौटेंगे (भ्रान्त्वा)
१२ सत्यवादी सुनकर (श्रुत्वा) किसी बात का प्रचार नहीं करते।
१३ कोई बात विचार कर (विचार्य) कहो।
१४ दान देकर किसी को मत बतलाओ (दत्त्वा)
१५ नदी पार करके आना कठिन है (तीर्त्वा)
१६ पुस्तकें बाज़ार से खरीद कर लाओ (क्रीत्वा)
१७ चोर को बांध कर लाओ (बद्ध्वा)
१८ तुम चिन्ता करके (चिन्तयित्वा) स्वास्थ्य नष्ट करोगे।
१९ छात्रों को पीटकर (ताडयित्वा) पढ़ाना पड़ता है।
२० भ्रमर फूलों का रस पीकर (पीत्वा) तृप्त नहीं होते।
२१ फूलों को सूंघ कर आनन्द प्राप्त होता है (आघ्राय)

अभ्यास (१६)

तुमुन्

संस्कृत में अनुवाद करो

१ दासी पुष्प चुनने के लिये उद्यान में जाएगी (चेतुम)
२ हम सब पढ़ाने के लिए पाठशाला में गये (पाठयितुम)
३ नारियां पानी भरने के लिये सरोवर पर गईं (ग्रहीतुम)
४ राजा न्याय करने के लिये धर्मासन पर बैठता है (कर्तुम)
५ लड़के भोजन खाने के लिये भोजनालय में जायें (भक्षयितुम)
६ पथिक जल पीने के लिये गये (पातुम्)
७ वह वस्त्र क्रय करने के लिये बाज़ार में गया (क्रेतुम)
८ मैं अब सोने के लिये (शयितुम्) जाऊंगा।
९ दीन लोग रहने के लिये प्रार्थना करते हैं (वस्तुम)
१० योधा (द्धा) शत्रुओं को मारने जायेंगे (हन्तुम)
११ लेखक पत्र लिखने के लिये तत्पर है (लिखितुम)
१२ वह हवन के लिये जा रहा है (होतुम्)
१३ वह सब कुछ छोड़ने के लिये (त्यक्तुम) मान गया
१४ दानी धन देने के लिये (दातुम) प्रसन्न है।
१५ तुम आने के लिए क्या कहते हो (आगन्तुम)
१६ छात्र पुस्तकें ले जाने के लिये (नेतुम्) कहता है।
१७ आज मैं धूप सेवन के लिये बाहर जा रहा हूं। (सेवितुम)
१८ नारियां चित्र पट देखने के लिये गईं। (दुष्टुम)
१९ गुरु ने पाठ स्मरण करने के लिये कहा (स्मर्तुम्)
२० भिखारी मांगने के लिये आया। (याचितुम्)

अभ्यास (१७)

तव्यत्–अनीयर्

संस्कृत में अनुवाद करो

१ तुम्हें अपना पाठ पढ़ना चाहिए ।

२ आप को अब लिखना चाहिए ।

३ अच्छा चित्र देखने योग्य है (दर्शनीयम)

४ आपको मेरी बात स्मरण करनी चाहिए (स्मर्तव्या)

५ जब तक मैं न आऊं, तब तक यहीं ठहरना चाहिए । (स्थातव्यम)

६ श्रीमद्भगवद्गीता पढ़ने योग्य पुस्तक है । (पठनीयम)

७ धन सुपात्रों को देने योग्य होता है । (दानीयम)

८ धन प्राप्त करने के योग्य होता है । (लब्धव्यम)

९ तुम्हें यह काम करना चाहिए (कर्तव्यम्)

१० हमें निश्चित समय पर भोजन करना चाहिए (अत्तव्यम)

११ छात्रायें पढ़ाने के योग्य हैं (पाठयितव्याः)

१२ किसी को भी चोरी नहीं करनी चाहिए (विधातव्यम)

१३ राजा को धर्मात्मा होना चाहिए (भवितव्यः)

१४ सब लोग शिक्षा देने के योग्य हैं (शिक्षयितव्याः)

१५ चलचित्र देखने के योग्य हैं (द्रष्टव्यानि)

१६ तुझे यह बात पूछने योग्य है (प्रष्टव्या)

१७ किसी को भी गालियां नहीं देनी चाहिए (अपशब्द दातव्याः वा कथयितव्याः)

१८ तुम्हारे गीत सुनने के योग्य हैं । (श्रवणीयानि)

१९ फूल चुनने चाहियें (चेतव्यानि)

२० आज सब की रक्षा करनी चाहिए (रक्षितव्याः)

२१ गुरु नमस्कार के योग्य हैं (नमनीयाः)

अभ्यास (१८)

कर्तृवाच्य

संस्कृत में अनुवाद करो—

१ मैं पाठ स्मरण करता हूँ।
२ तुम गीत गाते हो।
३ लड़कियां पत्र लिख रही हैं।
४ दासियां भोजन पकाती हैं।
५ मैं धूप में बैठता हूँ। (आतपे)
६ राजा शिकार (आखेटकम्) खेलता है।
७ नरी पति की सेवा करती है। (सेवते)
८ घोड़ी बोझ उठाती है। (वहति)
९ मैं दूध नहीं पिऊंगा। (पास्यामि)
१० तुम क्या खा रहे थे। (आदः)
११ आज क्या बात सोच रहे हो।
१२ धर्म मनुष्य की रक्षा करता है।
१३ पापी को पाप मारता है (हन्ति)
१४ तुमने यह क्या किया (अकरोः)
१५ उठो भोजन खाओ।
१६ हम उठकर बाहर जा रहे हैं। (उत्थाय)
१७ तुम धीर से काम करो।
१८ उसे पत्र द्वारा बुला लो। (आहूय)
१९ यह छोटी सी बात है।
२० तुमने मेरी बात सुनली।
२१ सूर्य प्रकाश देता है। (प्रकाशते)

अभ्यास (१९)

कर्मवाच्य

संस्कृत में अनुवाद करो :—

१ हम से पाठ पढ़ा जायेगा (पठिष्यते)
२ राजा से न्याय किया जाता है (क्रियते)
३ दानी से धन दिया जाता है (दीयते)
४ पापी से पाप किया गया (अक्रियत)
५ मुझ से पत्र लिखे गये (अलिख्यन्त)
६ पानी छात्रों से पिया जाता है (पीयते)
७ बालकों से पाठ पढ़ा जाता है (पठ्यते)
८ उस से वह ले जाया जाता है (नीयते)
९ यशोदा से पुरानी बातें स्मरण की जाती थीं (अस्मयन्त)
१० ऊधो से गोपियां कही गईं (अकथ्यन्त)
११ मन्त्री से प्रश्न पूछे जाते (पृच्छ्यन्ते)
१२ छात्रों से पाठ स्मरण किया जाता है (स्मर्यते)
१३ भिखारी से भिक्षा मांगी जाएगी (याचिष्यते)
१४ उस से शत्रु मारे जायें (हन्यन्ताम्)
१५ सेवक से स्वामी की सेवा की जाय (सेव्येत)
१६ जारी से वस्तुयें खरीदी जायें (क्रीयन्ताम्)
१७ यह पाठ तुमसे लिखा जाय (लिख्येत)
१८ तुम से गुरु को नमस्कार की जाय (नम्यताम्)
१९ उससे प्रश्न पूछे जायें (पृच्छ्यन्ताम्)
२० तुम से वस्त्र फैलाये जाते हैं (तायन्ते)

अभ्यास (२०)

भाववाच्य

संस्कृत में अनुवाद करो :—

१ तुमसे ठहरा नहीं जाता (स्थीयते)
२ तुमसे पढ़ा जाता है (पठ्यते)
३ उस से सोया जाता है (शय्यते)
४ उससे बढ़ा जाता है (वर्ध्यते)
५ बच्चे से घटा जा रहा है (क्षीयते)
६ साधु से उठा जाता है (उत्थीयते)
७ राजा से जाया जाता है (गम्यते)
८ रोगी से मरा जाता है (असवः त्यज्यन्ते)
९ मुझ से डरा जाता है (भीयते)
१० नारी से लजाया जाता है (लज्ज्यते)
११ बच्चे से जागा जाता है (जागर्यते)
१२ मुझ से जिया जाता है (जीयते)
१३ लड़के से बैठा जाता है (स्थीयते)
१४ दुखी से रोया जाता है (रुद्यते)
१५ सुखी से हंसा जाता है (हस्यते)
१६ तुम से हिला जाता है (धूयते-कम्पते)
१७ देश नष्ट हो गया (देशेन अनश्यत)
१८ संसार उन्नत हुआ (उन्नतिः अलभ्यत)
१९ हमसे झुका जाता है (नम्यते)
२० उससे हुआ जाता है (भूयते)

अभ्यास (२१)

उपपद विभक्तियां—कर्मकारक द्वितीया

संस्कृत में अनुवाद करो :—

१ मेरे चारों ओर मनुष्य थे (मां परितः)
२ उनको धिक्कार है, जो दुष्ट हैं (तान् धिकक्-गू)
३ कृष्ण के दोनों ओर गोप थे (उभयतः)
४ मैं भैंस का दूध दोहता हूँ (महिषीं)
५ तुम आचार्य से प्रश्न पूछते हो (आचार्य)
६ भिखारी धनवान् से भीख मांगता है (धनवन्तम्)
७ साधु भूमि पर सोता है (भूमिमधिशेते)
८ वह कुर्सी पर बैठता है (वेत्रासनमध्यास्ते)
६ राजा महल में रहता है (प्रसादं अधिवसति)
१० वह तुम्हारे लिये कहता है (त्वां प्रति)
११ कृष्ण सब देवताओं से बढ़कर हैं (अतिदेवान्)
१२ मैं बकरी को ग्राम ले जाता हूँ (अजां) (नयामि)
१३ राजा प्रजा पर शासन करता है (प्रजां शास्ति)
१४ मन्दिर के सब ओर वन है (मन्दिरं सर्वतः)
१५ धन के विना सुख कहां (धनं ऋते)
१६ ग्राम के निकट पर्वत है (ग्रामं निकषा)
१७ सेनापति के पीछे सैनिक जाते हैं (सेनापतिमनु)
१८ बैकुण्ठ सब लोकों के ऊपर है (लोकम्)
१६ पाताल सब के नीचे है (अधोऽधः सर्वम्)
२० वह दही से माखन मथती है (दधि मथ्नाति)

अभ्यास (२२)

करणकारक—तृतीया विभक्ति

संस्कृत में अनुवाद करो :—

१ उसने खड्ग से शत्रु को मारा (तेन असिना)
२ मैं श्रीवत्स गोत्र का हूं (गोत्रेण श्रीवत्सः)
३ माता के साथ कन्या आई (मात्रासह)
४ तुम तो नखों से तापस हो (नखैः तापसः)
५ मैंने आपको बड़े भाग्य से देखा है (पुण्येन दृष्टः)
६ वह पैर से लंगड़ा और आंख से काना है (पादेन, अक्ष्णा)
७ तुम पढ़ने के लिये नगर में रहते हैं (अध्ययनेन)
८ राजन्! दुःख मत उठाओ (अलं दुःखेन)
९ मैंने दिन भर तीन अध्याय पढ़े (दिनेन)
१० मैंने दो कोसों में यह कहानी सुनी (द्विक्रोशाभ्याम)
११ तुम्हारे साथ कौन रहता है (त्वया सह)

चतुर्थी विभक्ति

१ ब्रह्मण को गाय दी जाती है (विप्राय)
२ मुझे दही प्रिय है (मह्यं रोचते)
३ वह कृष्ण की सौगन्ध खाता है (कृष्णाय शपते)
४ मैं फूलों के लिये इच्छा रखता हूं (पुष्पेभ्यः)
५ तुम मेरे लिये ईर्ष्या करते हो (मह्यं ईर्ष्यसि)
६ गुरु शिष्य के लिये क्रोध करता है (शिष्याय क्रुध्यति)

७ माता अपने पुत्र का शुभाशुभ जीवन फल पूछती है।
(पुत्राय राध्यति)

८ वह साधु से वस्त्र भोजन देने के लिये प्रतिज्ञा करता है।
(प्रतिश्रृणोति)

९ भगवान् भक्त के लिये मुक्ति धारण करते हैं।
(भक्ताय धारयति)

१० भक्ति और कर्म ज्ञान के लिये होते हैं (ज्ञानाय-जायेते)
११ कन्या फलों के लिये उद्यान में जाती है (फलेभ्यो याति)
१२ वह हवन करने के लिये जाता है (हवनाय)
१३ हरि को करोड़ों बार नमस्कार हो (कोटिशः नमः)
१४ प्रजा का कल्याण हो (प्रजाभ्यः स्वस्ति)
१५ तू मुझे तिनके के समान भी नहीं समझता।
(मां तृणं तृणाय व मन्यसे)
१६ वह प्रातः काल ही ग्राम को गया (ग्रामाय)
१७ देवताओं के लिये स्वाहा हो (देवताभ्यः)
१८ पितरों के लिये स्वधा हो। (पितृभ्यः)
१९ आज जीने के लिये कठिनाई है (जीवनाय)
२० प्रश्न पूछने के लिये समय दीजिये (पृच्छनाय)
२१ साधु नदी पर नहाने के लिये गया (स्नानाय)
२२ तुम क्या करने के लिये आये (करणाय)
२३ वह तुमसे द्रोह करता है (तुभ्यम)
२४ दूध लेने के लिये जाओ (दुग्धाय)
२५ वह वस्त्र धोने के लिये जायेगा (क्षालणाय)

२६ साधु मुक्ति के लिये भगवान् की भक्ति करता है। (मुक्तये)

२७ राजा प्रजा के लिये काम करता है (प्रजायै)

२८ नृसिंह भगवान् को नमस्कार हो।

२९ मित्र सुख के लिये होते हैं।

३० मैं जाने के लिये उद्यत हूँ (गमनाय)

अभ्यास (२३)

पंचमी विभक्ति

संस्कृत में अनुवाद करो—

१ लड़का घर से बाहर निकला (निर्गतः)
२ मैं पापों से घृणा करता हूँ (जुगुप्से)
३ तुम धर्म कर्म से प्रमाद करते हो (प्रमाद्यसि)
४ वह खेतों से पशु निकालता है (वारयति)
५ मैं गृहकार्यों से विश्राम ले रहा हूँ (विश्राम्यामि)
६ इस के अनन्तर तुम क्या करोगे।
७ मैं तुम से दुबल हूँ (दुर्बलतरः)
८ धर्म के विना सुख कहां (धर्मादृते)
९ लड़का घर से बाहर जाता है (निर्गच्छति)
१० मैं अध्यापक से पढ़ता हूँ (अध्यापकात्)
११ बहू सब से लज्जा करती है (सर्वेभ्यः)
१२ सांप से बड़ा भय होता है (सर्पात्)
१३ श्री कृष्ण अपनी माता से छिपते हैं (निलीयते)

१४ कल से पाठशाला में अवकाश रहेगा (भविष्यति)
१५ मैं सब से पृथक रहता हूं।
१६ कोई यहां से उसे निकाल दे (निष्कासयेत)
१७ तुम किसी से घृणा मत करो।
१८ विना धन के जीवन क्या है (धनात विना)
१९ तुम कहां से आ रहे हो (कुतः)
२० तुम से वह परिश्रमी है।

अभ्यास २४

षष्ठ—सप्तमी विभक्ति

संस्कृत में अनुवाद करो—

१ हम सब शिव के चरणों को भजते हैं (भजामः)
२ मैं अपनी पूज्य पितामही का स्मरण करता हूँ।
३ भिक्षुक अन्न के लिये रहता है (अन्नस्य हेतोः)
४ श्री कृष्ण प्रत्येक से माने गये थे (प्रत्येकस्य मतः)
५ मुझे भगवान की सेवा करनी चाहिए (मम सेव्यः)
६ बलराम श्री कृष्ण के समान थे (कृष्णस्य तुल्यः)
७ क्या तुम्हारी मुक्ति की इच्छा है।
८ शिकारी दान्तों के लिए हाथी को मारता है (दन्तयोः)
९ रोते हुए पुत्र को छोड़ कर वह घर निकल गया।
(रुदन्तं पुत्रं परित्यज्य)
१० इन सब लड़कों में यह श्रेष्ठ हैं (बालानां बालेषुवा)
११ माता के लिए तुम बड़े निपुण हो। (मातरि)
१२ तुम देवपूजा में लगे हुए हो (व्यापृतोऽसि)

१३ वह इन लोगों का स्वामी है (एषां नराणामएषु नरेषु)
१४ सब छात्रों में मैत्र चतुर है (चतुरतमः)
१५ राम सारे संसार में उत्तम है (अधि जगति)
१६ इस शिशु की लम्बी आयु हो (अस्य शिशोः दीर्घायुष्यं भूयात)
१७ मैं कुर्सी पर बैठता हूं (वेंचासने असि)
१८ तुम इस पात्र में भोजन पकाते हो (अस्मिन् पात्रे)
१९ महात्माओं का रक्षक अवतार लेता है (महात्मनां)
२० इस संसार का कर्त्ता अवश्यक है (अस्त्य जगतः कर्त्ता)

अभ्यास (२५)

कृदन्त प्रत्यय–तृच्–अंत कर्त्ता के अर्थ में ।

लट्—वर्त्तमान

संस्कृत में अनुवाद करो—

१ नेता लोग जनता से प्रेम पालते हैं (जनतायां स्निह्यन्ति)
२ गायक गीत गाते हैं (गायन्ति)
३ होता हवन करते हैं (जुह्वति)
४ वादक वाद्य बजा रहा है । (वादयति)
५ कथा वाचक कथा कर रहा है (वाचयति)
६ श्रोता लोग ध्यान से सुनते हैं । (आर्णयन्ति)
७ अध्यापक लिख रहा है ।
८ संदेशवाहक सन्देश दे रहा है ।
९ यजमान पूजा कर रहा है ।

१० उपदेशक मंच पर आता है।
११ पूजक आरती कर रहा है।
१२ आराधक भगवान् की आराधना करते हैं।
१३ अनुवादक अनुवाद कर रहा है।
१४ लेखक कहानियां लिखता है।
१५ काव्य निर्माता कवितायें रच रहा है (रचयति)
१६ घातक अपराधियों को काट रहे हैं (छेदयन्ति)
१७ मालिक होना अच्छा नहीं।
१८ अधिष्ठाता मन्दिर में घूम रहा है।
१९ पर्यटक इस बार नहीं आ रहे हैं।
२० वह उसका सहायक है।

अभ्यास २६

वर्त्तमान काल

संस्कृत में अनुवाद करो :—

१ वह पुस्तक बड़ी मनोहर है।
२ मोहन दुष्ट बालक है।
३ तुम्हारा भाई बहुत चतुर है।
४ मेरे पिता जी यहां नहीं हैं।
५ वह आज उपस्थित है।
६ इस वृक्ष के पत्ते हरे भरे हैं (हरिताः)
७ सब छात्र सभा में उपस्थित थे।
८ विमला परिश्रमी बालिका है।

९ आजकल कपड़ा सस्ता है (अद्यत्वे)
१० बालक कहानियां सुनने के इच्छुक होते हैं (श्रोतुम)
११ मैं आप से मिलकर बहुत प्रसन्न हूं (अतिहृष्टः मुदितः वा)
१२ यह पानी पीने के योग्य है (पानीयम)
१३ शुभ नाम धन से भी श्रेष्ठ है।
१४ यह धोबी हमारा है (रजकः)
१५ उसके केवल दो लड़के और एक लड़की है।
१६ क्या तुम्हारे पास कोई अधिक लेखनी है?
१७ इस मकान के चार कमरे हैं। (चतस्रः शालाः)
१८ राजा दशरथ की तीन रानियां थीं (तिस्रः राज्ञ्यः)
१९ क्या इस नगर में तुम्हारा कुछ भी प्रभाव नहीं है? (स्वल्पोऽपि)
२० तुम्हें अपने बड़े भाई का बहुत मान है। (ज्येष्ठभ्रातुः)

अभ्यास २७

संस्कृत में अनुवाद करो :—

१ वह आज सायंकाल आने की प्रतिज्ञा करता है। (प्रतिजानीते)
२ मैं एक बलवान् बालक हूं।
३ उसके बड़े भ्राता एक प्रसिद्ध कवि हैं (विश्रुतः)
४ यह पुस्तक सर्वत्र मिलती है।
५ तुम अपने पाठ की ओर ध्यान नहीं देते (ध्यानं करोषि)
६ तुम्हारी क्या दशा है? (कीदृशी ते स्थितिः)
७ क्या वह प्रतिदिन देर से पाठशाला आता है? (विलम्ब्य)

८ क्या तुम संस्कृत जानते हो ?
९ दिल्ली को गाड़ी ६ बजे सायं छूटती है। (गन्तु उपक्रमते)
१० सूर्य पूर्व में उदय होता और पश्चिम में अस्त होता है।
११ मैं इस मनुष्य के आचार के सम्बन्ध में कुछ नहीं जानता।
१२ बागों में वृक्ष पंक्तियों में लगाये जाते हैं। (रोप्यन्ते)
१३ विपत्ति काल में बहुत थोड़े मनुष्य अपने मित्रों की सहायता करते हैं। (विरलाः)
१४ बसन्त ऋतु में वृक्षों में नये पत्ते उत्पन्न होते हैं (उत्पद्यन्ते)
१५ तुम मुझे व्यर्थ पीड़ा पहुंचाते हो। (पीडयसि)
१६ कुछ बालक अपना सारा समय इधर उधर घूम कर बिता देते हैं (इतस्ततः) (यापयन्ति)
१७ मैं तुम से कोई भी बात गुप्त नहीं रखता (गोपायामि)
१८ वह अपने स्वास्थ्य का कदापि ध्यान नहीं रखता। (अपेक्षते)
१९ वह तुम्हारे आचरण को कदापि ठीक नहीं समझता।
२० तुम शीघ्र ही रोग में फंस जाते हो (रुग्णः भविष्यसि)

अभ्यास (२८)

संस्कृत में अनुवाद करो :—

१ परिश्रमी मनुष्य सब कठिनाइयों पर विजय पाता है। (अतिक्रमणं करोति)
२ सब अध्यापक उस बालक की चतुरता की प्रशंसा करते हैं। (प्रस्तुवन्ति)
३ मेरी श्रेणी के सब छात्र मुझ से मित्रता का व्यवहार करें।

४ न्याय-पथ ही सब से उत्तम नीति है।

५ परमात्मा उनकी सहायता करता है, जो अपनी सहायता आप करते हैं।

६ सत्य की सदैव जय होती है (सत्यं सदा विजयते)

७ क्या तुम अपना पाठ स्मरण नहीं करते।

८ वैज्ञानिक संसार में आज अद्भुत आविष्कार हो रहे हैं।

९ हमारे देश के प्रत्येक भाग में स्कूलों और कालेजों की संख्या प्रतिदिन बढ़ती जा रही है।

१० मेरा घर बन रहा है (निर्मीयते)

११ अन्न का भाव प्रतिदिन चढ़ रहा है।

१२ मैं अपने बड़े भाई की प्रतीक्षा कर रहा हूं।

१३ तुम किस विषय का वर्णन कर रहे हो?

१४ नगरपालिका की अगली सभा होने वाली है।

१५ लोग औषधालय के लिये उदारता दिखा रहे हैं (दर्शयन्ति)

अभ्यास (२९)

संस्कृत में अनुवाद करो—

१ क्या आप की श्रेणी की परीक्षा हो रही है?

२ मैं अत्यन्त उष्णता के कारण अधिक परिश्रम नहीं कर सकता (शक्नोमि)

३ आजकल मेरे पिता देहरादून में स्थित हैं।

४ वह यहां मुझे मिलने आया है।

५ तुमने तुरन्त रुपया देने की प्रतिज्ञा की है।

६ गाड़ी अभी तक नहीं आई (धूम्रशकटम)

७ उसको नौकरी से पृथक् कर दिया गया है (जीविका-भ्रष्टः)
८ यह समाचार कौन लाया है।
९ यात्रियों ने नदी को पार कर लिया है।
१० यह वृत्तान्त समाचार पत्रों में प्रकाशित हो चुका है।
११ आपने इतना धन कैसे कमाया ? (उपार्जितः)
१२ एक पथिक चलती गाड़ी के नीचे आगया (अधः आगच्छत्)
१३ सूचना मिली है कि चोर बांध लिये गये हैं (बद्धः)
१४ क्या तुम कभी हरिद्वार गये हो ? (गतोऽसि)
१५ मोहन पाठशाला में दो वर्षों से पढ़ रहा है।
१६ बालक दो घण्टों से कविता स्मरण कर रहे हैं।
१७ आज प्रातःकाल से वर्षा हो रहा है।
१८ तुम दो वर्षों से इसी श्रेणी में पढ़ते हो।
१९ मैं कल से ज्वर से पीड़ित हूँ। (ज्वरार्त्तो)
२० मैं पाठशाला चलाने का उद्योग कर रहा हूं (संचालनस्य)

अभ्यास ३०

लोट्—आज्ञा

संस्कृत में अनुवाद करो :—

१ आओ नदी पर स्नान करने चलें (गच्छाव)
२ मुझे यह चित्र देखने दो (द्रष्टुं अनुमन्मताम)
३ उसको अपनी बात कह लेने दो (कथयितुं अनुमन्यताम्)
४ आओ इस विषय पर विचार करें (विचारयाव)
५ तुम इस काम को समाप्त करदो। (समाप्तं कुरु)

६ प्रत्येक मनुष्य के विचारों का सम्मान करो (सम्मानं कुरुत)
७ छात्र अपना समय व्यर्थ बातों में न गवायें (यापयन्तु)
८ अधिक भोजन मत खाओ। (भक्षयत)
६ दूसरों को अपना भाई जानो (जानीत)
१० जाओ अपनी पुस्तकें लाओ (आनयत)
११ साधारण जीवन व्यतीत करो (यापयत)
१२ पीछे को छोड़ो, आगे का ध्यान करो (अतीतं त्यजत आगामिनं समयं ध्यायेध्वम)
१३ सायं प्रातः संध्या करो।
१४ स्वाध्याय कभी भी मत छोड़ो (परित्यजत)
१५ किसी को हानि मत पहुँचाओ (प्रापयत)

अभ्यास ३१

लङ्—भूत काल

संस्कृत में अनुवाद करो—

१ तुम एक दिन भी मेरे साथ नहीं गये।
२ मैं तुम्हें मिलने गया, परन्तु तुम बाहर गये हुए थे।
३ हमने पेट भर कर भोजन किया (यथातृप्ति)
४ कल हमने संस्कृत की परीक्षा दी थी (अदीयत)
५ मैं तुम्हारी आज्ञा के अनुसार वहां गया।
६ शिवाजी की माता उसे वीरों की कथायें सुनाती थी। (श्रावयतिस्म)
७ तुम रविवार के दिन घर जाते थे।

८ प्रत्येक सेनापति खड्ग की शक्ति से राज्य करता था ।
९ अतिथि ने स्वागतकर्ताओं का धन्यवाद किया ।
१० मेरा भाई मुझ से अप्रसन्न हो गया ।

अभ्यास (३१)

लृट्—भविष्यत्

१ रामकृष्ण विवाह में सम्मिलित नहीं होगा ।
२ इस सभा के प्रधान कौन होंगे ? (कतमः)
३ क्या हम अपने भाग्य पर छोड़ दिया जायेगा ।
४ वयस्क होने पर उसे अपने पिता की सम्पत्ति छोड़ दी जाएगी । (हापयिष्यते)
५ वह होनहार बालक अपने कुल को प्रसिद्ध करेगा ।
६ सेवक कब भोजन पकायेगा ?
७ मैं तुम्हें ४५ रुपये मासिक वेतन दूंगा ।
८ अगले मास यहां पशुओं की एक प्रदर्शनी होगी ।
९ यदि मुझे कोई हानि हुई तो मैं तुम्हें दोष दूंगा ।
१० आपका भाई कब तक यहां ठहरेगा ?

अभ्यास ३२

सन्दर्भ

संस्कृत में अनुवाद करो—

काम को कष्ट मत १ समझो और उस में अपना २ मन लगाओ । विचार ३ करो कि काम के द्वारा अन्य लोग कैसे

सफलता प्राप्त ४ कर रहे हैं, तब तुम्हें काम प्रिय प्रतीत होगा ५ और तुम अपने कार्य से प्रेम करने ६ लगोगे। ७ यदि तुम कार्य को प्रसन्नता से करोगे, तो तुम्हें ८ सुविधा रहेगी। निस्सन्देह कुछ ९ मनुष्य औरों की अपेक्षा अधिक चतुर होते हैं १० ११ सोचो तो दो मनुष्य अपने जीवन में कार्य १२ करें, तो १३ उन में से एक बुद्धिमान् परन्तु असावधान है और दूसरा १४ धीरे २ काम करने वाला है, परन्तु परिश्रमी है। १५ अन्त में दूसरा प्रथम की अपेक्षा आगे बढ़ जायेगा।

अभ्यास ३३

सन्दर्भ

एक नदी के समीप एक ग्राम था १ वहां एक घसियारा रहता था २। एक दिन घसियारे का लड़का वन में गौएं चरा रहा था ३। गौएं तो चरती रहीं, लड़का इधर उधर फिरने लगा ४। मन में आया कि नदी पार चलो, वहां रेल का पुल है ५। थोड़ी देर में रेल आती होगी ६। इस का तमाशा

१—मा जानीत। २—आसक्तिं कुरुत। ३—विचार्यताम्। ४—प्राप्नुवन्ति। ५—रोचिष्यते। ६—प्रेम आरम्भं करिष्यथ। ७—चेत्। ८—सरलता भविष्यति। ९—केचन। १०—चतुरतमाः। ११—चिन्त्यताम्। १२—कुर्याताम्। १३—तयोः। १४—शनैः २ कार्यकर्ता अस्ति। १५—अन्ते द्वितीयः प्रथम तुलनायां उन्नतिं अधिकां करिष्यति अथवा अग्रगामी भविष्यति।

देखें गे ७। वहां पहुँचा तो क्या देखता है कि पुल में आग लगी हुई है ८।

१—एकां सरितं निकषा।

२—तृणच्छित् अथवा तृणच्छेदकः।

३—(चारयन्) आसीत्, चारयति स्म।

४—इतस्ततः भ्रमितुमारब्धवान्।

५—सः मनस्यचिन्तयत्—धूम्रशकट्याः सेतुः अस्ति।

६—स्वल्प कालानन्तरम धूम्रशकटिरपि आगमिष्यति।

७—अस्याः कौतुकं द्रक्ष्यामः।

८—यदा तत्र प्राप्तवान् तदा किं पश्यति यत् सेतुः अग्निसात् जातः अस्ति।

अभ्यास ३४

उस समय एक बलशाली सिख सरदार पंजाब में राज्य करता था, जिस का नाम रणजीत सिंह था १। उसके पिता का नाम महासिंह था २। छोटी आयु में ही उसे पितृ-वियोग हो गया (३) उस की माता बड़ी बुद्धिमती थी, उसने रणजीत सिंह को अच्छा सेनापति बनाया ४। रणजीतसिंह राज्य संभाल कर कश्मीर की ओर बढ़ा ५। उसने अमृतसर को भी अपने अधिकार में कर लिया और सतलुज के पश्चिम के सब राजाओं को अपने वश में करके उसने महाराज की उपाधि पाई ६।

१—तदानीं एकः सिख सेनापतिः अथवा सिखनेता पंचनदे

राज्यं करोतिस्म ।

२—महा सिंह नामा आसीत् ।

३—अल्पावस्थायामेव सः पितृहीनो जातः ।

४—सा रणजीत सिंहं सुयोग्यं सेनापतिं विदधे ।

५—राज्यं हस्तगतं कृत्वा सः कश्मीरान् प्रति प्रस्थितः ।

६—अमृतसरं अधिकृत्य सः शतद्रु नद्याः पश्चिम भागस्य सर्वान् नृपान् विजित्य महाराजस्य उपाधिं लेभे ।

अभ्यास ३५

रामचन्द्र जी तुरन्त राजा की सेवा में उपस्थित हुए और उन को अत्यन्त शोकार्त्त देखकर कारण पूछने लगे १। विदित हुआ कि राजा ने राम की शपथ खा कर दो वर देने की प्रतिज्ञा की तो रानी कैकेई ने दो वरदान मांगे २। प्रथम राम का चौदह वर्ष का वनवास और द्वितीय वर भरत का राज्यभिषेक ३ राजा यह न सह कर शोकार्त्त हो गए ४। राम अपने पिता के दुःख को न सह कर उन्हें कहने लगे मेरे लिये यह बड़ा हर्ष का विषय है ५। मैं शीघ्र ही आप की आज्ञा पूरी करके वन से लौट आऊंगा,

---

१—त्वरितम् सेवायां उपस्थितो बभूव, कारणं प्रष्टुं आरब्धवान् ।

२—विदित मभूत् यद् राज्ञा रामाय शपथं कृत्वा वरद्वय-दानाय प्रतिश्रुतम्, वरौ ययाचे ।

३—चतुर्दशवर्षाणि वने वासः ।

४—नृपः इदं न सोढ्वा ।

५—कथयितुं आरब्धवान्, ममायं परमः हर्षः ।

६—वनात् प्रत्यागमिष्यामि ।

अभ्यास ३६

विद्यार्थी जीवन मनुष्य के जीवन का एक सुनहरी भाग १ है इस जीवन में हम जो कुछ बोते हैं २ वही बड़े होकर काटते हैं परन्तु शोक की बात है ३ कि बहुत से छात्र इस मूल्यवान् समय को मूर्खता से व्यतीत कर देते हैं। एक छात्र का प्रथम कर्तव्य यह है कि वह अपने स्वभाव को अच्छा बनाये ४। मनुष्य स्वभाव के समस्त सद्गुण इसी अवस्था में एकत्रित होते हैं, जो ५ सारी आयु उसके साथ रहते हैं और जिन पर उस के भविष्य जीवन की सफलता व असफलता निर्भर है। छात्रावस्था में अच्छा साथ करना चाहिए और उपद्रवी लड़कों से दूर रहना चाहिए ६। छात्रों को सदा कठिन परिश्रमी बनना चाहिए ७।

१—नरजीवनस्य सुवर्णमयः भागोऽस्ति ।

२—अस्यां अवस्थायां यत् किञ्चिद् वयं वपामः तदेव उत्तरावस्थायां लुनीमः ।

३—परमियं शोकवार्त्ता अस्ति, यत् बहवः छात्राः इमं कालं अज्ञानेन यापयन्ति ।

४—यत् सः निजस्वभावं उत्तमं विदध्यात् ।

५—ये आजीवनं तेन सह संपृक्ताः भवन्ति येषु च तस्य भावी जीवनस्य सफलता असफलता वा आश्रितास्ति ।

६—सुसंगः करणीयः, दूरे स्थातव्यम् ।

७—भवितव्यम् ।

अभ्यास ३७

एक मधुमक्षिका अपना भोजन और फूलों का रस एकत्र करने में तत्पर थी १ । वह तृषा से व्याकुल हो गई । पास ही एक नदी थी २ वह उस ओर गई । उसने अपना मुंह जल के समीप पहुँचाया ही था कि वह सहसा जल में ३ जा गिरी । मक्खी ने बहुत हाथ पैर मारे पर वह जल से न निकल सकी ४ ।

पास ही एक कबूतर उसकी यह दशा देख कर दयालु हो गया उसने वृक्ष का एक पत्ता तोड़ा और मक्खी के समीप छोड़ दिया ५ । मक्खी ने पत्र देखा उसकी जान में जान आगई ६ । हमें इस प्रकार किसी की भलाई ७ ही करनी चाहिए ।

१—स्वखाद्यं पुष्पाणां रसं च, परं तृषार्त्ता अजायत ।

२—सा तां नदीं प्रति गता इसा स्वमुखं जलं निकषा प्रापयामास एव यत् सा अकस्मात् जले पतिता ।

४—अनेकधा यत्नान् अकरोत् परं वारिणः निर्गन्तुं नाशक्नोत् ।

५—एक कपोतः, सः वृक्षस्य पत्रं छिन्नवान ।

६—स्वजीवन मन्वभवत् अथवा स्वस्था अभवत् ।

७—अस्माभिः एवं कस्यापि उपकारः करणीयः ।

अभ्यास ३८

गंगा भारतवर्ष की सब से प्रसिद्ध नदी है। इस से पतित-पावनी जानते हैं १ । हमारे पुरानों में गंगा की सैंकड़ों २ कथायें हैं। गंगा का जल अति स्वच्छ चान्दनी की तुलना करता है ३। इसके तट पर बड़े २ विशाल पर्वत हैं ४ जिन पर सुरम्य कानन हैं । जिन में साधु लोग तप करते हैं। गंगा जी की वायु भी मन के समस्त दोषों को धो देती है ५। इसके तट पर हमारे बहुत से तीर्थ हैं ६। हमारी मातृभूमि का गौरव यही नदी है इसका जल बड़ा मधुर और शीतल है ७।

१—प्रसिद्धतमा स्रोतस्विनी, जानीमः ।

२—शतशः कथाः सन्ति ।

३—ज्योत्स्नया उपमीयते ।

४—येषु तपस्विनः तपस्यन्ति ।

५—गंगायाः परम पवित्रः पवनोऽपि चेतसः समस्तान विकारान क्षालयति ।

६—बहूनि पूत तीर्थानि ।

७—अस्माकं देशस्य महत्त्वे इयं सरिदेव परमं कारणम । अस्याः जलमपि मधुरं शीतलं च ।

अभ्यास ३९

वे मनुष्य मित्रता के योग्य नहीं है जो अपने प्रिय समय

को व्यर्थ खो देते हैं १। ऐसे मनुष्य न स्वयं काम करते हैं और न दूसरों को ही करने देते हैं २। ३ वे स्वयं डूबेंगे और अपने मित्रों को भी डुबायेंगे। मित्रता के योग्य वे पुरुष है ४ जिन्हें अपने मान और चरित्र का ध्यान हो। ५ अच्छे मित्रों से हमें अच्छी मंत्रणा मिल सकती है। वे हमें कुपथ से रोकेंगे और अच्छे पथकी ओर बढ़ायेंगे।

१—ये व्यर्थं कालं नाशयन्ति।

२—ईदृशः सुहृदः न स्वयं कर्म कुर्वन्ति नैव अन्यान् एव कर्त्तुं अनुमन्यन्ते।

३—ते स्वयं नंक्ष्यन्ति अन्यानपि च नाशयिष्यन्ति।

४—ये स्वगौरवं चरित्रं च ध्याने रक्षन्ति।

५—सुमित्राणि सदैव सत्परामर्शं ददति। तानि कुमार्गात् रोत्स्यन्ति सुमार्गं प्रति च अग्रसरान् करिष्यन्ति।

अभ्यास ४०

संस्कृत में अनुवाद करो :—

पुस्तकें भी विचित्र और अलभ्य वस्तुयें हैं जब शोक की घटायें हमारे जीवन को घेर लेती हैं, तो ये एक सच्चे मित्र की भान्ति धैर्य देती हैं १। दुर्भाग्य के कारण जब हमारे बन्धु हमें छोड़ देते हैं, तब भी पुस्तकें हमारा साथ नहीं २ छोड़तीं। पुस्तकें मनुष्यों के लाखों वर्षों के श्रम का परिणाम ३ हैं। यह सत्य है कि सभी पुस्तकें अच्छी नहीं होतीं बहुत सी बिच्छू से

भी भयानक होती है ४। हमें सदैव पुस्तकों के चयन में साव-धानता रखनी चाहिए ५।

१—पुस्तकानि अपि अलभ्य-विचित्र-वस्तूनि सन्ति, यदा शोकघटाः अस्माकं जीवनं अवरुन्धन्ति, तदा इमानि सत्य-मित्रवत् धैर्यं ददति।

२—दुर्भाग्यात् यदा अस्माकं सम्बन्धिनः अस्मान् त्यजन्ति, तदापि इमानि अस्माभिः सहवासं न त्यजन्ति।

३—पुस्तकानि मानवानां लक्षवर्षाणां परिश्रमस्यफ लानि सन्ति।

४—इदमपि सत्यमस्ति यत बहूनि पुस्तकानि वृश्चिकादपि भयानकानि भवन्ति।

५—अस्माभिः सदा पुस्तकानां चयने सावधानैर्भवितव्यम्।

अभ्यास ४१

संस्कृत भाषा में हमारा साहित्य है। हम अपना प्राचीन गौरव इसी के द्वारा १ जान सकते हैं कि हमारे पुराने आदर्श क्या थे। कैसा त्याग और तप हमारी परम्परा है २ इस का उत्तर पुराणों काव्यों नाटकों आदि से ही मिल सकता है। संस्कृत केवल भारतीय भाषाओं का ही मूल नहीं है, अपितु संसार भर की समस्त भाषाओं पर इसका प्रभाव है ३। इतिहास भूगोल विज्ञान और सभी कलायें इस भाषा में वर्णित हैं। हम अपने तीर्थ स्थानों का महत्व इसके द्वारा ४ समझते हैं।

धार्मिक मान्यतायें और शेष बातें भी इस भाषा के ज्ञान के ५ विना नहीं जान सकते ।

१—वयं स्वकीयं पुरातनं महत्वं अनया भाषयैव ज्ञातुं शक्नुमः ।

२—कीदृशः त्यागः, अस्योत्तरं पुराणकाव्यनाटकादिभिरेव उपलभ्यते ।

३—समस्त विश्वस्य समस्तासु भाषासु अस्याः प्रभावः अस्ति ।

४—अस्माभिः स्वतीर्थस्थानानां महत्वं अनयैव ज्ञायते ।

५—धार्मिक वार्ताः सिद्धान्ताश्च अस्याः भाषायाः ज्ञानं विना सर्वथा ज्ञातुमशक्याः ।

अभ्यास ४२

संस्कृत में अनुवाद करो—

सिख धर्म के १ जन्मदाता गुरु नानकदेव जी थे कालू नामक क्षत्रिय के यहां तलवण्डी ग्राम में उत्पन्न हुए थे २ जब ये बड़े हुए तब इन के पिता ने चालीस रुपये दे कर इन्हें व्यापार करने करने के लिये भेजा ३। अकस्मात् इन्हें मार्ग में कुछ साधु मिले उन्हों ने इन्हें ज्ञान दिया कि संसार नश्वर है ४ इस में आसक्त होना ठीक नहीं है । गुरु नानकदेव के मन पर कुछ ऐसा प्रभाव पड़ा कि यह उन रुपयों ५ का आटा नगर से मोल ले आये और उसे इन्हें दे कर खाली हाथ घर लौट आये। यह समाचार सुनकर उन के पिता जी को बड़ा क्रोध आया कि

यह लड़का सर्वथा बिगड़ गया है ६। इस का सुधार होना असम्भव है, किन्तु परमात्मा ७ की इच्छा कुछ और ही थी।

१—सिख सम्प्रदायस्य संस्थापकः।

२—कालूचन्द नामक क्षत्रियस्य गृहे जन्म-परिग्रहं चकार।

३—यदा अयं वयस्कः अभवत् तदा चत्वारिंशत् रूप्यकाणि पित्रा दत्वा वाणिज्यं कर्तुं प्रेषितः।

४—मार्गे साधु समागमो ऽभवत्।

५—अस्मिन् आसक्तिः न श्रेष्ठा। गुरु नानकदेवस्य मनसि किञ्चिदेवाबधः प्रभ वः अपतत्। गोधूमान्नम्, पेष्टकम्।

६—विकृतः।

७—काचिदन्यैव।

अभ्यास ४३

संस्कृत में अनुवाद करो—

१ धाय जानती थी कि यदि कोई घातक यहां आयेगा तो उस के बाल को पलंग पर सोया देखकर राजकुमार उदयसिंह की भ्रान्ति से मार देगा। २ उसने अपने पुत्र के मरने की कुछ भी चिन्ता नहीं की। वनवीर ने आकर शीघ्र ही पन्ना के लड़के चन्दन को ३ मार दिया। उसने ४ अपनी छाती पर पत्थर रख लिया। उदयसिंह को सेवक बाहर ले जा चुका था। पन्ना ५ उसे सिर पर उठा कर आश्रय की खोज में फिरने लगी ६ अन्त में कुम्भलनेर के राजा ने उसे शरण दी।

१—धात्री जानाति स्म । चेत् कश्चित्, पर्यंक मधिशयानम्, हनिष्यति ।

२—सा स्वपुत्रस्य मृत्युं न गणयामास ।

३ आगत्य, जघान ।

४—सा स्ववक्षसि शिला मारोपयत् । बहिः निनाय ।

५—उत्थाप्य, आश्रयं मृगयन्ती भ्रमितु मारब्धवती ।

६—अन्ते, तस्यै शरणं ददौ ।

अभ्यास ४४

संस्कृत में अनुवाद करो—

काम को कष्ट मत समझो और उस में अपना मन लगाओ १ विचार करो काम द्वारा अन्य लोग कैसे उन्नत हो रहे हैं २। तब तुम को काम प्रिय प्रतीत होगा और तुम अपने कार्य से प्रेम करने लगोगे ३ । निस्सन्देह कुछ लोग दूसरों की अपेक्षा अधिक चतुर होते हैं ४, परन्तु सोचो दो मनुष्य अपने जीवन में कुछ कार्य करें, उन में से एक बड़ा बुद्धिमान् परन्तु असावधान है और दूसरा शनैः २ काम ५ करने वाला परन्तु परिश्रमी है ६ अन्त में दूसरा प्रथम की अपेक्षा आगे बढ़ जाएगा ।

१—कर्म क्लेशकरं मा जानीत तस्मिन् स्वमनः संयोज्यताम् ।

२—विचार्यताम् । कर्मणा अन्ये नराः उत्कर्षं प्राप्नुवन्ति, तदा युष्यभ्यं कार्यं प्रियं भविष्यति ।

३—असंशयं केचन नराः अन्येभ्यः चतुरतराः भवन्ति ।

४—द्वौ नरौ स्वजीवने किञ्चित् कार्यं कुर्वीताम तयोरेकः बुद्धिमत्तरः परं प्रमादी अस्ति अन्यश्च मन्दं ।

५—कार्यकरः परं श्रमी अस्ति ।

६—अन्ते अन्यः पूर्वस्मात् अग्रे वर्धिष्यतेतराम् ।

अभ्यास ४५

संस्कृत में अनुवाद करो :—

१ एक दिन वीरबल जब दरबार से घर को जा रहा था । २ उसने मार्ग में एक दरिद्र लड़का वृक्ष के नीचे बैठा हुआ देखा तो एक एक करके दाने चबा रहा है । ३ वीरवर ने पूछा कि तुम एक २ दाना क्यों खा रहे हो एक दो बार करके इन्हें समाप्त कर डालो । ४ लड़का पहले तो कुछ मौन रहा फिर धीमे स्वर से बोला महाराज ! ५ मैं कई दिनों से भूखा हूं, अतः धीरे २ खा रहा हूं । वीरवर यह सुनकर उसे अपने घर ले गया ६ ।

१—एकदा यदा वीरवरः राज्य सभायाः गृहं गच्छति स्म ।

२—तेन पथि एकः दरिद्रो बालः तरोः २ अधस्तात् उपविष्टः दृष्टः थः एकैकशः चणकान् चर्वति स्म ।

३—वीरवरः अपृच्छत् कथं त्वं एकैकशः चणकान् खादसि । एकबारं बारद्वयं वा इमान् अद्धि ।

४—बालः पूर्वं तूष्णी मभवत् पुनः मन्दस्वरेण वोचत् ।

५—अहं बहुदिनेभ्यः बुभुक्षितः अस्मि ।
६—अनयत् ।

अभ्यास ४६

संस्कृत में अनुवाद करो :—

१ कुछ समय हुआ कि एक कारखाने का स्वामी अपने कार्यालय में काम कर रहा था। २ एक लड़का नौकरी की खोज में आया। ३ कार्यालय के स्वामी ने पूछा क्या तुम गणित में योग्य हो तो लड़के ने कहा—'हां' यह सुनकर कार्यालय के स्वामी ने उसे कहा कि जाओ। ४ पास बैठे हुए एक मनुष्य ने कहा आपने इसे क्यों नहीं रखा तो वह बोला यह ग्रामीण है। श्रीमान् भी मुंह से नहीं बोल सकता। ५ ग्राहकों को यह कैसे बुलायेगा।

१—स्वल्पः समय व्यतीतः यत् एकस्य कार्यालयस्य स्वामी स्वा कार्यालये कार्यं कुर्वन्नासीत् ।
२—एकः बाला जीविकार्थं आगच्छत् ।
३—कार्यालस्य स्वामिना सः पृष्टः, किं त्वं गणिते योग्योऽसि तदा बालः प्रत्युत्तरयत् 'आम्' इदं श्रुत्वा कार्यालयस्य अधिपेन सः उक्तः यत् गच्छ ।
४—पार्श्वे स्थितेन एकेन नरेण कथितम् भवता कथ अयं न रक्षितः तदा सः अवदत् अयं ग्राम्यः आस्ति श्रीमान् अपि मुखात् नोच्चारयितुं शक्नोति ।
५—ग्राहकान् अयं कथं आकारयिष्यति ।

अभ्यास ४७

संस्कृत में अनुवाद करो।

पटवारी ग्राम का बड़ा प्रतापी तथा मान्य अधिकारी होता है १ उस के कर्तव्य कई प्रकार के हैं २। वह ३ अपने भाग की कृषि योग्य तथा कृषि अयोग्य भूमि के चित्र और अधिकार सम्बन्धी पत्र रखता है। किसानों के यथोचित भूमिकर की वह सूची ४ प्रस्तुत करता है। वह गवर्नमेंट तथा प्रजा की दृष्टि से बहुत ५ उपयोगी पुरुष हो सकता है, यदि वह अवैध धन न खाये।

१—पट्टेश्वरी ग्रामस्य एकः महा प्रतापी मान्यः अधिकारी भवति।

२—तस्य कर्तव्यानि बहुविधानि सन्ति।

३—सः निज भागस्य कृषेः योग्यायाः भूम्याः चित्राणि अधिकार-सम्बन्धी पत्राणि च रक्षति कृषेः अयोग्यायाः भूमेः अपि।

४—कृषकाणां यथोचित भूमिकरस्य सः सूचीं रचयति।

५—सः राज्यस्य तथा प्रजायाः दृष्ट्या अतिलाभप्रदः भवितुं शक्नोति, यदि सः अवैध-धनं न गृह्णीयात्।

अभ्यास ४८

संस्कृत में अनुवाद करो :-

१ एक साधु अपनी आजीविका के लिये कई साधन प्रयोग में ला चुका था २ । अन्त में उसे यह सूझी कि वह अपने आप को गूंगा प्रकट करे। ३ एक मनुष्य जो उसे आकृति से पहचानता था उस के पास से निकला। उसने अकस्मात् उसके पास जाकर पूछा कि तुम कब से ४ गूंगे हो। साधु चकित रह गया और बोला मैं बचपन से ही गूंगा हूं ५।

१—एकः साधुः स्वजीविकायै बहुविधानां साधनानां प्रयोगं अकरोत्।

२—अन्ते तस्यायं उपायः अभवत् यत् स आत्मानं मूकं प्रकटी करोतु।

३—एकः नरः यः आकृत्या तं परिचिनोति स्म तस्य समीपे पन्थानं पार मकरोत्।

४—सः अकस्मात् तस्य पार्श्वे गत्वा तं अपृच्छत यत् त्वं कस्मात् दिनात् मूकोऽसि।

५—साधुः विस्मयं प्राप्तः अवदच्च अहं बाल्यादेव मूकोऽस्मि।

अभ्यास ४९

संस्कृत में अनुवाद करो :—

मुंज ने सोच विचार कर उपाय निकाला कि यदि भोज को मरवा दिया जाय, १ तो मैं वेखटके राज्य कर सकता हूं। राज्य के लोभ ने उसकी आंखें वन्द कर दीं २। उसने घातकों को उसे मारने की आज्ञा देदी। तब ४ भोज ने मुंज को पत्र लिखा कि पृथ्वी किसी के साथ नहीं गई तेरे साथ अवश्य जाएगी। पत्र पढ़ कर मुंज के विचार वदल गये।

१—विचार्य, उपायं अचिन्तयत् यदि भोजः हन्येत, अकण्टकम्।

२—राज्य लोभेन तस्य नेत्रे समावृते।

३—सः घातकान् आज्ञप्तवान्।

४—पत्रं विसृष्टवान्—नैकेनापि समं गता वसुमती नूनं त्वया यास्यति।

अभ्यास ५०

संस्कृत में अनुवाद करो :—

मित्र शर्मा नाम का एक ब्राह्मण था १। जो यज्ञ के लिए पशु मांगने किसी ग्राम को गया २। उसे किसी यजमान ने अच्छा स्थूल-काय पशु दिया, वह उसे कन्धे पर उठा कर ले चला ३। मार्ग में उसे क्रम २ से तीन धूर्त्त मिले, उन्होंने

उस से उसका पशु छीनने के लिए उपाय सोचा ४। ५ उन में से एक बोला यद्यपि यह कुत्ता तुम्हें बड़ा प्रिय है, तो भी इसे कन्धे पर उठाना उचित नहीं।

१—मित्र शर्मा नाम एकः विप्र आसीत्।

२—यज्ञार्थं पशुप्रार्थनाय कंचित् ग्रामं गत।

३—तस्मै केनचित् यजमानेन श्रेष्ठः स्थूल कायः पशुः प्रदत्तः सः तं स्कन्धं आरोप्य नेतु मारब्धवान्।

मार्गे तंक्रमशः त्रयः धूर्त्ताः अमिलन्, तैः तस्मात् पशोः अपहरणस्यः उपायः विचरितः।

५—तेषु एकतमः अवदत् यद्यपि अयं सारमेयः अति प्रियोऽस्तिते तथापि अयं स्कन्धमारोपयितुं न युज्यते।

अभ्यास ५० (२)

संस्कृत में अनुवाद करो :-

१ कुछ दूर जाने पर उसे दूसरा धूर्त मिला। वह उसे बोला २ हे पवित्र मूर्त्ति ब्राह्मण संसार के विरुद्ध ऐसा हंसी का काम क्यों करते हो। शीघ्र ही इस पशु को छोड़ दो कि तुम्हें कोई देख न ले। तब ३ ब्राह्मण बड़े क्रोध से बोला। क्या तुम अन्धे हो बकरे को कुत्ता कहते हो। धूर्त्त बोला – आप को क्रोध नहीं करना चाहिए ४ अपनी इच्छा से जाइए हमें क्या है।

१—किञ्चिद्दूरं गते तस्मिन्।

२—पवित्रमूर्त्ते किमेवं लोक बिरुद्धं हास्यं कर्म त्वया अनुष्ठीयते त्वरित मेवैनं पशुं परित्यज यावदन्यः कश्चित् न पश्येत् ।

३—किं मन्वो भवान् यत्पशुं सारमेयं प्रतिपाद्यसि ।

४—कोप स्त्वया न कार्यः यथेष्टं गम्यताम् ।

अभ्यास ५० (३)

संस्कृत में अनुवाद करो—

जब वह ब्राह्मण बड़ी तेजी से जा रहा था १ तो एक अन्य धूर्त्त उसका मार्ग रोक कर बोला—अग्निहोत्रिन् ! तुम कुत्ता उठाये बड़ी शीघ्रता से क्यों चल रहे हो । २ तब ब्राह्मण बार बार कुत्ते का नाम सुनकर चकित हुआ पशु को देखने लगा । उसने ३ वह पशु वहीं पटक दिया और अपने स्थान को चला गया । उन सब ४ धूर्त्तों ने मिल कर वह पशु खा लिया ।

१—त्वरि गतिः गच्छति स्म । तस्य मार्गं रुद्ध्वा अवदत्, सारमेयं उत्थाप्य ।

२—तदा ब्राह्मणः मुहुर्मुहुः शुनोनाम श्रुत्वा विस्मितः पशुं अवलोकयितुं आरब्धवान् ।

३—तेन तत्रैव सः पशुः क्षिप्तः स्वस्थानं च गतः ।

४—तैः धूर्त्तैः मिलित्वा सः पशुः भक्षितः ।

अभ्यास ५१ (१)

संस्कृत में अनुवाद करो :–

किसी पर्वत की गुहा में दधिपुच्छ नाम का एक गीदड़ रहता था १। वह अपने भोजन की खोज में इधर उधर वन में २ फिरने लगा। इतने में खरनखर नाम का सिंह भूख से पीड़ित हुआ गुहा ३ में प्रविष्ट हो गया उसने सोचा कि निश्चय से इस गुफा में कोई ४ पशु रात को आएगा तो मैं निश्चिन्त हो कर उसे मारने के लिए बैठता हूँ।

१—कस्यचित् पर्वतस्य गुहायां दधिपुच्छो नाम कश्चित् शृगालः वसतिस्म।

२—स्वाहारं मृगयितुं इतस्ततः भ्रमितुं आरब्धवान्।

३—एतस्मिन्नन्तरे, क्षुधार्त्तः, प्रविष्टः।

४—नूनं अस्यां गुहायां रात्रौ केनापि सत्वेन आगन्तव्यम् तन्निभृतो भूत्वा तिष्ठामि तद् वधाय।

अभ्यास ५१

संस्कृत में अनुवाद करो :—

जब रात को दधि-पुच्छ अपनी गुहा की ओर आया, तो उसने गुहा में प्रविष्ट होते सिंह के पैरों के १ चिह्न देखे। वह डर कर सोचने लगा मुझे कुछ उपाय करना चाहिए। तब उसने २ गुहा को बुलाया और कहा तू आज क्यों नहीं बोलती

४। सिंह ने सोचा मेरे भय से गुफा नहीं बोलती तो मैं इसे प्रत्युत्तर देता हूँ ४। ५ सिंह के शब्द से गुफा गूंज उठी और गीदड़ भाग गया।

१—यदा रात्रौ, तेन सिंह पद्ध पद्धति गुहायां प्रविशतः।

२—भीत्वा चिन्तयितुं आरब्धवान् मया कश्चित् उपायः करणीयः।

३—आजुहाव, कथनं प्रतिवचनं ददासि।

४—मद्भयात् गुहा न किंचिद् ब्रते तदाहं प्रतिवचनं ददामि।

सिंहरवेन गुहा प्रतिध्वनिता। पलायितः।

पंजाब यूनिवर्सिटी की मैट्रिकुलेशन परीक्षा के प्रश्न-पत्र

१९५१

१. न को ण कब और क्यों होता है ? उदाहरण सहित लिखो।

२. नीचे लिखे शब्दों में से किन्हीं चार का सन्धि-विच्छेद करो :

नीलोत्पलम्, जलौघः, प्रत्यूषः, दिग्गजः, कुर्वन्नपि, जगन्नायकः रामो वदति, साधुस्तरति।

३. नीचे लिखे शब्दों में से किन्हीं चार की द्वितीया, तृतीया, षष्ठी और सम्बोधन के एकवचन के रूप लिखो :

पति, दातृ, स्त्री, मधु, किम् (स्त्रीलिंग), अस्मद्, मनस्, विद्वस्।

४. नीचे लिखी धातुओं में से किन्हीं चार के लोट् तथा लङ् के रूप मध्यम तथा उत्तम पुरुषों के एकवचन में लिखो :

नृत, प्रच्छ्, चिन्त्, स्वप्, लभ्, (आत्मने०), रुद्, दा, श्रु।

५. स्त्रीप्रत्यय किसे कहते हैं ? नीचे लिखे शब्दों में से किन्हीं दो के स्त्रीप्रत्ययान्त रूप लिखो :—

इन्द्र, स्वर्णकार, मृदु, पश्यत्।

६. नीचे लिखे शब्दों में से केवल चार के लिङ्ग बताओ :

शरीर, अग्नि, राशि, दुःख, मणि, मति।

७. नीचे लिखे वाक्यों में स केवल चार को शुद्ध करो :

(१) धनस्य विना सुखं नास्ति। (२) तव नेत्रात् काणोऽसि। हीनस्य प्रति दयां कुरु। (४) कविभ्यः कालिदासः श्रेष्ठः। (५) नगरस्य अभितः नदी वहति। (६) भृत्ये क्रुद्धियति राजा।

८. नीचे लिखी धातुओं में से किन्हीं दो के साथ तुमुन् और तव्यत् प्रत्यय लगा कर वाक्यों में प्रयोग करो :

स्था, स्तु, कथ, जि ।

९. नीचे लिखे किन्हीं तीन पदों का विग्रह करो तथा समास भी बताओ :

नदीजलम्, अनुरथम्, त्रिलोकी, कृष्णसर्पः पितापुत्री ।

---

(१) ऋ र् ष् से परे एक पद में ही होने वाले न् को ण् हो जाता है चाहे बीच में अट्, कवर्ग, पवर्ग, आङ्, नुम का अन्तर पड़ जाय । जैसे—राम+अयनम्=रामायनम्, कृपणः इत्यादि ।

(६) (१) धनेनं धनं धनाद् विना सुखं नास्ति ।

(२) त्वं नेत्रेण काणोऽसि—अंग का विकार दिखाने में तृतीया होती है ।

(३) हीनं प्रति दयां कुरु प्रति के योग में द्वितीया विभक्ति होती है ।

(४) कवीनां कविषु व कालिदासः श्रेष्ठः ।

(५) नगरं अभितः नदी बहति ।

(६) भृत्याय क्रुध्यति राजा ।

१९५२

१. (क) नीचे लिखे किन्हीं चार शब्दों में सन्धि करो :

कः+अपि, वने+अत्र, इति+उक्त्वा, भ्रमन्+च,

तस्मिन्+एव, तत्+श्रुत्वा, करि+स्यति, कवि+इमौ

(ख) नीचे लिखे किन्हीं चार शब्दों में सन्धिच्छेद करो :
नीरोगः, उभयोरपि, सरस्तीरे, तपोवनम, असावागत्य, महद्पि, दिग्विभागे, महर्षिः।

२. नीचे लिखे शब्दों में से किन्हीं चार के प्रथमा, द्वितीया, तृतीया और सप्तमी विभक्तियों में बहुवचन के रूप लिखो :
नदी, मातृ, भान, राजन्, चन्द्रमस्, वणिज्, तद् (स्त्रीलिंग) युष्मद्।

३. नीचे लिखो धातुओं में से किन्हीं चार के लट्, लङ्, लोट् और लृट् में प्रथम पुरुष के एकवचन में रूप लिखो :—
स्था, अस्, जन, युज् (परस्मै०), भज् (परस्मै०), शक्, मुच् (परस्मै०), ग्रह् (परस्मै०)।

४. (क) नीचे लिखे शब्दों में से किन्हीं चार के स्त्री-प्रत्ययान्त रूप लिखो :—
दास, अश्व, शूद्र, कुमार, मातुल, पति, साधु, राजन्।

(ख) नीचे लिखी धातुओं में से किन्हीं चार पर क्त और शतृ (अत्) कृदन्त प्रत्यय लगाकर रूप लिखो :
गम, पच्, दृश्, इष्, नश्, कृ, कथ्, ज्ञा।

५. नीचे लिखे समस्त पदों में से किन्हीं चार का विग्रह और नाम लिखो :
यमराजः, राजर्षिः, पीताम्बरः राजपुरुषः, मातापितरौ, यथाशक्ति, पतिव्रता, पतिहीना।

६. नीचे लिखे वाक्यों में से किन्हीं चार को शुद्ध करके लिखो :

(१) पुत्रस्य सह पिता गच्छति ।

(२) स नरः कर्णस्य बधिरोस्ति ।

(३) नमो भगवन्तं वासुदेवम् ।

(४) रामस्य ऋते धनुर्धरो नास्ति ।

(५) चौराणां भीतोऽस्मि ।

(६) हरिः आसने अधितिष्ठति ।

---

(५) यमानां राजा—सम्बन्ध तत्पुरुष ।

राजा चासौ ऋषिः—कर्मधारय ।

पीतानि आबराणि यस्यसः —बहुव्रीहि ।

राज्ञः पुरुषः —षष्ठी तत्पुरुष ।

माता च पिता चेति—इतरेतरद्वन्द्व ।

शक्ति मनतिक्रम्य—अव्ययीभाव ।

पतिरेव व्रतं यस्याः सा—बहुव्रीहि ।

पत्युः हीना—अपादान तत्पुरुष ।

(६) (१) पुत्रेण सह गच्छति ।

(२) सः नरः कर्णाभ्यां बधिरोऽस्ति ।

(३) नमो भगवते वासुदेवाय ।

(४) रामं रामाद् वा धनुर्धरो नास्ति ।

(५) चौरेभ्यः भीतो ऽस्मि ।

(६) हरिः आसनं अधितिष्ठति

१९५३

१. (क) नीचे लिखे किन्हीं चार शब्दों में सन्धि करो :
अति+आचारः, रमा+ईशः, ते+अपि । वाक+मयम, मुने+एहि, वाक्+सु, वामः+हस्तः, दिक्+अन्तः ।

(ख) नीचे लिखे किन्हीं चार शब्दों में सन्धिच्छेद करो :
हितोपदेशः, स्वागतम्, जगन्नाथः, कश्चन, तेनैव, प्रत्युवाच, प्रसन्नाऽस्मि, पुरान्निर्गतः ।

२. नीचे लिखे शब्दों में से किन्हीं चार के प्रथमा, द्वितीया, तृतीया और सप्तमी विभक्तियों में बहुवचन ने रूप लिखो :
कवि, स्त्री, पितृ, जगत्, धनिन्, राजन्, अस्मद्, एतद् ।

३. नीचे लिखी धातुओं में से किन्हीं चार के लट (*Present*) लङ् (*Imperfect*), लोट् (*Imperative*) और लृट् (*Simple Future*) में प्रथम पुरुष (*Third Person*) के एकवचन (*Singular*) में रूप लिखो :
गम्, जि, नश्, प्रच्छ्, कथ्, आप्, ज्ञा (परस्मै०), लभ् (आत्मने०) ।

४: (क) नीचे लिखे शब्दों में से किन्हीं चार के स्त्री-प्रत्ययान्त रूप लिखो :
पुत्र, हंस, पाचक, ब्राह्मण, वैश्य, बाल, इन्द्र, राजन् ।

(ख) नीचे लिखी धातुओं में से किन्हीं चार पर क्त्वा (त्वा) और तुम् कृदन्त प्रत्यय लगाकर रूप लिखो :
भू, नी, पठ्, दा, भुज्, हन्, विद्, चुर, ग्रह् ।

५. नीचे लिखे समस्त पदों में से किन्हीं चार का विग्रह और

नाम लिखो :—जयाजयौ, पाणिपादम्, राजपुत्रः, देवकन्या, चक्रपाणिः, यथोचितम्, दशाननः, मानहानिः ।

६. नीचे लिखे वाक्यों में से किन्हीं चार को शुद्ध करके लिखो :

(१) दीनस्य प्रति दया कर्त्तव्या ।

(२) शशिनः सह् यात कौमुदी ।

(३) लोचनयोः विहीनस्य दर्पणः कि करिष्यति ।

(४) देहि दानं द्विजातीनाम् ।

(५) गोविन्देन गोपालः विद्वत्तरः ।

(६) यमवचनं स न विश्वसति ।

(७) विश्वामित्रः भवाँश्च तत्र अगच्छतम् ।

५.	जयश्च अजयश्च	द्वन्द्व समास
	पाणी च पादौ चेति	समाहार द्वन्द्व
	राज्ञः पुत्रः	षष्ठी तत्पुरुष
	देवस्य कन्या	,, ,,
	चक्रं पाणौ यस्य सः	बहुव्रीहि
	उचितं अनतिक्रम्य	अव्ययीभाव
	दश आननानि यस्य सः	बहुव्रीहि
	मानस्य हानिः	षष्ठी तत्पुरुष ।

६. (१) दीनं प्रति दया कर्त्तव्या ।

(२) शशिना सह् याति कौमुदी ।

(३) लोचनाभ्यां विहीनस्य दर्पणः किं करिष्यति ।

(४) देहि दानं द्विजातिभ्यः ।

(५) गोविन्दात् गोपालः विद्वत्तरः

(६) यमवचने स न विश्वसिति ।

(७) विश्वामित्रः भवान् च तत्र अगच्छताम् ।

१६५४

१. (क) नीचे लिखे किन्हीं चार शब्दों में सन्धि करो :

पितृ+आदेशः, सखे+इह, अभि+उदयः, कुकुभ्+सु, करि+स्यति, स्मरन्+उवाच, नरः+एति, कृतः+लोभः ।

(ख) नीचे लिखे किन्हीं चार शब्दों में सन्धि करो :

एकैकम्, अन्वेषणम्, भवामि, गवे, दिगन्तः, रामायणम्, नरोऽयम्, पुनरपि ।

२. नीचे लिखे शब्दों में से किन्हीं चार के प्रथमा, द्वितीया, तृतीया, और सप्तमी विभक्तियों में बहुवचन के रूप लिखो :

मति, गुरु, मातृ, वणिज्, विद्वस् आत्मन्, अस्मद्, इदम् (पुं०) ।

३. नीचे लिखी धातुओं से किन्हीं चार के लट् (*Present*), लङ् (*Imperfect*), लोट् (*Imperative*) और लृट् (*Simple Future*) में प्रथम पुरुष (*Third Person*) के एकवचन (*Singular*) में रूप लिखो :

दृश्, नी (परस्मै०), शक्, कृ (आत्मने०), ग्रह् (परस्मै०) चुर् (परस्मै०) ।

४. (क) नीचे लिखे शब्दों में से किन्हीं चार के स्त्री-प्रत्ययान्त रूप लिखो ।

राजन्, अश्व, गायक, कुमार, शूद्र, मातुल, मृदु, पश्यत् ।

(ख) नीचे लिखी धातुओं में से किन्हीं चार पर क्त (त) और शतृ (अत) कृदन्त प्रत्यय लगाकर रूप लिखो :
गम्, स्था, वद्, हन्, दा, आप्, इष्, हा, कथ् ।

५. नीचे लिखे समस्त पदों में से किन्हीं चार का विग्रह और नाम लिखो :
अहिनकुलम्, रामरावणयोः, भूतबलिः, अब्राह्मणः, स्त्रीजनः, घनश्यामः, त्रिभुवनम्, चक्रपाणिः, यथाविधि ।

६. नीचे लिखे वाक्यों में से किन्हीं चार को शुद्ध करके लिखो :
(१) स भारं स्कन्धे अवहत् ।
(२) विप्रं गां ददाति ।
(३) सर्वेभ्यः सत्वेभ्यः दयां कुर्वन्ति साधवः ।
(४) कामेन क्रोधो ज यते ।
(५) सुरेन्द्रो भवांश्च पाठशालामगच्छथः ।
(६) सत्यं ज्ञानं दमो धृतिश्च दुर्लभाः लोके ।
(७) सर्वेषु छात्रेषु सुरेन्द्रो विद्वत्तरः ।

---

५. अहिश्च नकुलश्चेति	समाहार द्वन्द्व
रामश्च रावणश्चेति	इतरेतर द्वन्द्व
भूतेभ्यः वलिः	चतुर्थी तत्पुरुष
न ब्राह्मणः	नञ् तत्पुरुष
घन इव श्यामः	कमधारय
त्रयाणां भुवनानां समाहारः द्विगु	
विधिं अनतिक्रम्य अव्ययीभाव	

(१) सः स्कन्धेन भारं अवहत् ।

(२) सः विप्राय गां ददाति ।

(३) सर्वेषु सत्वेषु दया कुर्वन्ति साधवः

(४) कामात् क्रोधः जायते ।

(५) सुरेन्द्रो भवान् च पाठशालां अगच्छताम ।

(६) सत्यं ज्ञानं दमो धृतिश्च दुर्लभा लोके ।

(७) सर्वेषु छात्रेषु सुरेन्द्रो विद्वत्तमः ।

१९५५

१. (क) नीचे लिखे किन्हीं चार शब्दों में सन्धि करो :
तथा+एव, प्रभो+अत्र महा+ऋषिः, गुरु+आगतौ, ते+ऊचुः, मुनिः+अयम, गुरु+आदेशः, सम्यक्+उक्तम, साधुः+तरति ।

(ख) नीचे लिखे किन्हीं चार शब्दों में सन्धि-विच्छेद करो :
विधूदयः, तवोपालम्भः, स्वागतम्, देव्यागमनम, जलौधः, देवर्षयः, जगदीशः, कस्मिश्चित्, प्रातरेव ।

२. नीचे लिखे शब्दों में से किन्हीं तीन के द्वितीया, तृतीया, षष्ठी और सप्तमी विभक्तियों में तीनों के रूप लिखो :—
हरि, गो, वारि, युष्मद् स्त्री०), विपद्, चन्द्रमस् ।

३. नीचे लिखी धातुओं में से किन्हीं तीन के लट् प्रथम पुरुष एकवचन, लङ् उत्तम पुरुष द्विवचन, लोट् मध्यम पुरुष एकवचन और लृट् प्रथम पुरुष एकवचन में रूप लिखो :
सेव्, अस् (होना), दा (परस्मैपदी), भ्रम, शक्, कृ (परस्मै०), क्री (परस्मै०), भज् (परस्मै०) ।

४. (क) नीचे लिखे शब्दों में से किन्हीं चार के स्त्री-प्रत्ययान्त रूप लिखो :

विद्वस्, पितामह, रजक, कुमार, वृद्ध, क्षत्रिय, लघु, पगु, श्वशुर, युवन् ।

(ख) नीचे लिखी धातुओं में से किन्हीं चार के साथ क्त (त) और तुमुन (तुम) कृदन्त प्रत्यय लगाकर रूप लिखो :

पच्, नम्, दंश, स्मृ, पा, हृ, मुच्, कृ ।

५. नीचे लिखे समस्त पदों (समासों) में से किन्हीं तीन का विग्रह और नाम लिखो :—

देशकालौ, पाणिपादम्, श्वशुरौ, स्वर्गप्राप्तः, कृष्णसर्पः, घनश्यामः, त्रिलोकी, प्रत्यक्षम, बहुधनः ।

६. नीचे लिखे वाक्यों में से किन्हीं चार को शुद्ध करके लिखो :

(१) रामस्य सह सीतापि बन गता ।
(२) अधितिष्ठति वैकुण्ठे हरिः ।
(३) सर्वाभ्यो नदीभ्यः गंगा द्राघिष्ठा ।
(४) गुणवान इयं कन्या ।
(५) मां तक्रं न रोचते ।
(६) त्वां दूरादेव नमः ।
(७) स पादस्य खञ्जः ।

---

६. (१) रामेण सह सीतापि बनं गता ।
(२) अधितिष्ठति वैकुण्ठं हरिः ।
(३) सर्वासु नदीषु गंगा द्राघिष्ठा ।
(४) गुणवती इयं कन्या ।

(५) मह्यं तक्रं न रोचते ।

(६) तुभ्यं दूरादेव नमः

(७) सः पादेन खञ्जः ।

१९५६

१. (क) नीचे लिखे पद-युग्मों में से किन्हीं चार में सन्धि करो :
केन+इदानीम्, गुरोः+अग्रतः, न+एषा, सः+चकार, अन्यत्+चरसि, ते+ऊचुः, उक्तः+एवम्, त्वम्+कुरु, ग्रामात्+गच्छति ।

(ख) निम्नलिखित संहित पद-युग्मों में से किन्हीं चार में सन्धि-विच्छेद करो :
तपस्तेपे, ऋषिर्नारदः, बालोऽपि, इत्यभिधाय, तन्मित्रम्, तावूचतुः, विपज्जालम्, दिग्भागः कदापि ।

२. (क) नीचे दिये शब्दों में से किन्हीं चार के द्वितीया विभक्ति के रूप लिखो :
पितृ, पति, सर्व, मधु नदी, धेनु, भवत्, इदम (नपुं०) वाच्, विद्वस् ।

(ख) निम्नलिखित धातुओं में से किन्हीं चार के रूप लोट् लकार मध्यम पुरुष में लिखो :
स्था, लभ्, नी (आत्मने०), अस्, जागृ, भी, नृत्, दा, तन् (आत्मनेपदी) ।

३. (क) नीचे लिखी धातुओं में से किन्हीं तीन के णिजन्त रूप लट् लकार प्रथम पुरुष एकवचन में लिखो :
गम्, पठ, कृ, दा, नृत्, स्था, नश् ।

(ख) नीचे लिखी धातुओं में से किन्हीं तीन के रूप क्त्वा (त्वा) प्रत्यय लगाकर लिखो :

पच्, नम्, स्था, लभ्, चिन्त्, ज्ञा ।

४. (क) निम्नलिखित वाक्यों में से किन्हीं चार को शुद्ध करके लिखो :

(१) रामो लक्ष्मणश्च वनं अगच्छत् ।

(२) रमणीयो वनम् एष मह्यं रोचते ।

(३) भारतवासिनो न कम् अपि द्रुह्यन्ति ।

(४) शिक्षक आसने अनिषीदत् ।

(५) उभयतो भारतस्य पाकिस्तान-देशो वर्तते ।

(६) कस्यापि सह द्वेषो न कार्यः ।

(७) मधुरः पोषको गवां पयः ।

(ख) निम्नलिखित वाक्यों में से किन्हीं चार का वाच्य-परिवर्तन करो :

(१) पापा नरकं यान्ति ।

(२) किं तेन क्रियते ।

(३) स पितुः शासने न तिष्ठति ।

(४) पदं हि सर्वत्र गुणैर्निधीयते ।

(५) नहि कृत उपकारः साधुभिर् विस्मर्यते ।

(६) मौनेन सर्वार्थसाधकेन भूयते ।

(७) विदुषा कुलीनेन गर्वो न क्रियते ।

---

५. (क) निम्नलिखित में से किन्हीं तीन समस्त पदों का विग्रह करो :

इतत्विष:, इन्दुदर्शनात, नदीपर्वतौ, शीतोष्णम, असमर्थः, चक्रपाणिः ।

(ख) प्रश्न ५ (क) में दिये समासों में से किन्हीं दो के नाम लिखो ।

१. केनेदानीम, गुरोरगतः, नैषा, स चकार, अन्यच्चरसि, त ऊचु । उक्त एवम्, त्वं कुरु त्वङ्कुरु । ग्रामाद् गच्छति ।

४. (क) (१) रामो लक्ष्मणश्च वनं आगच्छताम् ।
(२) रमणीयं बनं एतत् मह्यं रोचते ।
(३) भारत वासिनो न कस्मै अपि द्रुह्यन्ति ।
(४) शिक्षकः आसने न्यषीदत् ।
(५) उभयतः भारतं पाकिस्थानदेशो वर्तते ।
(६) कस्मै अपि द्वेषः न कार्यः ।
(७) मधुरं पोषकं गवां पयः ।

१९५७

१. (क) नीचे लिखे पद-युग्मों में से किन्हीं चार में सन्धि करो :
मुनि+इन्द्रः, नील+उत्पलम, महा+ऋषिः, तत्+श्रुत्वा, जगत्+ईशः, रामः+अगच्छत्, प्रातः+आगच्छति, साधू+इमौ ।

(ख) नीचे लिखे संहित रूपों में से किन्हीं चार में सन्धिविच्छेद करो :
महौषधिः, महद्धनुः, कस्मिंश्चित्: प्राङ्मुखः, महांल्लाभः, तच्छृणोति, विधू राजते, नद्यस्तीरे ।

२. (क) नीचे लिखे शब्दों में से केवल चार के प्रथमा एकवचन

तथा बहुवचन, तृतीया बहुवचन तथा सप्तमी बहुवचन के रूप लिखो :

वाच्, सम्राज्, प्रावृष्, भवत्, यशस्, राजन्।

(ख) नीचे लिखे शब्दों में से केवल चार के तृतीया, चतुर्थी, पंचमी, [illegible] सप्तमी के एकवचन के रूप लिखो :

मति, पति, स्त्री, [illegible] मातृ, कर्तृ, अस्मद्, युष्मद्।

३. (क) नीचे लिखे शब्दों में से [illegible] चार के स्त्रीलिंग के रूप बनाओ।

कान्त, तरुण, क्षत्रिय, युवन्, पति, गुरु।

(ख) नीचे वाक्यों में से केवल तीन को शुद्ध करके :

(१) उभयतः नद्याः वृक्षवाटिकाः वर्तन्ते।

(२) धर्मेण हीनाः पशूनां समानाः।

(३) पयः मां न रोचते।

(४) अध्यापकः छात्रं क्रुध्यति।

(५) ग्रामस्य बहिः सुरम्यं क्षेत्रम्।

(ग) नीचे लिखी संख्याओं में से केवल चार को संस्कृत में लिखो:

२६, ३०, ५६, ६३, ७२, १२५।

४. (क) निम्नलिखित धातुओं के यथानिर्दिष्ट रूप लिखो:

(१) दृश् या लभ् के लट् के सब रूप।

(२) स्तु या शी के लङ् के सब रूप।

(३) दा या भी के लोट् के सब रूप।

(४) कथ् या ग्रह्, के लट् के सब रूप।

(ख) निम्नलिखित धातुओं के क्त्वान्त रूप लिखोः

वच्, पा, धा, दा ।

(ग) निम्नलिखित धातुओं के क्त्वान्त रूप लिखोः

शी, मुच् अद्, स्वप् ।

५. नीचे लिखे समस्त पदों में से केवल दो का विग्र करो और उन समासों के नाम लिखो : बरः, पितरौ ।

यूपदारु, युधिष्ठिरः, राजर्षिः

र्दो वृत्तवाटिकाः वर्त्तन्ते ।

३. (ख) (१) ण हीनाः पशुभिः समानाः

(२) पयः महयं न रोचते ।

(४) अध्यापकः छात्राय क्रुध्यति ।

(५) ग्रामाद् बहिः सुरम्यं क्षेत्रम ।

५. यूपायदारु—चतुर्थी तत्पुरुष ।

युधिस्थिरः यः सः—अलुक् तत्पुरुष

राजा चासौऋषिः—कर्मधारय ।

माता पिता च एक शेष द्वन्द्व ।

१९५८

१. (क) क्+ऐ, र्+फ, त्+र, क्+प ।

इन वर्ण-युग्मों को संयुक्त करके लिखो ।

(ख) निम्न में से किन्हीं चार में संधि करोः इति+उक्त्वा, वाचः+पतिः, गच्छन्+एवम्, मुनिः+वदति, कवी+इमौ, गृहम+गच्छ ।

(ग) अतएव, नीरोगः तच्छरीरम्, निष्कलङ्कः, तांस्ते, दिग्गजः ।
इनमेंसे निन्हीं चार में सन्धिच्छेद करो ।

२. (क) देव, मातृ और युष्मद् शब्दों में से केवल एकवचन में
सब विभक्तियों के रूप लिखो ।

(ख) नीचे लिखे शब्दों में से किन्हीं चार के द्वितीया अथवा
सप्तमी के तीनों वचनों में रूप लिखो :
लता, वारि, वाच्, चन्द्रमस, मनस्, आत्मन्, पथिन्,
यत् (स्त्री०) ।

३. निम्नलिखित धातुओं के यथानिर्दिष्ट रूप लिखो :
(१) कृ या वृत् के लट् में ।
(२) जि या जन् के लङ् में ।
(३) भू या शक् के विधिलिङ् में ।
(४) दा या दृश्, के लृट् में ।

४. (क) स्था, गृह, भुज्, सह् धातुओं के क्तान्त रूप लिखो ।
इनमें से किसी एक रूप का वाक्य में प्रयोग भी करो ।

(ख) भू, दा, हन्, ज्ञा धातुओं के शत्रन्त रूप लिखो । इनमें
से किसी एक रूप का वाक्य में प्रयोग भी करो ।

५. (क) सिंह, श्वन्, श्वशुर, कोकिल, व्याघ्र, विद्वस्, मनस्विन् ।
इन शब्दों में से केवल चार के स्त्रीलिंग रूप बनाओ ।

(ख) अधोलिखित वाक्यों में से केवल तीन शुद्ध करके
लिखो :
(१) अहं मूलस्य (मूल्यस्य) विना त्वां पुस्तकं ददामि ।
(२) लवपुरे नाम नगरे बहवाः मनुष्याः वसन्ति ।

(३) सम्राट्स्याज्ञा माननीयम् ।
(४) वयं तं पुस्तकं पठितवान् ।
(५) विपदे स्वजनैरपि नरास्त्यज्यते ।

(ग) निम्नलिखित समस्त पदों में से केवल दो का विग्रह करके समास का नाम लिखो :
त्रिलोचनः, सरसिजम्, पुरुषव्याघ्रः पञ्चरात्रम, अपुत्रः ।

---

१. (ख) (१) अहं मूल्येन विना तुभ्यं पुस्तकं ददामि ।
(२) लवपुरनाम नगरे बहवः मनुष्याः वसन्ति ।
(३) सम्राजः आज्ञा माननीया ।
(४) वयं तं पुस्तकं पठितवन्तः ।
(५) विपदि स्वजनैरपि नरात्यज्यन्ते ।

५. (ग) त्रीणि लोचनानि यस्य सः—बहुव्रीहि ।
सरसि जातम्—अलुक् तत्पुरुष ।
पुरुषो व्याघ्र इव कर्मधारय ।
पंचानां रात्रीणां समाहारः द्विगु
न पुत्रः यस्यसः बहुव्रीहि ।

१९५९

१. (क) कण्ठस्थ (कण्ठ) और अनुनासिक्र वर्ण कौन-से हैं ?

(ख) यदि+अपि, पितृ+आज्ञा, मुनिः+गच्छति, तत+श्रुत्वा, धावन्+अश्वः, तत्+हितम ।
इनमें से किन्हीं चार में सन्धि करो ।

(ग) स्वागतम, जगदीशः, तावपि, कस्मिश्चित्, परीक्षा, व्याघ्रो-नष्टः ।

इनमें से किन्ही चार में सन्धिच्छेद करो ।

२. (क) कुमार, नरी और अस्मद् शब्दों के केवल एकवचन में सब विभक्तियों के रूप लिखो ।

(ख) नीचे लिखे शब्दों में से किन्हीं चार के तृतीया अथवा षष्ठी के तीनों वचनों में रूप लिखो :

सखि, स्त्री, गुरु, वाच्, जगत्, किम् (स्त्रीलिङ्ग) ।

३. निम्नलिखित धातुओं के यथानिर्दिष्ट रूप लिखो :

(१) आप् या वृध् के लट् में ।

(२) स्था या कथ् के लङ् में ।

(३) अस् या नी के लोट् में ।

(४) ज्ञा या अद् के लृट् में ।

४. (क) हन् दा चुर्, युज् धातुओं के क्तान्त रूप लिखो । इनमें से किसी रूप का वाक्य में प्रयोग भी करो ।

(ख) भू, जि, प्रच्छ, विद् धातुओं के तुमुन्नन्त रूप लिखो । इनमें से किसी एक रूप का वाक्य में प्रयोग भी भरो ।

५. (क) १२, १६, ३६, ८०—इन संख्याओं को संस्कृत शब्दों में लिखो ।

(ख) लघु, दूर, प्रिय, युवन विशेषणों के ईयस् और इष्ठ प्रत्ययान्त रूप लिखो ।

(ग) नीचे लिखे समस्त पदों में से किन्हीं चार का विग्रह करो :

काकोलूकम्, पिदरी वाक्पटुः, प्रत्यहन, पीताम्बर, त्रिलोकी ।

---

५. (ख) लघियस्—लघिष्ठ । दवीयस् दविष्ठ ।

प्रेयस्—प्रेष्ठ। यवीयस्—यविष्ठ।

५. (ग) काकाश्च उलूकाश्चेति—समाहार द्वन्द्व।
माता च पिता चेति एकशेष द्वन्द्व।
वाचिपटुः सप्तमी तत्पुरुष।
अहनि अहनि अव्ययीभाव
त्रयाणां लोकानां समाहार द्विगु।

१९६०

१. (क) संस्कृत में न को ण कहां होता है? इस नियम के तीनों भागों को उदाहरणों द्वारा स्पष्ट करते हुए लिखो।
(ख) निम्नलिखित किन्हीं चार शब्दों में सन्धिच्छेद करो:
यद्यत्र, अद्यापि, कुर्वन्नास्ते, तावूचतुः, महेश्वरः, सदैव, नायकः।

२. निम्नलिखित शब्दों में से किन्हीं चार के द्वितीया, चतुर्थी और षष्ठी विभक्तियों के तीनों वचनों में रूप लिखिये:
मति, पितृ, गो, पथिन्, विद्वस्, तद् (स्त्रीलिङ्ग), कथा।

३. नीचे लिखी धातुओं के यथानिर्दिष्ट रूप लिखो:
१. सेव् या रुद् के लट् में।
२. प्रच्छ् या हन् ल लोट् में।
३. दृश् या कृ ने लृट् में।
४. दा या शक् के लङ् में।

४. नीचे लिखे वाक्यों में से किन्हीं चार को शुद्ध करके लिखो:
(१) माम् आम्राणि रोचन्ते।
(२) रामस्य सह लक्ष्मणोऽपि वनमगच्छताम्।
(३) बालकःसर्पेण बिभेति।
(४) विद्यालयस्य परितो वृक्षाः सन्ति।

(५) श्रीगुरु नमः।

(६) धनस्य विना स कथं गमिष्यति।

५. (क) निम्नलिखित धातुओं में से किन्हीं तीन के आगे क्त और शतृ प्रत्यय जोड़कर लिखो :

पच्, कृ, श्रु, स्था, ग्रह्,।

(ख) नीचे लिखे वाक्यों में से किन्हीं दो का वाच्य-परिवर्तन करो :

(१) अहं ग्रामं गच्छामि।

(२) मोहनो जलं पिबति।

(३) त्वं चन्द्रं पश्यसि।

(ग) निम्नलिखित में से किन्हीं दो समस्त पदों का विग्रह करो और समास का नाम भी लिखो :

विद्यालयः, चतुर्भुजः, यथाशक्ति, कृष्णसर्पः।

---

४. (१) मह्यं आम्राणि रोचन्ते।

(२) रामेण सह लक्ष्मणोऽपि वनमगच्छत्।

(३) बालकः सर्पात् बिभेति।

(४) विद्यालयं परितः वृक्षाः सन्ति।

(५) श्री गुरवे नमः।

(६) धनेन विना सः कथं गमिष्यति।

५. (ख) (१) मया ग्रामः गम्यते।

(२) मोहनेन जलं पीयते।

(३) त्वया चन्द्रः दृश्यते।

५. (ग) विद्यायाः आलयः—षष्ठी तत्पुरुष

कृष्णः सर्पः—कर्मधारय

१६६१

१. (क) निम्नलिखित शब्दों में से किन्हीं चार में सन्धि करो :
एक+एकः, प्रभु+आज्ञा, पौ+अकः, वाक्+दत्ता, जगत्+मात्रम्, हरिः+चलति ।

(ख) निम्नलिखित संहित पदों में से किन्हीं चार में सन्धिविच्छेद करो :
किङ्करोषि, नीरसः, अग्निर्ज्वलति; प्रत्येकम्, गंगोदकम् धावन्नस्ति ।

२. नीचे लिखे शब्दों में से किन्हीं चार के तृतीया, पंचमी तथा सप्तमी विभक्तियों के सभी वचनों में रूप लिखो :
वधू, बाला, अक्षि,अस्मद्, किम् (स्त्रीलिङ्ग), आत्मन्, कर्तृ (पुंल्लिग) ।

३. नीचे लिखे धातुओं के यथानिर्दिष्ट रूप लिखो :
(१) ईक्ष् या वृत् (आत्मनेपद) लट् लकार ।
(२) आप् या पा (परस्मैपद) लोट् लकार ।
(३) स्मृ या स्था (परस्मैपद) लङ् लकार ।
(४) नम् या चुर् (परस्मैपद) लृट् लकार ।

४. (क) नीचे लिखे शब्दों में से केवल चार स्त्री-प्रत्ययान्त रूप लिखो :
शूद्र, मृदु; गायक, गच्छत्, ज्येष्ठ, मानुष ।

(ख) नीचे लिखे वाक्यों में से केवल दो का वाच्य-परिवर्तन करो :
(१) मया पुस्तकं पठ्यते ।
(२) मोहनः ग्रामं गच्छति ।

(३) किं त्वं खादसि ?

(४) पिता पुत्रेण सेव्यते ।

(ग) नीचे लिखे वाक्यों में से किन्हीं चार में रिक्त स्थान की पूर्ति करो :

(१) नृपः……अवतरति ।

(२) पुत्रः ……अनुगच्छति ।

(३) बिना……कुत्र सुखम् ।

(४) ………भीतोऽस्मि ।

(५) ………स याति छात्रः ।

(६) अलं बहु………।

(७) ब्राह्मणाः मनुष्येषु ……सन्ति ।

५. (क) निम्नलिखित पद-समुदायों में से किन्हीं चार के समस्त पद बनाओ तथा समासों के नाम भी लिखो :

(१) शीत च उष्णः च ।

(२) पित्रा समः ।

(३) घन इव श्यामः ।

(४) पीतानि वस्त्राणि यस्याः सा ।

(५) कृष्णस्य समीपम् ।

(६) भूतेभ्यः बलिः ।

(ख) निम्नलिखित धातुओं में से किन्हीं दो क साथ शतृ (अत्) तथा क्त्वा (त्वा) कृत्प्रत्य लगाकर रूप लिखो :

दा, दृश्, कृ, स्था, गम् ।

---

४. (ख) (१) ता अहं पुस्तकं पठामि ।

(२) मोहनेन ग्रामः गम्यते ।

(३) त्वया कि खाद्यते ।

(४) पुत्रः पितरं सेवते ।

४. (ग) (१) नृपः प्रासादात् अवतरति ।

(२) पुत्रः पितरं अनुगच्छति ।

(३) विना धर्मेण कुत्र सुखम् ।

(४) अहं सर्पाद् भीतोऽस्मि ।

(५) अध्यापकेन सह याति छात्रः ।

(६) अलं बहुविस्तरेण ।

(७) ब्राह्मणाः मनुष्येषु श्रेष्ठाः सन्ति ।

५. शीतोष्णौ द्वन्द्व समास । पितृसमः तृतीय-तत्पुरुष । घनश्यामः कर्मधारय । उपकृष्णम् अव्ययीभाव । भूतबलिः चतुर्थी तत्पुरुष ।

जम्मू- कश्मीर यूनीवर्सिट की मैट्रिकुलेशन की परीक्षा के प्रश्न पत्र

१९६०

१. (क) नीचे लिखे शब्दों में से किन्हीं पांच का संधिविच्छेद कीजिए :

शिलोच्चये, नवोढा, ईश्वरेच्छा, इतीव, वधूपरि, नरेशः, रात्रावागतः, तट्टीका ।

(ख) नीचे लिखे शब्दों में से किन्हीं पांच की सन्धि कीजिये :